

अभ्यासवान् भव

दशमकक्षायाः संस्कृतस्य अभ्यासपुस्तकम्



1075



विद्या व सत्यमनुरोदः

एन सी ई आर टी

NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

1075 – अभ्यासवान् भव

दशमकक्षाया: संस्कृतस्य अभ्यासपुस्तकम्

ISBN 978-93-5292-141-6

प्रथम संस्करण

मई 2019 ज्येष्ठ 1941

पुनर्मुद्रण

अक्टूबर 2019 अश्विन 1941

फ्रवरी 2021 माघ 1942

नवंबर 2021 अग्रहायण 1943

मार्च 2024 चैत्र 1946

अगस्त 2024 श्रावण 1946

दिसंबर 2024 अग्रहायण 1946

PD 30T BS

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2019

₹ 105.00

एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा जैना ऑफसेट प्रिंटर्स, ए33/2, साहिबाबाद औद्योगिक क्षेत्र, साइट-IV (उ.प्र.) द्वारा मुद्रित।

सर्वाधिकार सुक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की विक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

एन सी ई आर टी के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस

श्री अरविंद मार्ग

नयी दिल्ली 110 016

फ़ोन : 011-26562708

108, 100 फॉट रोड
हैली एक्सटेंशन, होस्टेकेरे
बनाशकरी III स्टेज
बैंगलुरु 560 085

फ़ोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014

फ़ोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहटी
कोलकाता 700 114

फ़ोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स
मालीगाँव
गुवाहाटी 781 021

फ़ोन : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग : एम.वी. श्रीनिवासन

मुख्य संपादक : विज्ञान सुतार

मुख्य उत्पादन अधिकारी (प्रभारी) : जहान लाल

मुख्य व्यापार प्रबंधक : अमिताभ कुमार

सहायक उत्पादन अधिकारी : दीपक कुमार

आवरण एवं चित्र

डी.टी.पी. प्रकोष्ठ



पुरोवाक्

भारतस्य शिक्षाव्यवस्थायां संस्कृतस्य महत्त्वमुद्दिश्य विद्यालयेषु संस्कृत-शिक्षणार्थम् आदर्श-पाठ्यक्रम-पाठ्यपुस्तकादिसामग्रीविकासक्रमे राष्ट्रियशैक्षिकानुसन्धानप्रशिक्षणपरिषदः भाषाशिक्षाविभागेन षष्ठवर्गादारभ्य द्वादशकक्षापर्यन्तं राष्ट्रियपाठ्यचर्यानुरूपं संस्कृतस्य आदर्शपाठ्यक्रमं निर्माय पाठ्यपुस्तकानि निर्मीयन्ते। अस्मिन्नेव क्रमे दशमकक्षायाः छात्राणां संस्कृतव्याकरणस्य अभ्यासार्थं चतुर्दशाध्यायेषु निर्मितस्य “अभ्यासवान् भव” इति नामधेयस्य अभ्यासपुस्तकस्य संस्करणं प्रस्तूयते। अत्र अपठितावबोधनेन सह पत्रलेखनम्, अनुच्छेदलेखनम्, रचनानुवादः, चित्रवर्णनम्, सन्धिः, समयः, वाच्यम्, अशुद्धिसंशोधनं, प्रत्ययसमासाव्ययप्रयोगः इति विषयेषु अभ्यासक्रमाः दत्ताः येन छात्रेषु संस्कृतभाषाकौशलानां विकासो भवेत्। एतदतिरिच्य मिश्रिताभ्यासद्वयम् आदर्शप्रश्नपत्रमेकम् अपि प्रदत्तं येन छात्राः भाषाकौशलेन सह परीक्षायाः कृतेऽपि सन्नद्धाः भवेयुः। परिशिष्टे ध्येयवाक्यानां, व्यवहारवाक्यानां चापि सन्निवेशः कृतः येन कक्षायामपि छात्राः संस्कृतभाषया सम्भाषणे समर्थाः भवेयुः। अनेन पुस्तकेन छात्राः संस्कृतस्य भाषाप्रयोगे दक्षाः भवेयुः इति एतदर्थमपि पुस्तकेऽस्मिन् प्रयत्नो विहितः।

पुस्तकस्यास्य प्रणयने आयोजितासु कार्यगोष्ठीषु आगत्य यैः विशेषज्ञैः अनुभविभिः संस्कृताध्यापकैश्च परामर्शादिकं दत्त्वा सहयोगः कृतः, तान् प्रति परिषदियं स्वकृतज्ञतां प्रकटयति। पुस्तकमिदं छात्राणां कृते उपयुक्ततरं विधातुम् अनुभविनां विदुषां संस्कृत-शिक्षकाणां च सत्परामर्शः सदैवास्माकं स्वागतार्हाः।

नवदेहली
मार्च, 2019

हणिकेशः सेनापतिः
निदेशकः
राष्ट्रियशैक्षिकानुसन्धानप्रशिक्षणपरिषद्

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक ¹[संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य] बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय,
विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म
और उपासना की स्वतंत्रता,
प्रतिष्ठा और अवसर की समता
प्राप्त कराने के लिए,
तथा उन सब में

व्यक्ति की गरिमा और ²[राष्ट्र की एकता
और अखंडता] सुनिश्चित करने वाली बंधुता
बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर अपनी इस संविधान सभा में आज तारीख
26 नवंबर, 1949 ई. को एतद्वारा इस संविधान को
अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।

1. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से)
“प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य” के स्थान पर प्रतिस्थापित।
2. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) “राष्ट्र की एकता” के स्थान पर प्रतिस्थापित।



पुस्तक निर्माण समिति

सदस्य

आभा झा, पी.जी.टी. संस्कृत, गार्गी सर्वोदय कन्या विद्यालय, ग्रीन पार्क, नयी दिल्ली
कीर्ति कपूर, प्रोफेसर, भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली
गजानन धेरेन्द्र, टी.जी.टी. संस्कृत, सर्वोदय बाल विद्यालय नं. 2, सी-ब्लॉक, जनकपुरी, नयी दिल्ली
लता अरोड़ा, सेवानिवृत्त, टी.जी.टी. संस्कृत, केन्द्रीय विद्यालय नं 3, दिल्ली कैंट, नयी दिल्ली
वेदप्रकाश मिश्र, असिस्टेंट प्रोफेसर, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली
वी.वी. भट्ट, टी.जी.टी. संस्कृत, केन्द्रीय विद्यालय, हासन, कर्नाटक
शशिपाल शर्मा, निदेशक, जयति संस्कृतम्, नोएडा
सरोज गुलाटी, पी.जी.टी. संस्कृत, कुलाची हंसराज मॉडल पब्लिक स्कूल, अशोक विहार, दिल्ली
सरोज पुरी, सेवानिवृत्त, टी.जी.टी. संस्कृत, डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल पीतम पुरा, नयी दिल्ली

समन्वयक

के.सी.त्रिपाठी, प्रोफेसर संस्कृत, भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली
जतीन्द्र मोहन मिश्र, प्रोफेसर संस्कृत, भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

आभार

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, पुस्तक निर्माण समिति के सभी सदस्यों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करती है। परिषद् अनीता, रेखा, डी.टी.पी. ऑपरेटर, रिकेश भदूला, जे.पी.एफ., भाषा शिक्षा विभाग एवं पुस्तक के संपादन के लिए ममता गौड़, संपादक-संविदा, प्रवीन कुमार, नरेश कुमार, आरती, डी.टी.पी. ऑपरेटर, प्रकाशन प्रभाग, के प्रति भी हार्दिक आभार व्यक्त करती है।

© NCERT
not to be republished



भूमिका

गच्छन् पिपीलिको याति योजनानां शतान्यपि ।
अगच्छन् वैनतेयोऽपि पदमेकं न गच्छति ॥

शुद्ध भाषा प्रयोग के लिए और ग्रन्थों के भावों को आत्मसात् करने के लिए व्याकरण का ज्ञान आवश्यक है। यद्यपि व्याकरण का प्रत्यक्ष ज्ञान देने का प्रचलन आज की शिक्षा पद्धति में नहीं है, पाठों में प्रयुक्त व्याकरण-बिंदुओं को अनेक उदाहरणों के द्वारा स्पष्ट किया जाता है। इस तरह व्याकरण के नियमों को स्मरण करने की नीरस प्रक्रिया से बच्चों को गुजराना नहीं पड़ता और व्याकरण वाक्य संरचना का नियमानुसार ज्ञान भी हो जाता है।

अभ्यासवान् भव में दशम कक्षा के विद्यार्थियों को पाठ्यक्रमानुसार अभ्यास हेतु पर्याप्त सामग्री उपलब्ध कराई गई है, जिससे वे न केवल आवश्यक व्याकरण-बिंदुओं से परिचित होते हैं, बल्कि वाक्य संरचना कौशल का पर्याप्त ज्ञान भी प्राप्त करते हैं। पुनः-पुनः अभ्यास करने से विषयों का ज्ञान हो जाता है और वह स्मृत विद्या चिरकालपर्यन्त याद रहती है। ‘अनभ्यासे विषं विद्या’ यह जानते हुए विद्यार्थियों को पर्याप्त अभ्यास करना चाहिए। इस अभ्यास पुस्तिका में अपठितांश, पत्र, चित्रवर्णन, अनुच्छेदलेखन, संस्कृतानुवाद, सन्धि, समास, प्रत्यय, अव्यय, समय, वाच्य और अशुद्धि संशोधन पर आधारित बारह पाठ हैं। इसके अतिरिक्त मिश्रित अभ्यास हेतु दो कार्यपत्रिकाएँ त्रयोदश पाठ में समाविष्ट की गई हैं। चतुर्दश पाठ में केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुसार एक आदर्श प्रश्न पत्र भी समाविष्ट किया गया है, जो परीक्षा हेतु तैयारी में सहायक होगा।

परिशिष्ट में ध्येय-वाक्यों और व्यवहार-वाक्यों का संकलन है, जिससे छात्रों की संभाषण क्षमता में वृद्धि होगी।

आशा है यह अभ्यास पुस्तिका छात्रों को संस्कृत भाषा-संरचना, व्याकरण एवं संस्कृत व्यवहार का अभ्यास कराने में सफल होगी। पुस्तक को और अधिक उपयोगी बनाने के लिए सुधी समालोचकों के सत् परामर्शों का सदैव स्वागत है।

मङ्गलम्

अभ्यासं कार्यसिद्ध्यर्थं
नित्यं कुर्वन्ति पण्डिताः।
संसारे सिद्धिमन्त्रोऽयं
तस्मादभ्यासवान्भव॥

कार्य की सिद्धि के लिए समझदार लोग नित्य अभ्यास करते हैं। यह (अभ्यास) संसार में सिद्धि (प्राप्त करने) का मंत्र है। इसलिए (तुम भी) अभ्यास करने वाले बनो।

अभ्यसामो वयं विद्यां
यावतीमधिकाधिकाम्।
तावदग्रे जगत्यस्मिन्
सरिष्यामो न संशयः॥

हम विद्या का जितना अधिक से अधिक अभ्यास करते हैं, संसार में उतना ही आगे बढ़ेंगे इसमें संदेह नहीं है।





विषयानुक्रमणिका

पुरोवाक्	<i>iii</i>
भूमिका	<i>vii</i>
मञ्जलम्	<i>viii</i>
1. अपठितावबोधनम्	1
2. पत्रलेखनम्	11
(क) अनौपचारिकम् पत्रम्	
(ख) औपचारिकम् पत्रम्	
3. अनुच्छेदलेखनम्	18
4. चित्रवर्णनम्	21
5. रचनानुवादः (वाक्यरचनाकौशलम्)	31
6. सन्धिः	38
7. समासाः	48
8. प्रत्ययाः	57
9. अव्ययानि	76
10. समयः	81
11. वाच्यम्	84
12. अशुद्धिसंशोधनम्	89
13. मिश्रिताभ्यासः	94
14. आदर्शप्रश्नपत्रम्	101
परिशिष्टम्	
व्यवहार-वाक्यानि	108
ध्येय-वाक्यानि	112
संवादाः	113



शिक्षिता बालिका

शिक्षितः समाजः

सशक्ता बालिका

सशक्तः समाजः

स्वस्था बालिका

स्वस्थः समाजः





अपठितावबोधनम्

अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा यथानिर्देशं प्रश्नान् उत्तरत—

- धात्रीफलं सर्वेषु ऋतुषु लाभदायकं भवति। धात्रीफलम् ‘आमलकम्’ इत्यपि कथ्यते। शरीरस्य स्वास्थ्यरक्षणाय फलस्यास्य प्रयोगः अवश्यमेव कर्तव्यः। इदं फलं नेत्रयोः ज्योतिर्वर्धनाय, केशानां सौन्दर्यवृद्धये, त्वचः कान्तिवर्धनाय च बहूपयोगि भवति। सामान्यतया अस्य प्रयोगः अवलेहरूपेण, उपदंशरूपेण च भवति। इदं रक्तकोशिकानिर्माणे अपि सहायकं भवति। अस्य सेवनेन शरीरे रक्ताल्पता न भवति। ग्रीष्मतौ फलमिदं शरीरस्य तापम् अपनयति। अस्य नियमितसेवनेन स्मरणशक्तिरपि वर्धते। प्राचीनकाले कार्तिकमासस्य नवम्यां तिथौ धात्रीवृक्षस्य अधः सहभोजस्य अपि परम्परा आसीत्। केषुचित् स्थलेषु अधुना अपि एषा परम्परा परिपाल्यते। वृक्षस्य अधः भोजनं पच्यते चेत् भोजनं सुस्वादु स्वास्थ्यवर्धकं च भवतीति अस्माकं पूर्वजानां चिन्तनमासीत्। एतदतिरिच्य सहभोजनेन प्रेम्णः भावोऽपि जागर्ति वर्धते च इत्यपि जनाः आमनन्ति। सर्वतोऽधिकं परम्परेयं धात्रीफलस्य महिमानं प्रकटीकरोति।

अभ्यासः

(i) एकपदेन उत्तरत—

- (क) धात्रीफलं कदा लाभदायकं भवति?
- (ख) धात्रीफलस्य अपरं नाम किम्?
- (ग) धात्रीफलं कस्मिन् सहायकं भवति?
- (घ) सहभोजनेन कीदृशः भावः जागर्ति?

(ii) पूर्णवाक्येन उत्तरत—

- (क) धात्रीफलं कथं बहूपयोगि अस्ति?
- (ख) प्राचीनकाले कीदृशी परम्परा आसीत्?

(iii) यथानिर्देशं प्रश्नान् उत्तरत—

(क) ‘सर्वेषु ऋतुषु’ इत्यनयोः पदयोः किं विशेषणपदम्?

(ख) ‘क्षीयते’ इति क्रियापदस्य विलोमपदं पाठात् चित्वा लिखत।

(ग) ‘स्नेहस्य’ इति पदस्य कृते गद्यांशे किं पदं प्रयुक्तम्?

(घ) ‘अस्य सेवनेन शरीरे रक्ताल्पता न भवति’ इत्यस्मिन् वाक्ये ‘अस्य’ इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?

(iv) अनुच्छेदस्यास्य कृते समुचितं शीर्षकं लिखत।

2. महान् स्वतन्त्रासेनानीः स्वतन्त्रभारतस्य प्रथमः उपप्रधानमन्त्री गृहमन्त्री च लौहपुरुषः सरदार-वल्लभभाईपटेलमहोदयः 1875 तमे वर्षे अक्तूबरमासस्य एकत्रिंशत्-दिनाङ्के जन्म अलभता। प्रान्तानाम् एकीकरणे केन्द्रीयां भूमिकां निर्वहन् पटेलमहोदयः अद्यापि सर्वेषां भारतवासिनां श्रद्धाभाजनम्। पटेलमहोदयं प्रति कृतज्ञतां प्रकटयितुं गुजरातप्रान्तस्य तत्कालीनः मुख्यमन्त्री नरेन्द्रमोदिमहोदयः 2013 तमे वर्षे अक्तूबरमासस्य एकत्रिंशद्-दिनाङ्के तस्य मूर्तेः शिलान्यासं कृतवान्। अस्याः विशालकायायाः मूर्तेः निर्माणे पञ्चवर्षाणां कालः उपयुक्तः। तस्यैव जन्मदिवसे अक्तूबरमासस्य एकत्रिंशद् दिनाङ्के एव भारतस्य प्रधानमन्त्रिणा नरेन्द्रमोदिमहोदयेन मूर्तिरियं राष्ट्राय समर्पिता। इयं प्रतिमा एकतायाः मूर्तिः (स्टैच्यू ऑफ लिबर्टी) इति नामा ख्याता अस्ति। इदं स्मारकं सरदार- सरोवरबन्धतः प्रायशः त्रिकिलोमीटरमिते दूरे साधूबेरनामके उपदीपे स्थितमस्ति। अस्याः प्रतिमायाः उच्चता द्वयशीत्यधिकशतमीटरमिता (182मी. /597 फीट) अस्ति। इयं विश्वस्य उच्चतमा मूर्तिः अस्ति। मूर्तेः उच्चता पटेलमहोदयस्य व्यक्तित्वस्य कृतित्वस्य च उच्चतायाः सूचिका वर्तते।

अभ्यासः

(i) एकपदेन उत्तरत—

(क) भारतस्य प्रथमः उपप्रधानमन्त्री गृहमन्त्री च कः आसीत्?

(ख) पटेलमहोदयः कस्मिन् केन्द्रीयां भूमिकां निर्वूद्वान्?

(ग) नरेन्द्रमोदिमहोदयेन मूर्तिः कस्मै समर्पिता?

(घ) पटेलमहोदयस्य प्रतिमा केन नाम्ना ख्याता?

(ii) पूर्णवाक्येन उत्तरत—

(क) कः सर्वेषां भारतीयानां श्रद्धाभाजनम्?
.....

(ख) मूर्तेः उच्चता किं सूचयति?
.....

(iii) यथानिर्देशं प्रश्नान् उत्तरत—

(क) ‘केन्द्रीयां भूमिकाम्’ इत्यनयोः पदयोः किं विशेष्यपदम्?
.....

(ख) ‘तस्यैव जन्मदिवसे समर्पिता?’ इत्यस्मिन् वाक्ये तस्य इति
सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?
.....

(ग) ‘समीपे’ इत्यस्य विलोमपदं गद्यांशात् चित्वा लिखता
.....

(घ) ‘महान् स्वतन्त्रतासेनानीः जन्म अलभत्’ इत्यस्मिन् वाक्ये किं क्रियापदम्?
.....

(iv) अनुच्छेदस्यास्य कृते समुचितं शीर्षकं लिखता

3. जयदेवः वेदशास्त्रज्ञः सदाचारी वयोवृद्धः च आसीत्। तस्य पुत्रः धनेशः अस्ति। धनेशस्य सर्वाणि कार्याणि परिश्रमेण एव सिध्यन्ति। सफलता परिश्रमिणः पुरुषस्य चरणो चुम्बति। विद्यार्थी परिश्रमेण ज्ञानं लभते, धनार्थी चापि परिश्रमेण एव धनं प्राप्नोति। शक्तेः प्राप्तये अपि परिश्रमः आवश्यकः। ‘उद्योगिनं पुरुषं सिंहमुपैति लक्ष्मीः’ इति उक्तिः स्पष्टं व्यनक्तिं यत् धनस्य देवी लक्ष्मीः। उद्योगिनं पुरुषं प्रति गच्छति। अत एव साफल्यं लब्ध्युं परिश्रममः अवश्यं करणीया। अत्यधिकः मेधावी अपि यदि सततं पठनाभ्यासं न करोति तदा असफलः भवति, परं सामान्यमेधासम्पन्नः अपि अध्ययनशीलः छात्रः सफलतायाः उच्चशिखरं प्राप्नोति — ‘उद्यमेनैव हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः’ इति प्राचीनोक्तिः। सदैव स्मारयति- कर्मसहचरी इच्छा एव साकाररूपताम् एति। श्रीमद्भगवद्गीता अपि कर्मणः महत्वं स्मारयति। अत एव छात्राः सर्वदा परिश्रमस्य अवलम्बनं कुर्वन्तु, भाग्यस्य शरणं मा गच्छन्तु।

अभ्यासः

(i) एकपदेन उत्तरत —

- (क) साफल्यं लब्धुं किं करणीयम्?
- (ख) सर्वाणि कार्याणि केन सिध्यन्ति?
- (ग) कः असफलः भवति?
- (घ) अध्ययनशीलः छात्रः किं प्राप्नोति?

(ii) पूर्णवाक्येन उत्तरत —

- (क) ‘उद्यमेनैवमनोरथैः’ इति उक्तिः किं स्मारयति?

- (ख) धनस्य देवीं कं प्रति गच्छति?

(iii) यथानिर्देशं प्रश्नान् उत्तरत—

- (क) ‘परिश्रमस्य अवलम्बनं कुर्वन्तु’ इति वाक्ये किं क्रियापदम्?

- (ख) ‘कुशाग्रबुद्धिः’ इत्यस्य समानार्थकपदं गद्यांशात् चित्वा लिखत।

- (ग) ‘कर्मसहचरी इच्छा’ इत्यनयोः पदयोः किं विशेषणपदम्?

- (घ) विद्यार्थीं परिश्रमेण ज्ञानं लभते इत्यस्मिन् वाक्ये किं कर्तृपदम्?

(iv) अस्य गद्यांशस्य कृते समुचितं शीर्षकं लिखत।

4. जीवनस्य मूल्यम् अर्थात् ते मानवीयगुणाः ये मानवजीवनम् उत्कर्षं प्रापयन्ति। तेषु प्रमुखाः दया-सत्य-अहिंसा-अस्तेय-अक्रोधादयः सन्ति। मानवजीवनस्य उत्थानाय एतेषां महती आवश्यकता भवति। मनुष्यः वास्तवः मनुष्यः तदैव भवति यदा सः एतैः गुणैः सुशोभितः भवति। सर्वाङ्गीणविकासाय पुस्तकीयज्ञानेन समं नैतिकमूल्यान्यपि छात्रैः ग्रहीतव्यानि। बाल्यावस्थायां मूल्यानां शिक्षा प्रदीयते चेत् व्यक्तित्वस्य सर्वाङ्गीणः विकासः भवति। मानवः स्वकीयं पुरुषार्थं करोति जीवनलक्ष्यं च प्राप्नोति। भारतीयसंस्कृतौ आदिकालतः एव जीवनमूल्यानां प्राधान्यमस्ति। प्राचीनकालादेव भारतीयसंस्कृतेः मूल्यपरकगुणानां

स्तुतिः भवति। एतैः गुणैरेव भारतं विश्वगुरुपदं प्राप्नोत्। सम्प्रत्यपि पुनः तत्पदं प्राप्तुं छात्रेषु बाल्यादेव एते संस्काराः स्थापनीयाः। विद्यालयेषु अध्ययनेन सह जीवनमूल्यशिक्षायाः आवश्यकता वर्तते। प्रार्थनासभायामपि एषा शिक्षा स्वीकृतुं शक्यते।

अध्यासः

(i) एकपदेन उत्तरत —

- (क) मानवः स्वकीयं पुरुषार्थं कृत्वा किं प्राप्नोति ?
- (ख) कस्य उत्थानाय दयादिगुणानां महती आवश्यकता ?
- (ग) सर्वाङ्गीणविकासाय केन समं नैतिकमूल्यान्यपि ग्रहीतव्यानि?
- (घ) केषु बाल्यादेव एते संस्काराः स्थापनीयाः?

(ii) पूर्णवाक्येन उत्तरत —

- (क) मनुष्यः वास्तवः मनुष्यः कैः गुणैः भवति?
- (ख) प्राचीनकालादेव भारतं विश्वगुरुपदं कथं प्राप्नोत्?

(iii) यथानिर्देशम् उत्तरत —

- (क) ‘सर्वाङ्गीणः विकासः’ अत्र विशेषणपदं किम्?
- (ख) ‘भारतं विश्वगुरुपदं प्राप्नोत्’ अत्र प्राप्नोत् इति क्रियापदस्य कर्तृपदं किम्?
- (ग) गद्यांशे ‘सज्जितः’ इति पदस्य कृते पर्यायपदं किं प्रयुक्तम्?
- (घ) ‘मानवजीवनस्य उत्थानाय एतेषां महती आवश्यकता भवति’ अत्र ‘एतेषां’ सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?

(iv) अस्य गद्यांशस्य उचितं शीर्षकं लिखता।

5. एकस्मिन् विद्यालये नवमकक्षायाः छात्रेषु अकिञ्चनः इति नामा एकः छात्रः आसीत्। कक्षायाः सर्वे छात्राः सम्पन्नपरिवारेभ्यः आसन्, परन्तु अकिञ्चनस्य पिता एकस्मिन्

अभ्यासवान् भव — दशमकक्षायाः

कार्यालये चतुर्थश्रेण्याः कर्मकरः आसीत्। इतरान् सम्पन्नान् छात्रान् दृष्ट्वा प्रायः अकिञ्चनस्य मनसि हीनभावना प्राविशत्। सः अचिन्तयत् एतेषां सहपाठिनां जीवनं धन्यम् अस्ति। धिक् मम अभावपूर्णं जीवनम्। मम सहपाठिनां जीवनं पर्वत इव उच्चम् मम च जीवनं धूलिवत् निम्नम्। यदा सः एवं चिन्तयति स्म तदैव वैभवः तम् अवदत् भोः मित्र! अहं त्वतः गणितं पठितुम् इच्छामि। किं त्वम् अद्य सायङ्काले मम गृहम् आगन्तुं शक्नोषि। अकिञ्चनः वैभवस्य आमन्त्रणं स्वीकृत्य सायङ्काले यदा तस्य गृहम् अगच्छत् तदा सः अपश्यत् यत् रात्रौ विलम्बेन एव तौ गृहम् आगच्छतः। वैभवः तस्मै असूचयत् यत् रात्रौ विलम्बेन एव तौ गृहम् आगच्छतः। वैभवस्य विषादपूर्णं जीवनं दृष्ट्वा अकिञ्चनः अबोधयत् यत् तस्य गृहे मातापित्रोः अधिकसान्निध्येन तस्य एव जीवनं वरं न तु वैभवस्य। सत्यमेवास्ति — दूरतः पर्वताः रम्याः। इति

अभ्यासः

(i) एकपदेन उत्तरत —

- (क) अकिञ्चनस्य कक्षायाः अन्ये छात्राः कीदृश-परिवरेभ्यः आसन्?
(ख) अकिञ्चनस्य मनसि किम् प्राविशत्?

(ii) पूर्णवाक्येन उत्तरत —

- (क) अकिञ्चनस्य पिता कः आसीत्?

- (ख) अकिञ्चनः हीनभावनया किम् अचिन्तयत्?

(iii) यथानिर्देशम् उत्तरत —

- (क) ‘सम्पन्नान्’ इति पदस्य विशेष्यपदं किम् अस्ति ?

- (ख) ‘आस्ताम्’ इति पदस्य कर्तृपदं किम् अस्ति?

- (ग) ‘निकटतः’ इति पदस्य किं विलोमपदं गद्यांशे प्रयुक्तम्?

- (घ) ‘वैभवः तम् अवदत्’ इति वाक्यांशे ‘तम्’ इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?

(iv) गद्यांशं पठित्वा यथोचितं शीर्षकं लिखता।

6. विधात्रा निर्मिता इयं सृष्टिः अतीव सौन्दर्यमयी। प्रकृतेः शोभा वस्तुतः अतीव आह्लादकारी, परं निरन्तरं विकासशीलैः मानवैः विकासेन सह प्रदूषणमपि वर्धितं येनास्माकमेव स्वास्थ्यहानिः भवति। वायुप्रदूषणम्, ध्वनिप्रदूषणम्, जलप्रदूषणम् एतत् त्रिविधं प्रदूषणमेव मुख्यतया सर्वं वातावरणम् आकुलीकरोति। वायुप्रदूषणेन श्वासग्रहणे काठिन्यं वर्धते। एतत् सर्वेषां स्वास्थ्याय हानिकरं सिध्यति। ध्वनिप्रदूषणं मार्गेषु वाहनानां ‘पों पों’ इति शृङ्खलादनेन, ध्वनिविस्तारक्यन्त्रैश्चापि भवति। अनेन श्रवणशक्तेः हानिर्भवति। प्रदूषितजलोपयोगः तु सर्वेषां व्याधीनां मूलभूतमेव।

तस्मादस्माकं सर्वेषामेव कर्तव्यमिदं यदत्र तत्र सर्वत्र अवकररहितस्य वातावरणस्य निर्माणं वयं कुर्याम, येन वायुप्रदूषणम् अस्माकं स्वास्थ्यं नाशयितुं क्षमं न भवेत्। तथैव ध्वनिप्रदूषणं जलप्रदूषणञ्चापि रोद्धुं वयं सर्वे मिलित्वैव प्रयासं कृत्वा — सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः इति भावनां बलं प्रापयेम।

अभ्यासः

(i) एकपदेन उत्तरत—

- (क) मुख्यतया प्रदूषणं कतिविधं भवति?
 (ख) ध्वनिप्रदूषणेन कस्याः हानिः भवति?
 (ग) केन निर्मिता इयं सृष्टिः अतीव सौन्दर्यमयी?
 (घ) सर्वैः मिलित्वा प्रदूषणावरोधाय किम् विधेयम्?

(ii) पूर्णवाक्येन उत्तरत—

- (क) अद्यत्वे अस्माकं स्वास्थ्यहानिः कथं भवति?

- (ख) वयं मिलित्वा कां भावनां बलं प्रापयेम?

(iii) यथानिर्देशमुत्तरत—

- (क) सततम्/अनवरतम् इत्यर्थे किं पदम् अनुच्छेदे प्रयुक्तम्?

- (ख) ‘क्षीयते’ इति पदस्य विपरीतार्थकं पदम् अनुच्छेदात् चित्वा लिखत।

अभ्यासवान् भव — दशमकक्षाया:

(ग) ‘सौन्दर्यमयी सृष्टिः’ अत्र विशेष्यपदं किम्?

(घ) ‘विकासेन सह प्रदूषणमपि वर्धितम् येन स्वास्थ्यहानिः भवति’ अत्र ‘भवति’ इति क्रियापदस्य कर्तृपदं किम्?

(iv) अस्य अनुच्छेदस्य कृते समुचितं शीर्षकं लिखत।

7. अद्यत्वे यत्र तत्र सर्वत्र वयं पश्यामः यत् उष्णतायाः प्रभावः दिनानुदिनं वर्धते। जनसङ्ख्यावृद्धे: कारणात् भवनानां निर्माणस्य आवश्यकता वृद्धिमाप्नोति। एतस्मात् कारणात् वृक्षाः कर्त्यन्ते, वनानि क्षेत्राणि चाऽपि विनाशयन्ते, अनेन पर्यावरणे असन्तुलनात् वैशिवकी उष्णता वर्धते। जीवाशमेन्धनस्य ज्वालनेन विषाक्तवायूनाम् उत्सर्जने वृद्धिर्जायते यतः सौरविकिरणं भूमे: वातावरणे निबद्धम् इव तिष्ठति, तापमानं च निरन्तरं वर्धमानम् एवास्ति। एतादृश्याः स्थितेः निराकरणाय अनियन्त्रितम् औद्योगिकीकरणं निवारणीयम्। एतदेव वस्तुतः सम्पूर्णविश्वस्य कृते समस्याम् उत्पादयति। अतः सर्वैः मिलित्वैव स्थितेः संशोधनाय प्रयासः करणीयः। एतदर्थम् नेत्रयोः ऊर्जार्थम् उपायान्वेषणं करणीयं, सामान्यविद्युदपेक्षया पवनोर्जा, सौरोर्जा प्रति च ध्यानं दातव्यम्। वृक्षकर्तनमवरुद्ध्य अधिकाधिकं वृक्षारोपणं कृत्वा वनसंरक्षणं प्रत्यपि ध्यानं दातव्यम्।

अभ्यासः

(i) एकपदेन उत्तरत —

- (क) कस्य ज्वालनेन विषाक्तवायूनाम् उत्सर्जने वृद्धिर्जायते?
(ख) कीदृशम् औद्योगीकरणं निवारणीयम्?
(ग) कस्मिन् असन्तुलनात् वैशिवकी उष्णता वर्धते?
(घ) वृक्षारोपणं कृत्वा किं प्रत्यपि ध्यानं दातव्यम्?

(ii) पूर्णवाक्येन उत्तरत —

(क) वैशिवकी उष्णता कथं वर्धते?
(ख) वैशिवकोष्णतायाः स्थितेः संशोधनाय ऊर्जा प्रति कथं ध्यानं दातव्यम्?
.....

(iii) यथानिर्देशम् उत्तरत—

(क) ‘दूरीकरणाय’ अस्य कृते किं पदम् अनुच्छेदे प्रयुक्तम्?

(ख) ‘वृक्षकर्तनम्’ इति पदस्य विपरीतार्थकपदम् अनुच्छेदात् चित्वा लिखत।

(ग) ‘उष्णतायाः प्रभावः दिनानुदिनं वर्धते’ अस्मिन् वाक्ये ‘वर्धते’ इति क्रियापदस्य कर्तृपदं किम्?

(घ) ‘अनियन्त्रितम् औद्योगिकीकरणम्’ अत्र विशेषणपदं किम्?

(iv) अस्य अनुच्छेदस्य कृते समुचितं शीर्षकं लिखत।

8. मानवः विकासशीलः। वयं पश्यामः यत् अस्माकं देशस्य जनसङ्ख्या सुरसामुखमिव सततं प्रवर्धमाना अस्ति। अस्मात् कारणात् प्रचुरनिवास-स्थानानाम् आवश्यकता अनुभूयते। एतत्कृते सततविकासे रतः मानवः नवीनाविष्कारपरम्परायां लघुस्थाने बहुभूमिकभवनानां निर्माणं कृतवान्। एतादृशेषु भवनेषु विविधानि तलानि भवन्ति येषु अधिकाधिकपरिवारेभ्यः निवासव्यवस्था कर्तुं शक्यते। अत्र उन्नयनयन्त्रेण (लिप्ट इति अनेन) उपरिगमनम् अधः आगमनं च अतीव सुकरं भवति। अत एव जनाः एतादृशानि भवनानि प्रति आकृष्टाः भवन्ति। अद्यत्वे नगरेषु महानगरेषु च बहुभूमिकभवनानां प्रचलनमेव वर्तते। एतेषां भवनानां परिसरे एव देवालयः, तरणतालः, समाजसदनं, ‘जिम’ इति व्यायामस्थानम्, उद्यानम् इत्यादीनि उपयोगीनि सुविधाप्रदायकसाधनानि अपि भवन्ति। अतिशोभनमेतत् सर्वं परं विकासं प्रति अन्धावनशीलः मानवः प्रकृतेः उपेक्षां करोति इति अनुचितं प्रतीयते। अस्माभिः प्रकृतिमातुः संरक्षणपूर्वकं विकासस्य दिशि प्रयतितव्यम्।

अभ्यासः

(i) एकपदेन उत्तरत—

(क) जनसङ्ख्या कथं वर्धते?

(ख) बहुभूमिक-भवनेषु उपरिगमनम् अधः आगमनं

केन सुकरं भवति?

अभ्यासवान् भव — दशमकक्षाया:

(ग) विकासं प्रति अन्धधावनशीलः मानवः कस्याः
उपेक्षां करोति?

(घ) नगरेषु महानगरेषु च केषां प्रचलनं वर्तते?

(ii) पूर्णवाक्येन उत्तरत —

(क) प्रचुरनिवासस्थानस्य कृते मानवः किं कृतवान्?

(ख) बहुभूमिकभवनानां परिसरे कानि सुविधासाधनानि भवन्ति?

(iii) यथानिर्देशम् उत्तरत —

(क) ‘मानवः बहुभूमिकभवनानां निर्माणं कृतवान्’ — अत्र किं क्रियापदम्?

(ख) ‘एतादृशानि भवनानि’ — अनयोः पदयोः किं विशेष्यपदम्?

(ग) ‘अद्यत्वे बहुभूमिकभवनानां प्रचलनं वर्तते’ — अत्र किम् अव्ययपदम्?

(घ) ‘उचितम्’ — इति पदस्य किं विपरीतार्थकं पदम् अनुच्छेदे प्रयुक्तम्?

(iv) अस्य अनुच्छेदस्य कृते समुचितं शीर्षकं लिखत।



पत्रलेखनम्

(क) अनौपचारिकम् पत्रम्

1. चोरितस्य स्यूतस्य प्राथमिक-सूचनार्थम् आरक्ष्यधिकारिणं प्रति पत्रं लिखता।

आरक्ष्यधिकारि-महोदय!

लाजपतनगर-क्षेत्रम्

नवदेहली

विषयः— चोरितस्य स्यूतस्य प्राथमिक-सूचना।

श्रीमन्,

अनेन पत्रेण अहं भवते एतत् सूचयामि यत् ह्याः प्रातः एकादशा-वादने रेलमैट्रोयानेन विश्वविद्यालयात् अहं लाजपतनगरम् अगच्छम् मार्गे मम स्यूतं चोरितम् अभवत्। यस्मिन् द्विसहस्रं रूप्यकाणि, कार्यालयस्य परिचय-पत्रं, मैट्रोचिटिकापत्रं मम आधार-परिचयपत्रं चासन्। स्यूतस्य वर्णः कृष्णः आसीत्। अहं प्रार्थये यत् यथाशीघ्रं मम स्यूतम् अन्वेष्य मां कृतार्थं करोतु भवान्।

सधन्यवादम्

निवेदकः

अजयः

निवासस्थानम्

—

दूरभाष-संख्या

—

दिनाङ्कः—.....

अभ्यासवान् भव — दशमकक्षाया:

2. चोरिताया: घटिकाया: प्राथमिक-सूचनार्थम् आरक्ष्यधिकारिणं प्रति पत्रं लिखत।

(ख) औपचारिकम् पत्रम्

- विज्ञानविषयं प्राप्तुं प्राधानाचार्यं प्रति आवेदनपत्रम्।

सेवायाम्

प्रधानाचार्यमहोदय!

मीमांसाविद्यालयः, नवदेहली

विषयः- एकादशकक्षायां विज्ञानविषयग्रहणार्थं विशेषानुमतये निवेदनम्।

महोदय,

सविनयं निवेदयते यदहमस्मिन् विद्यालये प्रथमकक्षातः पठामि। प्रतिवर्षमहम् उत्तमान् अङ्गकान् प्राप्य कक्षायां प्रथमस्थानमेव अधिगच्छामि स्मा। परमस्मिन् वर्षे परीक्षामध्ये एवाहम् अकस्मात् ज्वरग्रस्तः अभवम्। विज्ञानविषयस्य तु परीक्षाऽपि मया चिकित्सालयात् एव परीक्षाकेन्द्रं प्राप्य प्रदत्ता फलतः मया आशानुकूलः परीक्षापरिणामः न प्राप्तः। विद्यालयनियमानुसारं विज्ञानविषय-ग्रहणाय प्रतिशतं केवलम् एकस्य एव अङ्गस्य न्यूनता अस्ति।

महोदय! शैशवादेव मम हार्दिकी इच्छा जीवविज्ञाने शोधं कृत्वा वैज्ञानिकः भवितुमासीत्। परं यदि अहं विज्ञानविषये प्रवेशमेव प्राप्तुमसमर्थः भविष्यामि तदा कथमहं स्वकीयं स्वप्नं सार्थकारं करिष्यामि। अतः मम करबद्धः अनुरोधः अस्ति। यन्मह्यं विज्ञानविषयं पठितुं भवान् अनुमतिं प्रयच्छतु। एतदर्थम् अहं पुनः परीक्षणाय अपि सज्जः अस्मि।

आशासे यत् भवान् मम स्थितिमवगत्य मम विशेषानुरोधं स्वीकरिष्यति।
कृपाकाङ्क्षी

भवदाज्ञाकारी शिष्यः

- अध्ययनं प्रति मातरं समाश्वासयितुं पुत्र्या लिखितं पत्रं मञ्जूषायां प्रदत्तपदैः पूरयित्वा पुनः लिखत—

कुशलम्, प्रतियोगिताः, कुशलिनी, परिणामः, चिन्तिता, मतिम्, आनन्देन, करणीया,
खेलप्रतियोगितासु, कालः

परीक्षाभवनतः

दिनाङ्कः.....

पूज्यमातृचरणाः,

प्रणतीनां शतम्।

अत्र अहं। आशासे भवती पितृमहोदयः च स्तः। मातः!

अहं जानामि यद् भवती मम अर्धवार्षिक-परीक्षापरिणामकारणात् अस्ति।

अभ्यासवान् भव — दशमकक्षायाः

अत्र चिन्ता न। प्रथमसत्रे तु अहंरता आसम्। पठनाय तु
..... एव न आसीत् परम् अधुना तु सर्वाः
समाप्ताः। अद्यारभ्य अहं केवलं पठने एव विधास्यामि आशासे
वार्षिकपरीक्षायां मम भवताम् आशानुकूलः भविष्यति शेषं
सर्वं भवत्याः चरणयोः प्रणामाः
भवत्याः पुत्री
सुकन्या

3. जलसंरक्षणस्य महत्वं वर्णयन्तः मित्रं प्रति लिखितं पत्रं मञ्जूषायां प्रदत्तपदैः
पूर्यित्वा पुनः लिखत—

देशस्य, प्रयतमानाः, अपव्ययम्, विचारयति, जागरूकता, प्रयासः, जानीमः,
जीवनम्, सह, अस्तु

छात्रावासतः

दिनाङ्कः.....

प्रिय मित्र!

सप्रेम नमो नमः,

अत्र कुशलं तत्र। भवतः पत्रं पठित्वा अतीव प्रसन्नताम्
अनुभवामि यत् भवान् मित्रैः जलसंरक्षणप्रचारकार्ये रतोऽस्ति। एषः
तु उत्तमः अस्ति। वयं सर्वे एव यत् जीवने जलस्य महत्वं
तु अतुलनीयम्। जलम् एव इति वयं सर्वे जानीमः परं पुनरपि वयम्
अस्य कुर्मः। अनेन आगामिकाले यद् भीषणं जलसङ्कटं भवेत् इति
कोऽपि न। जलसंरक्षणार्थं अनिवार्या एव। यदि जनाः अत्र
ध्यानं न दास्यन्ति तदा अस्माकं स्थितिरपि अफ्रीकादेशवत् भविष्यति।
यथा ते जलबिन्दुप्राप्त्यर्थं सन्ति तथा एव अस्माकं देशस्य अपि स्थितिः
भविष्यति। अतः जलसंरक्षणार्थं जागरूकता अनिवार्या। शेषं सर्वं कुशलम्। पितृभ्यां
चरणयोः मम् वन्दनं।

भवतः मित्रम्

उमेशः

4. स्वस्थभोजनस्य महत्त्वं वर्णयन्त्याः अग्रजायाः अनुजं प्रति पत्रम्

प्रिय अमित!

सप्रेम नमो नमः।

माता लिखितं पत्रं प्राप्तम्। तेन पत्रेण मया ज्ञातं यत् भवान् सन्तुलितं भोजनं न सेवते, प्रतिदिनं च ‘चाऊमीन-बर्गर’ इति खादति। ईदृशं भोजनं स्वास्थ्याय सम्यक् न अस्ति। कदाचित् तु अस्य सेवनं कर्तुं शक्यते परं प्रतिदिनं त्वरितभोजनस्य सेवनं स्वास्थ्याय हानिकरम्।

स्वास्थ्याय तु सन्तुलितभोजनं ग्रहीतव्यम् एव यतः ‘स्वस्थशारीरे एव स्वस्थमनसः वासः’ भवति अतः भवान् त्वरितभोजनस्य सेवनं मा करोतु। स्वास्थ्यवर्धकभोजनमेव खादतु। अनेन भवान् कदापि रुणः न भविष्यति। भवान् स्वस्वास्थ्यविषये जागरूकः तिष्ठतु इति मे अनुरोधः।

भवतः अग्रजा

अमिता

**5. सन्तुलितभोजनमेव सेवनीयम् इति वर्णयतः अग्रजस्य अनुजां प्रति पत्रं
लिखत—**

परीक्षाभवनतः

दिनाङ्कः.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

भवतः अग्रजः

.....

अभ्यासवान् भव — दशमकक्षायाः

6. प्रतियोगिपरीक्षार्थं सन्नद्धीकरणाय आरम्भतः एव सामान्यज्ञानस्य अभ्यासः करणीयः इति उपदिशतः पितुः पुत्रं प्रति पत्रम्।

जयपुरतः

दिनाङ्कः.....

प्रिय पुत्र अविनाश!

शुभाशिषो लसन्तु।

आशासे त्वं सकुशलः स्वाध्याये रतः असि पुत्र! अहं जानामि परीक्षायां तव प्रस्तुतिः शोभना भवति। त्वं प्रतिवर्षं कक्षायां प्रथमं स्थानं प्राप्नोषि इति अहं जानामि। ग्रीष्मावकाशे त्वं कथितवान् यत् तव लक्ष्यं प्रतियोगिपरीक्षामुत्तीर्य सङ्घलोकसेवा - आयोगक्षेत्रे सेवाप्रदानम् अस्ति। पुत्र! एतल्लक्ष्यं प्राप्तुं बाल्यकालादेव सामान्यज्ञानस्य अध्ययनं करणीयम्। अत एव विषयस्य अभ्यासेन समम् एकहोरार्पयन्तं सामान्यज्ञानं वर्धयितुं प्रतिदिनं सामाचारपत्रं पठ तदा यदि अधुनातः एतल्लक्ष्यं प्राप्तुं नियमितम् अध्ययनं करिष्यसि नूनमेव साफल्यं लप्स्यसे। यदि काऽपि सहायता अपेक्षिता तर्हि अहं करिष्यामि। तव जनकः

आशीषकुमारः

7. जीवने सफलतां लब्धुं परिश्रमस्य महत्त्वं वर्णयन्त्याः मातुः पुत्रीं प्रति पत्रम् पूर्यत—

कानपुरतः

दिनाङ्कः.....

प्रिय पुत्रि!

तव जननी

सुधा

8. स्वदेशस्य संस्कृतिं वर्णयन्तीं विदेशिनीं सखीं प्रति पत्रं लिखत —

9. ‘पुत्रीं रक्ष पुत्रीं पाठ्य’ इति अभियानं कथं सार्थकं भविष्यतीति स्वविचारं प्रकटयन्तः मित्रं प्रति पत्रं लिखत —



अनुच्छेदलेखनम्

(श्रवण-भाषण-कौशल-विकासार्थम्)

1. जन्तुशाला

जन्तुर्नां शाला जन्तुशाला इति कथ्यते। जन्तुशालायाम् अनेके पशवः पक्षिणः च भवन्ति। जनाः इमान् पक्षिणः पशून् च द्रष्टुम् दूरतः आगच्छन्ति। जन्तुशालायाः सर्वाः व्यवस्थाः प्रशासनेन क्रियन्ते। बालकाः जन्तुशालां गत्वा प्रसन्नाः भवन्ति।

2. स्वच्छता

स्वच्छता जीवने आवश्यकी भवति। सामान्यतया जनाः स्वगृहं स्वच्छीकुर्वन्ति, परं मार्गस्य प्रतिवेशस्य च स्वच्छतायाः विषये अवधानं न यच्छन्ति। अस्माकं प्रधानमन्त्री नरेन्द्रमोदी राष्ट्रपितुः गान्धिनः जन्मदिवसे स्वच्छताभियानस्य आरम्भं कृतवान्। अधुना बालकाः अपि स्वच्छताविषये जागरूकाः सन्ति। ते स्वगृहं विद्यालयं च यथाशक्ति स्वच्छं कर्तुं प्रयतन्ते।

3. वृक्षो रक्षति रक्षितः

वृक्षाः जीवनस्य आधाराः भवन्ति। वृक्षैः, नदीभिः, पर्वतैः च सुशोभिता इयं प्रकृतिः मानवानां कृते उपयोगिनी भवति। परं स्वार्थरताः मानवाः विकासं प्रति अन्धधावनशीलाः निर्ममभावेन वृक्षान् कृन्तन्ति। अस्माभिः सर्वैः तथ्यमिदं ध्यातव्यं यत् यदा वयं वृक्षाणां रक्षणं करिष्यामः तदा वृक्षाः अस्माकं रक्षां करिष्यन्ति। वृक्षाणाम् अवदानविषये श्लोकोऽयं दर्शनीयः अपि —

पत्रपुष्पफलच्छायामूलवल्कलदारुभिः।
गन्धनिर्यासभस्मास्थितोक्त्यैः कामान् वितन्वते॥

4. हीमादासः

हीमादासः असमराज्यस्य एकस्मिन् अतिनिधने कृषकपरिवारे जन्म अलभता। अस्याः जन्म जनवरीमासस्य नवम्यां तिथौ द्विसहस्रतमे (2000) वर्षे अभवत्। द्रारिद्र्यात् सुविधानाम् अभावे सा नियमितं प्रशिक्षणमपि न प्राप्नोत् तथापि सा हतोत्साहा नाभवत्। विंशतिवर्षपर्यन्तवयसां कृते या आइ.ए.ए.एफ धावनप्रतियोगिता अभवत् तस्यां सा

स्वर्णपदकं प्राप्य भारतवर्षं गौरवान्वितम् अकरोत्। वस्तुतः आदर्शरूपा प्रेरणास्वरूपा च सा सर्वस्मै युववर्गाय।

5. सहिष्णुता

वयं प्रतिदिनं समाचारेषु यातायातमार्गेषु वर्धमानां हिंसाम् अधिकृत्य समाचारान् शृणुमः। अतीव दुःखदायिनी एषा स्थितिः यतः अद्यत्वे जनेषु सहिष्णुतायाः अभावः जातः। वस्तुतः सहिष्णुतायाः अभावे मानवस्य दुर्गतिः एव भवति। समाजस्य विघटनस्य कारणमपि धार्मिक-सहिष्णुतायाः अभावः एवास्ति। यदि अस्माकं मनसि ‘वयं सर्वे सदृशाः स्मः’ इति भावना भवेत् तदा प्रकृत्या एव वयं सहनशीलाः भविष्यामः। क्रोधं संयम्य उचितानुचितं विचार्य एव कोऽपि निर्णयः कर्तव्यः।

6. संस्कृतशिक्षणम्

प्राचीनकाले संस्कृतं व्यवहारस्य भाषासीत् परम् अधुना एषा तथा न दृश्यते मन्यते। संस्कृतभाषा जनभाषा भवेद् एतदर्थं ‘संस्कृतभारती’ नामकं संस्थानं संस्कृतभाषायाः प्रचाराय प्रसाराय च प्रयतते। अत्र अनेकाः परियोजनाः प्रचाल्यन्ते यासु बालानां वयस्कानां च कृते संस्कृतसम्भाषण-शिक्षणस्य रुचिकरी व्यवस्था क्रियते। ‘वदतु संस्कृतम्’, ‘संस्कृतव्यवहार-साहस्री’, ‘भाषाप्रवेशः’, ‘गीतसंस्कृतम्’, शिशुसंस्कृतम् इत्यादीनि अनेकानि बालोपयोगीनि पुस्तकानि अपि अनेन संस्थानेन प्रकाशितानि। सान्द्रमुद्रिकाः ध्वनिमुद्रिकाः अपि इतः प्राप्तुं शक्यन्ते। एवं संस्कृतभाषाधिगमाय सर्वथा उपयुक्तमेतत् स्थानम्।

7. मम धर्मः

अहं मानवः अस्मि। मानवता मम गुणः धर्मः च। धर्मस्य दृष्ट्या अहं केवलं भारतीयः एव अस्मि। विस्तरेण यदि कथयामि तर्हि भारतीय-परम्परानुसारं धर्मः जीवनव्यवहारः भवति। एवं भ्रातृत्वं, पितृत्वं, शिक्षकत्वं, छात्रत्वं, सहयोगित्वं, मित्र त्वं चेव्यादयः मे अनेके धर्माः। एतैः सर्वैः धर्मैः उपेतः अहम् एकः भारतीयः एतदेव सत्यम्। भारतस्य उन्नत्यर्थं प्रयतिष्ठे भारतीयां संस्कृतिं च उन्नेष्यामि-एष मम सङ्कल्पः।

8. पुस्तकम्

पुस्तकानि मानवस्य सर्वोत्तममित्राणि। कुपितं मित्रम् अस्माभिः सह कपटं कर्तुं शक्नोति परं पुस्तकानि सदैव अस्माकं कल्याणाय सज्जानि भवन्ति, अतः अस्माभिः एतादृशं हितकरं मित्रं कदापि न त्याज्यम्। प्रत्यक्षम् अप्रत्यक्षं सर्वविधं ज्ञानं पुस्तकेभ्यः प्राप्तुं शक्यते। अत एव कथितमपि — ‘सर्वस्य लोचनं शास्त्रं यस्य नास्त्यन्ध एव सः।’ अतः पुस्तकमेलकानि अपि भवन्ति यत्र वयं विविधविषयाणां पुस्तकानि एकस्मिन्नेव स्थाने प्राप्तुं क्षमाः, अतः अस्माभिः सदैव स्वाध्यायपैः भवितव्यम्।

9. स्वाध्यायः

विद्यालये पठितस्य पाठस्य यदा गृहे वयं पुनः अध्ययनं कुर्मः तद्विषये चिन्तनं कुर्मः अभ्यासं वा कुर्मः तत्कर्म ‘स्वाध्याय’ इति कथ्यते। अद्यत्वे छात्राणां मूलसमस्या स्वाध्यायस्य अभावः अस्ति। विद्यालये पञ्च-षड्-होरापर्यन्तम् अध्यापकेभ्यः विविधविषयानवगत्य छात्रः गृहं प्राप्नोति तदा च अन्यशिक्षकेभ्यः व्यक्तिगतरूपेणापि पाठनस्य प्रबन्धं पितरौ कुरुतः। एवं छात्रेभ्योऽपि इदमेव प्रतीयते यद् वयं प्रातःकालात् आरभ्य सायं यावत् पठामः एव, अतः अधुना मनोरञ्जनाय अन्यत् किमपि कर्तव्यम्। एवं स्वाध्यायस्य अभावे विषयस्तु हृदयङ्गमः एव न भवति अपि तु परीक्षा चिन्ताकारणं सिध्यति अतः आवश्यकता तु इयमस्ति यत् पठितः विषयः प्रतिदिनं स्वाध्यायेन हृदयङ्गमः करणीयः।

10. मयूरः

मयूरः अस्माकं राष्ट्रियपक्षी अस्ति। एषः मूलतः वन्यपक्षी अस्ति। बहुरङ्गः मयूरः अतिसुन्दरः प्रतिभाति। वर्षाकालं वसन्तर्तु च प्राप्य एषः सुन्दरम् आकर्षकञ्च नृत्यं करोति। एतस्य नृत्यं दृष्ट्वा केकारवञ्च श्रुत्वा जनाः मुदिताः भवन्ति। भारतवत् म्याँमारस्य, श्रीलङ्कायाश्चापि राष्ट्रियपक्षी मयूरः अस्ति। देवानां सेनापतेः कार्तिकेयस्य वाहनम् अपि मयूरः एवास्ति। मयूरपिच्छं विना श्रीकृष्णस्य शृङ्गारः अपूर्णः मन्यते। अस्माभिः मयूरप्रजातिः रक्षणीया।

11. आतङ्कवादः

हिंसात्मकक्रियाभिः स्वकीय-वर्चस्त्वस्थापनाय भयोत्पादनम् अथवा भयस्य वातावरण-निर्माणम् एव आतङ्कवादः उच्यते। एषः केनापि एकेन जनेन समूहेन वा भवितुं शक्यते। अयम् असामाजिकतत्त्वैः असंवैधानिक-क्रियाभिः स्वकीयेच्छां पूर्यितुं विभिन्नस्तरेषु सञ्चाल्यमानः भवति। अनेन सामान्यजीवनं सङ्कटापन्नं भवति। आतङ्कवादेन गृहे, समाजे, देशे, विदेशेषु च असुरक्षायाः भावः भयञ्च उत्पद्यते। जनसम्मर्दे यत्र कुत्रापि, किमपि भवितुं शक्यते। आतङ्कवादिसङ्घटनानां मुख्यं लक्ष्यं भयोत्पादनमेव। आतङ्कवादस्य समूलनाशाय सर्वेषां राष्ट्राणां सहयोगः परमावश्यकः अस्ति।

1. अधोलिखितविषयानधिकृत्य पञ्चवाक्यात्मकमनुच्छेदं लिखत –

- (i) भूकम्पविभीषिका (ii) पर्वतारोहणम् (iii) पर्यावरणसंरक्षणम् (iv) गृहकार्य कियत् उपयोगि? (v) मम जीवनलक्ष्यम् (vi) हास्योपचारः (vii) ग्राम्यजीवनम् (viii) जलसंरक्षणस्य उपायाः (ix) विद्यालयस्य उन्नत्यै छात्राणां सहयोगः (x) क्रीडाप्रतियोगिता।



1075CH04

चित्रवर्णनम्

यहाँ ध्यातव्य है कि प्रत्येक चित्र के साथ दी गयी मञ्जूषा में प्रदत्त पद छात्रों की सहायता के लिए हैं, किन्तु उनका प्रयोग अनिवार्य नहीं है। छात्र स्वेच्छा से भी वाक्य संरचना कर सकते हैं।

1. अधोलिखितं चित्रं दृष्ट्वा मञ्जूषायां प्रदत्तपदानां सहायतया पञ्चवाक्यानि लिख्यन्ताम्—

मञ्जूषा

अग्रजस्य, अनुजस्य, भगिनी, स्वक्रमस्य, रक्षाबन्धनम्, रक्षासूत्रम्, करोति,
करिष्यति, मणिबन्धे, मिष्टान्म्, अन्यम्, पश्चात्, पश्यति, प्रसन्नः, मातापितरौ,
दृष्ट्वा, प्रसन्नौ, पर्वणः, बन्धति



उदाहरणवाक्यानि

- (i) अत्र रक्षाबन्धनपर्वणः आयोजनं भवति।
- (ii) भगिनी अग्रजस्य मणिबन्धे रक्षासूत्रस्य बन्धनं करोति।
- (iii) तस्याः अनुजः अपि स्वक्रमस्य प्रतीक्षां करोति।
- (iv) अग्रजस्य रक्षाबन्धनं कृत्वा भगिनी अनुजस्य मणिबन्धे अपि रक्षाबन्धनं
करिष्यति।
- (v) मातापितरौ रक्षाबन्धनं दृष्ट्वा मोदेते।

अभ्यासवान् भव — दशमकक्षायाः

- (i)
(ii)
(iii)
(iv)
(v)

2. अधोलिखितं चित्रं दृष्ट्वा मञ्जूषायां प्रदत्तपदानां सहायतया पञ्च वाक्यानि लिख्यन्ताम्—

मञ्जूषा

उदग्रविमानम्, सैनिकः, भोजनपुटकानि, जलौघपीडिताः, वृद्धस्य, लम्बितसोपाने, आरोहयति, पातयन्ति, सहायताम्, छदिषु, उत्थापयन्ति



- (i)
(ii)
(iii)
(iv)
(v)

3. अधोलिखितं चित्रं दृष्ट्वा मञ्जूषायां प्रदत्तपदानां सहायतया पञ्चवाक्यानि लिख्यन्ताम्—

मञ्जूषा

पलायितौ, धृत्वा, कुर्वन्ति, देशरक्षकेभ्यः, सैनिकाः, नमः, अन्ताराष्ट्रियसीमायाः, अवैधप्रवेशम्, प्रहरिणः, भुशुण्डं, परितः, पर्वताः, दृष्ट्वा, आतङ्कवादिनौ, देशरक्षकान्, सन्नद्धाः



- (i)
- (ii)
- (iii)
- (iv)
- (v)

अभ्यासवान् भव — दशमकक्षायाः

4. अधोलिखितं चित्रं दृष्ट्वा मञ्जूषायां प्रदत्तपदानां सहायतया पञ्चवाक्यानि लिख्यन्ताम्—

मञ्जूषा

चिकित्सकाः, परिचारिकाः, उपवाहनानि, क्रेन्यानेन, भीषणदर्घटनायाः, रेलयानस्य, पतितानि, दुर्घटनायां, ब्रणितम्, विपत्तौ, आवश्यकता



- (i)
- (ii)
- (iii)
- (iv)
- (v)

5. અધોલિખિતં ચિત્રં દૃષ્ટા મજૂષાયાં પ્રદત્તપદાનાં સહાયતયા પઞ્ચ વાક્યાનિ
લિખ્યન્તામ्—

મજૂષા

યાતાયાતસ્ય, શિરસ્ત્રાણસ્ય, દણદશુલ્કમ्, પ્રાપ્તિપત્રમ्, યાતાયાતરક્ષી, સુરક્ષાયૈ,
ધારયિત્વા, નિર્બધમ्, આમન્ત્રણમ्, શુલ્કપ્રાપ્તિપત્રમ्, ભવિતું શક્નોતિ, મુદ્રયતિ,
મોટરસાઇકિલચાલકઃ, આત્મરક્ષાયૈ



- (i)
- (ii)
- (iii)
- (iv)
- (v)

अभ्यासवान् भव — दशमकक्षायाः

6. अथोलिखितं चित्रं दृष्ट्वा मञ्जूषायां प्रदत्तपदानां सहायतया पञ्च वाक्यानि लिख्यन्ताम्—

मञ्जूषा

वृक्षेषु, मण्डूकः, तिसः, जलगर्तस्य, नृत्यति, इन्द्रधनुषः, दोलाभिः, टर्ट-टर्ट इति शब्दम्,
श्रावणमासस्य, वर्षायाः, अनुभवन्ति, कुर्वन्ति

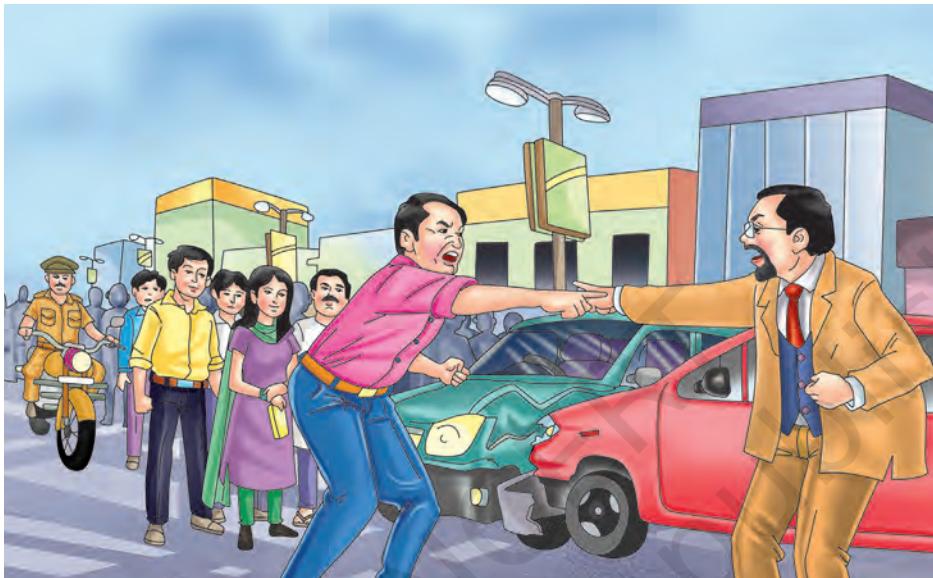


- (i)
- (ii)
- (iii)
- (iv)
- (v)

7. અધોલિખિતં ચિત્રં દૃષ્ટ્વા મજૂષાયાં પ્રદત્તપદાનાં સહાયતયા પઞ્ચ વાક્યાનિ
લિખ્યન્તામ्—

મજૂષા

કારયાનયો:, આક્રોશપૂર્વકમ्, ક્રુદ્ધૌ, દોષારોપણમ्, આરક્ષી, ક્ષતિગ્રસ્તે, કારયાને,
ક્ષમાભાવસ્ય, આવશ્યકતા, ધૈર્યસ્ય, દર્ઘટનાયાઃ, વિચાર્ય



- (i)
- (ii)
- (iii)
- (iv)
- (v)

अभ्यासवान् भव — दशमकक्षाया:

8. अधोलिखितं चित्रं दृष्ट्वा मञ्जूषायां प्रदत्तपदानां सहायतया पञ्च वाक्यानि लिख्यन्ताम्—

मञ्जूषा

आपणम्, स्वास्थ्यवर्धनम्, फलविक्रेता, भक्षणम्, कदलीफलानि, द्राक्षा, मधुकर्कटिका, अमृतफलम्, नारिकेलानि, जम्बूफलानि, ग्राहकाय, तोलयति



- (i)
- (ii)
- (iii)
- (iv)
- (v)

9. अधोलिखितं चित्रं दृष्ट्वा मञ्जूषायां प्रदत्तपदानां सहायतया पञ्च वाक्यानि लिख्यन्ताम्—

मञ्जूषा

धावन-प्रतियोगिता, सप्त बालिकाः, प्रशिक्षकः, सीटिकारवं कर्तुं, तत्पराः, विजेतृमञ्चम् तिस्रः, प्रथमस्थाने, तृतीयस्थानम्, स्वास्थ्यवर्धकम्

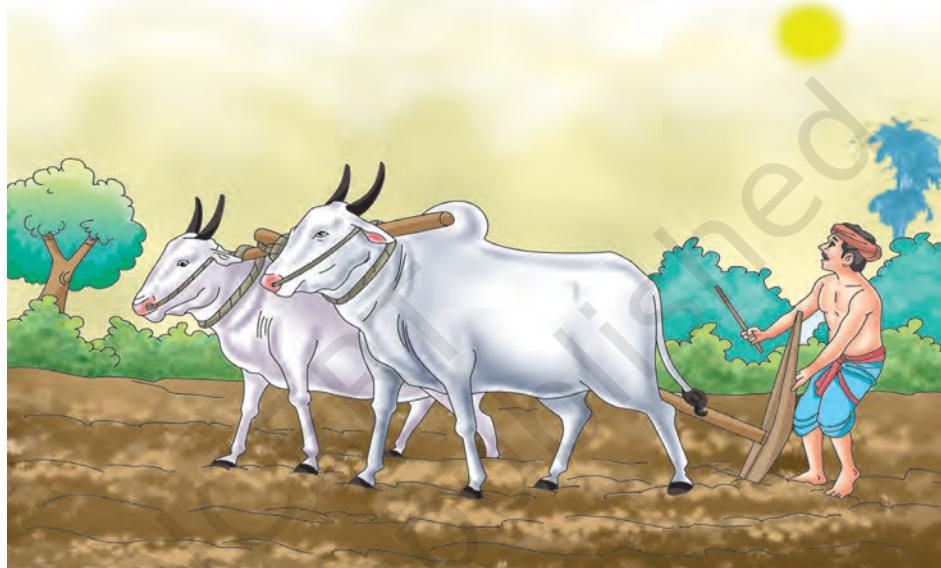


- (i)
- (ii)
- (iii)
- (iv)
- (v)

10. अथोलिखितं चित्रं दृष्ट्वा मञ्जूषायां प्रदत्तपदानां सहायतया पञ्च वाक्यानि
लिख्यन्ताम्—

मञ्जूषा

कृषकः, वृषभौ, स्वेदपूर्णम्, परिश्रमकारणात्, अन्नदाता, मेघानां प्रतीक्षाम्,
सूर्यातपे, चालयति, कर्षतः, अन्नोत्पादने, हलम्, योगदानम्



- (i)
- (ii)
- (iii)
- (iv)
- (v)



रचनानुवादः (वाक्यरचनाकौशलम्)

1. अधोलिखितानि वाक्यानि ध्यानेन पठन्तु-

एकः राजा आसीत्। सः याचकेभ्यः धनं ददाति स्म। तेन सह राजी अपि दानं यच्छति स्म। ततः परं सा रथेन राजभवनं गच्छति। नृपस्य पुत्रः विद्वान् न आसीत्। सः पुत्रं गुरुकुलं प्रैषयत्। गुरुकुले सः आचार्यात् अध्ययनम् अकरोत्। प्रसन्नः राजा आचार्यम् अकथयत्—“भो आचार्य! अहम् कृतज्ञः अस्मि”।

अधुना वाक्याधारितानि प्रश्नोत्तराणि ध्यानेन पठन्तु—

प्रश्नः

उत्तरम्

- (i) एकः कः आसीत्?
- (ii) सः कं गुरुकुलं प्रैषयत्?
- (iii) सा केन राजभवनं गच्छति स्म?
- (iv) सः केभ्यः धनं ददाति स्म?
- (v) सः कस्मात् अध्ययनं करोति स्म?
- (vi) कस्य पुत्रः विद्वान् न आसीत्?
- (vii) सः कुत्र अध्ययनं करोति स्म?
- (viii) राजा आचार्यं कथं सम्बोधयति?

राजा

पुत्रम्

रथेन

याचकेभ्यः

आचार्यात्

नृपस्य

गुरुकुले

भो आचार्य!

- ☞ अत्र वयं पश्यामः— प्रथमे वाक्ये ‘राजा’ इति पदं कर्ता अस्ति। यः क्रियां सम्पादयति सः कर्ता। कर्तरि च प्रथमा विभक्तिः प्रयुज्यते अतः ‘राजा’ इति पदे प्रथमा विभक्तिः अस्ति।
- ☞ द्वितीये प्रश्नोत्तरे ‘पुत्रम्’ कर्मकारकम् अस्ति। क्रियायाः फलं यस्मिन् पतति तत् कर्मसंज्ञकं भवति। ‘कर्मणि द्वितीया’ सूत्रानुसारेण ‘पुत्रम्’ इति पदे द्वितीया विभक्तिः प्रयुक्ता।
- ☞ तृतीये प्रश्नोत्तरे ‘रथेन’ इति पदे रथस्य साधनत्वात् करणार्थे तृतीया विभक्तिः प्रयुक्ता यतः ‘साधकतमं करणम्’ करणे च तृतीया विभक्तिः भवति।
- ☞ चतुर्थे प्रश्नोत्तरे ‘याचकेभ्यः’ पदे चतुर्थी विभक्तिः अस्ति। यस्मै किमपि दीयते क्रियते वा तत् सम्प्रदानम् भवति। सम्प्रदाने च चतुर्थी विभक्तिः भवति।

- ७ पञ्चमे प्रश्नोत्तरे ‘आचार्यात्’ इति पदे पञ्चमी-विभक्तेः प्रयोगः वर्तते। यस्माद् अधीते, गृह्णते पृथक्क्रियते वा अपादानं भवति। अपादाने पञ्चमी-विभक्तिः प्रयुज्यते।
- ८ षष्ठे प्रश्नोत्तरे ‘नृपस्य’ इति पदं पुत्रेण सह सम्बन्धं ज्ञापयति। सम्बन्धे च षष्ठी विभक्तिः भवति अतः ‘नृपस्य’ पदे षष्ठी विभक्तिः प्रयुक्ता।
- ९ सप्तमे प्रश्नोत्तरे ‘गुरुकुलम्’ अध्ययनकार्यस्य आधारः अस्ति। ‘आधारोऽधिकरणम्’ इत्यनेन आधारस्य अधिकरण-संज्ञा भवति अधिकरणे च सप्तमी-विभक्तिः प्रयुज्यते अत एव ‘गुरुकुले’ इति पदे सप्तम्याः विभक्त्याः प्रयोगः वर्तते।
- १० अष्टमे प्रश्नोत्तरे नृपः आचार्य ‘भो आचार्य!’ इति सम्बोधयति। सम्बोधने अपि प्रथमा विभक्तिः एव प्रयुज्यते।

संक्षिप्तरूपेण इदं ध्यातव्यम्

विभक्तिः	कारकम्
प्रथमा	कर्ता
द्वितीया	कर्म
तृतीया	करणम्
चतुर्थी	सम्प्रदानम्
पञ्चमी	अपादान
षष्ठी	सम्बन्धः
सप्तमी	अधिकरणम्
सम्बोधनम्	सम्बोधनम्

2. अनुवाद-प्रक्रियायां विभक्ति-प्रयोगार्थम् एतदपि स्मरणीयम्।

- | | |
|----------|---|
| द्वितीया | अभितः, परितः, सर्वतः, उभयतः, समया, निकषा, हा, प्रति, धिक्, उपरि, अधः, विना, अन्तरा, अन्तरेण, ✓गम्, ✓रक्ष् योगे |
| तृतीया | सह, समम्, साकम्, सार्धम्, सदृशम्, समः, अलम्, विना योगे अङ्गविकारे च। |
| चतुर्थी | ✓दा, ✓रुच्, ✓क्रुध्, ✓कुप्, ✓द्रुह्, ✓स्पृह्, ✓असूय्, ईर्ष्, नमः, स्वस्ति, स्वाहा योगे |
| पञ्चमी | ✓भी, ✓त्रा, ✓त्रस्, क्रते, प्रभृति, पृथक्, आरभ्य, दूरम्, बहिः, अनन्तरम्, पूर्वम्, प्राक्-योगे, द्वयोः निर्धारणे |
| षष्ठी | कृते, हेतुः, समक्षम्, मध्ये, अन्तः, दूरम्, अनादरम्, अधः, उपरि, पुरः, निर्धारणे |
| सप्तमी | ✓स्निह्, वि✓श्वस्, प्रवीणः, कुशलः, चतुरः, निर्धारणे, सति सप्तमी |

3. एतानि वाक्यानि पठन्तु—

पठति	एक बालक पढ़ रहा है।
विकसतः	पुष्टे
कूदन्ते	बन्दर वृक्ष पर कूद रहे हैं।
पतन्ति	पत्राणि

ध्यातव्यम्—

- (क) उपरिप्रदत्तानि स्थूलपदानि कर्तृपदानि सन्ति।
- (ख) कर्तृपदेषु प्रथमा विभक्तिः प्रयुक्ता।
- (ग) क्रियापदस्य अन्वितिः कर्तृपदैः सदैव भवति।

4. अधुना एतानि वाक्यानि पठत—

एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
बालः गच्छति।	बालौ गच्छतः।	बालाः गच्छन्ति।
कन्या गच्छति।	कन्ये गच्छतः।	कन्याः गच्छन्ति।
त्वं गच्छसि।	युवाम् गच्छथः।	यूयं गच्छथा।
अहं गच्छामि।	आवां गच्छावः।	वयं गच्छामः।

अत्र वयं पश्यामः यत् लिङ्गपरिवर्तनेन क्रियापदेषु किमपि परिवर्तनं न भवति परन्तु वचन-परिवर्तनेन पुरुषपरिवर्तनेन च क्रियापदानि परिवर्तितानि भवन्ति।

अभ्यासवान् भव — दशमकक्षायाः

संस्कृते क्रियायाः मूलरूपं धातुः भवति। धातोः प्रयोगः दशलकारेषु भवति। तेषु प्रमुखाः—
पञ्चलकाराः अधोनिर्दिष्टाः सन्ति, अवशिष्टाः पञ्चलकाराः छात्रैः अन्वेषणीयाः—

लट् लकारः — वर्तमानकाले
लृट् लकारः — भविष्यत्काले
लङ् लकारः — भूतकाले
लोट् लकारः — आज्ञार्थे आदेशादि-अर्थे
विधिलिङ् लकारः — विध्यर्थे सम्भावनादि-अर्थे

प्रत्येकं लकारे त्रयः पुरुषाः (प्रथमः, मध्यमः, उत्तमः च) त्रीणि च वचनानि (एकवचनम्,
द्विवचनम्, बहुवचनञ्च भवन्ति।

5. अधुना वाक्यरचनाम् अवगच्छामः—

- अद्यत्वे त्वं कुत्र वससि? — आजकल तुम कहाँ रहते हो?
Where do you stay now a days?
- अस्माकं विद्यालये वार्षिकोत्सवः अस्ति। — हमारे विद्यालय में वार्षिकोत्सव है।
There is annual function in our school.
- भवतः लेखः उत्तमः आसीत्। — आपका लेख उत्तम था।
Your essay was the best.
- त्वं गृहकार्यं कदा करिष्यसि? — तुम अपना गृहकार्य कब करोगे?
When will you do your homework?
- परिश्रमी सदैव सफलः भवति। — परिश्रमी सदैव सफल होता है।
Labourious people always succeed.
- गङ्गायाः जलं पवित्रं भवति। — गंगा का जल पवित्र होता है।
The water of Ganga is pure.
- विद्या विना जीवनं व्यर्थम्। — विद्या के बिना जीवन व्यर्थ है।
Life is futile without knowledge.
- भो छात्राः! सदैव सत्यं वदता। — हे छात्रो! सदा सत्य बोलो।
Dear students! Always speak the truth.

महाकवि: कालिदासः
सप्तग्रन्थान् अरचयत्

— महाकवि कालिदास ने सात ग्रन्थों की
रचना की।

*The great poet Kalidas wrote seven
granthas (books).*

वयं वृद्धजनानां सम्मानं कुर्याम। — हमें वृद्धजनों का सम्मान करना चाहिए।

We should respect the elderly people.

अभ्यासः

1. अधोलिखितवाक्यानां संस्कृतभाषया अनुवादं कुरुत—

- (i) छात्रों को ध्यान से कार्य करना चाहिए।
- (ii) वृक्ष पर पक्षी चहचहाते हैं।
- (iii) हम सब मिलकर गाएंगे।
- (iv) खिलाड़ी फुटबॉल से खेल रहे हैं।
- (v) अध्यापक ने कहा— “सदाचार का
पालन करो।”
- (vi) कृषक गाँव की ओर गए।
- (vii) तुम दोनों खीर खाओ।
- (viii) विद्यालय के दोनों ओर वृक्ष हैं।
- (ix) माता बालक को दूध देती हैं।
- (x) हमें स्वास्थ्य के नियमों का पालन
करना चाहिए।
- (xi) कल राघव कहाँ था?
- (xii) मेरे पिता भोजन पकाते हैं।
- (xiii) मेरे पास आकर बैठो।
- (xiv) उन सबको दीवाली उत्सव अच्छा
लगता है।
- (xv) ईश्वर को नमस्कार।
- (xvi) घर के बाहर कौन है?
- (xvii) भवन के ऊपर कौए बैठे हैं।

अभ्यासवान् भव — दशमकक्षायाः

- (xviii) मैंने ऐसा नहीं कहा।
 (xix) कक्षा में कितने छात्र हैं?
 (xx) तुम बाज़ार से दही लाओ।

2. प्रत्ययाधारिता वाक्य-संरचना

गुरुं सेवमानेन छात्रेण या विद्या अर्जिता सा पूर्णजीवने तस्य सहायिका भूतवती।
 जीवने ज्ञानमेव सर्वथा प्राप्तव्यम् यतः ज्ञानं विना न कोऽपि पूजनीयः।
 अत्र स्थूलाक्षरपदानि प्रत्यय-युक्तानि सन्ति।
 वाक्येषु प्रत्यय-प्रयोगार्थम् एते बिन्दवः ध्यातव्याः।

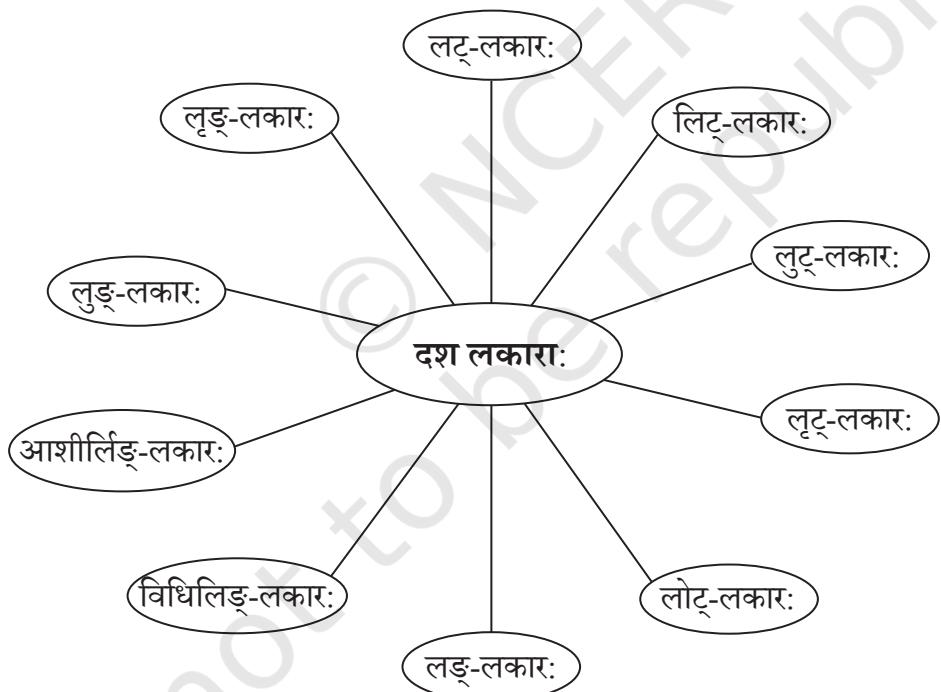
- * शत्-प्रत्ययस्य प्रयोगः परस्मैपदिधातुभिः सह भवति। शानच् प्रत्ययस्य प्रयोगः आत्मनेपदिधातुभिः सह भवति। आभ्यां प्रत्ययाभ्यां निर्मितपदानां प्रयोगः विशेषणरूपेण भवति।
- * क्त-क्तवतु-प्रत्यययोः प्रयोगः भूतकालार्थे क्रियते। क्त-प्रत्ययस्य प्रयोगः कर्मवाच्ये भाववाच्ये च भवति। क्तवतु-प्रत्ययस्य प्रयोगः कर्तृवाच्ये एव भवति।
- * तव्यत्-अनीयर्-प्रत्यययोः प्रयोगः विधिलिङ्गलकारस्य अर्थे भवति। एताभ्यां प्रत्ययाभ्यां निर्मितपदानां प्रयोगः क्रियारूपेण विशेषणरूपेण च भवति।
 - भवन्तः एतेषां प्रत्ययानां विशिष्ट-अध्ययनम् अग्रिमेषु अध्यायेषु करिष्यन्ति।

एतानि वाक्यानि पठत —

1.	मित्र की सहायता करनी चाहिए।	मित्रस्य सहायता कर्तव्या।	<i>A friend should be helped.</i>
2.	उसने क्या कहा?	सः किम् उक्तवान्?	<i>What did he say?</i>
3.	मैंने उसे धन दिया।	मया तस्मै धनं दत्तम्।	<i>I gave him money.</i>
4.	कार्य करते हुए ही सब साध लेते हैं।	कार्यं कुर्वन्तः एव सर्वं साधयामः।	<i>Everything is achieved by doing practice.</i>
5.	यह चलचित्र भूलने योग्य नहीं है।	इदं चलचित्रम् अविस्मरणीयम् न अस्ति।	<i>This movie is unforgettable.</i>
6.	बढ़ता हुआ चन्द्रमा पूर्णता को पाता है।	वर्धमानः चन्द्रः पूर्णतां याति।	<i>The rising moon attains completion.</i>

3. एतेषां वाक्यानां संस्कृतभाषया अनुवादं कुरुत —

- (i) उसने पत्र लिखा। —
- (ii) खाते हुए नहीं बोलना चाहिए। —
- (iii) उस कन्या ने पुस्तक पढ़ी। —
- (iv) तुम्हें भी पुस्तक पढ़नी चाहिए। —
- (v) वह फल लेकर घर आई। —
- (vi) तुमने ऐसा नहीं सोचा। —
- (vii) पुस्तक पाता हुआ छात्र प्रसन्न होता है। —
- (viii) जाते हुए बालक को देखो। —
- (ix) शिमला नगर देखने योग्य है। —
- (x) खाने योग्य भोजन ही खाना चाहिए। —





1075CH06

6

सन्धिः

शिक्षकः — (कक्षां प्रविश्य) नीरजादित्योमेशौजसा:, किं भवद्धिः कार्यं कृतं न वा?

(सर्वे छात्राः विस्मयेन इतस्ततः दृष्ट्वा शिक्षकं पश्यन्ति।)

शिक्षकः — किं जातम्? नीरज! आदित्य! उमेश! औजस! युष्मान् एव पृच्छामि।

नीरजः — (आश्चर्येण) गुरुवर! भवद्धिः अस्माकं सर्वेषां नामानि कथं संयोजितानि ?

शिक्षकः — सन्धिमाध्यमेन।

उमेशः — किमेवम्? कृपया विस्तरेण बोधयतु।

शिक्षकः — बोधयामि, बोधयामि, धैर्यवन्तः भवन्तु। प्रथमं ह्यस्तनं कार्यं तु दर्शयित।

(सर्वे छात्राः शीघ्रतया कार्यं दर्शयन्ति।)

आदित्यः — महोदय! कार्यं सर्वैः कृतमस्ति। अधुना कृपया बोधयत।

शिक्षकः — नवमकक्षायां सन्धिविषये पठितम् आसीत्। किं स्मर्यते?

औजसः — आम् आम् स्मरामः वयम्। अस्तु-‘नीरज+आदित्य’ इति नीरजादित्य-
अत्र दीर्घ-सन्धिः कृतः भवद्धिः।

उमेशः — आम् आम् स्मर्यते मयाऽपि नीरजादित्य+उमेश एवं तु दीर्घसन्धेः
अनन्तरं गुणसन्धिः कृतः भवता।

आदित्यः — स्पष्टम्। पुनः वृद्धि-सन्धिः कृतः नीरजादित्योमेशौजसाः इति।

शिक्षकः — शोभनम्। अतीव शोभनम्। एवमेव प्रयोगेण पठितांशान् अवगन्तुं पारयामः।

अदितिः — गुरुवर! अत एव मम नाम्ना सह दीप्तेः नामयोजनेन ‘दीप्त्यदिती’ इति यण्
सन्धेः नियमानुसारमेव भवता आकार्यते प्रायशः।

शिक्षकः — आम् सम्यगवगतम्। अधुना अभ्यासेन एतान् चतुरः भेदान् पुनरावर्त्य स्वरसन्धेः नवीनान् भेदान् पठिष्यामः।

अधोलिखितात् अनुच्छेदात् दीर्घ-गुण-यण् वृद्धि-सन्धीनाम् उदाहरणानि चित्वा लिखत —

जानामि+अहम् यत् जलोपलवेन +
 पीडितः रमा+ईशः वृक्षारुढः + अभवत्।
 लीलया+एव सर्वमसहता तदा सः साधु+उपदेशम्
 स्मृतवान् यत् कदापि धैर्यं न त्याज्यम्। स्थितेः सामान्ये जाते सः महा+औत्सुक्येन
 गृहं गतवान् अचिन्तयत् च सर्वं खल्विदम् +
 ब्रह्म। तदा मोहनः सोहनः च द्वौ+अपि रमेशस्य गृहमागच्छतः। सर्वेऽपि ..
 + एकत्रीभूय भोजनं पचन्ति।

(सर्वे छात्राः एकैकं कृत्वा सर्वेषाम् उदाहरणानाम् समाधानं कुर्वन्ति तदा एकः छात्रः वदति।)

आदित्यः — गुरुवर! अन्तिमौ द्वौ तु स्पष्टौ न भवतः।

शिक्षकः — अस्तु, अवबोधयामि एकैकं कृत्वा।

यथा — द्वौ+अपि — द्वावपि गृहमागच्छतः।

एवमेव

- (i) द्वौ+एते — पठतः।
- (ii) तौ+अत्र — लिखतः।
- (iii) पो+अनः — पवनः मन्दं मन्दं वहति।
- (iv) पौ+अकः — सर्वं दहति।
- (v) भावुकः — — + न भवेत्।
- (vi) ने+अनम् — नयनम् उद्घाट्य एव मार्गं चलत।
- (vii) शे+अनम् — रात्रौ एव करणीयम्।
- (viii) + चयनम् कृत्वा एव खाद्याखाद्यं खादनीयम्।
- (ix) गै+अकः — गायकः मधुरं गायति।
- (x) नै+अकः — सुन्दरं नृत्यति।
- (xi) शायिकाः — + रेलयानेषु भवन्ति।

‘एचोऽयवायावः’, इति नियमानुसारम् ए, ऐ, ओ, औ-इत्येतेषां स्वराणां परतः कस्मिंश्चिदपि स्वरे आगते एतेषां चतुर्णा स्थाने क्रमशः अय्, आय्, अव्, आव् च भवन्ति। एते ‘अयादिचतुष्टयम्’ इति नाम्नाऽपि ज्ञायन्ते।

छात्राः — अवगतः अस्माभिः अयादिसन्धिः ।

शिक्षकः — पठिते अनुच्छेदे अन्तिमं वाक्यमासीत् - सर्वेऽपि (सर्वे+अपि) एकत्रीभूय भोजनं पचन्ति। एतत् पूर्वरूपसन्धेः उदाहरणम् अस्ति ।

एवमेव अन्यानि उदाहरणानि पश्यन्तु—

(i) अन्येऽपि —+..... जनाः भोजनं खादन्ति ।

(ii) सर्वेऽत्र —+..... उपविशन्ति ।

(iii) विष्णोऽवतु — विष्णो+अवतु माम्

(iv) शिशोऽपि —+..... कुशली त्वम् ।

(v) साधोऽत्र —+..... भोजनं कुरु ।

‘एङः पदान्तादति’, इति सूत्रानुसारं पदान्तयोः ए, ओ इत्येतयोः परतः यदि अकारः आगच्छेत् तर्हि द्वयोः स्थाने पूर्वरूपम् अर्थात् ‘ए, ओ’ एव भवति। अकारश्च इति अवग्रहस्य चिह्नेन दर्शयते । एषः भेदः ‘पूर्वरूपसन्धिः’ इति कथ्यते ।

छात्राः — पूर्वरूपसन्धिरपि स्पष्टः। किं कोऽप्यन्यः भेदः भवति स्वरसन्धेः ।

शिक्षकः — आम्, प्रकृतिभावः परस्परं च एतौ द्वौ अन्यौ भेदौ अपि स्तः । परं

दशमकक्षायां केवलं षड्भेदाः । अधुना एतेषां पुनरभ्यासं कुर्मः

येन स्वरसन्धिः पूर्णतया हृदयंगमः भवेत् ।

अभ्यासः

1. अथः प्रदत्तवाक्येषु सन्धिम्/सन्धिविच्छेदं वा कृत्वा लिखत—

(i) वानराः सर्वत्र वृक्षे+अपि कूर्दन्ते ।

(ii) के+अत्र विद्यालयम् आगत्य कक्षां न आगताः ।

(iii) हे शिशोऽत्र+..... आगत्य उपविश ।

- (iv) ते पठन्ति, तावपि + पठतः ।
- (v) यथा+उचितं कार्यं करणीयम् ।
- (vi) एतत् पुस्तकं तु तवैवास्ति + + ।
- (vii) साधूपूरि + गच्छतः ।
- (viii) कवि+इन्द्रः नवीनां कवितां श्रावयति ।
- (ix) कस्मिन्नपि अत्याचारः + तु न करणीयः ।
- (x) भानो+ए जलार्पणं करणीयम् ।

शिक्षकः — छात्राः! ह्यः अस्माभिः स्वरसन्धिः सम्यगवगतः । अद्य व्यञ्जनसन्धिं
विसर्गसन्धिं चावबोधयामि।

छात्राः — (समवेत्स्वरेण) आम् श्रीमन्! वयमपि सन्धेः अन्यान् भेदान् अवगन्तुम्
इच्छामः।

(अध्यापकः श्यामपट्टसहायतया पाठयति।)

(छात्राश्च स्वपुस्तिकासु लिखन्ति।)

व्यञ्जन-सन्धिः

1. उदाहरणमनुसृत्य सन्धिं सन्धिविच्छेदं वा कुरुत—

- (क) चलत् + अनिशम् = चलदनिशम् एव उन्नति करोति ।
 - (i) एतस्मादेव = + पाठात् त्वं पठ ।
 - (ii) जगत् + ईशः = सर्वत्र विद्यमानः ।
 - (iii) यस्य शब्दस्य अन्ते स्वरः सः शब्दः अजन्तः = +
कथ्यते ।
 - (iv) शब्दरूपं सुप् + अन्तम् = कथ्यते, धातुरूपं तिङ्न्तम् ।

वर्गस्य प्रथमः वर्णः+ वर्गस्य तृतीयः, चतुर्थः वर्णः, स्वरः, य्, र्, ल्, व् वर्णाः



प्रथमवर्णस्य स्थाने तृतीयः वर्णः (परिवर्तनम्)

अभ्यासवान् भव — दशमकक्षाया:

(ख) अस्मात् + नगरात् = अस्मान्नगरात् ग्रामः अतिदूः ।

(i) सम्यक् + नेता = एव राष्ट्रोन्नत्यै प्रयतते ।

(ii) किन्तु = + खल्विदं लिखितम् ।

(iii) सः प्रत्यक् + आत्मा = भूत्वा परोपकारं करोति ।

(iv) दिङ्ग्नागः = + ‘कुन्दमाला’ इत्यस्य लेखकः ।

(v) वर्षस्य षण्मासाः = + व्यतीताः ।

(ग) सः कदाचित् ध्यानेन शृणोति कदाचित् + च = कदाचिच्च न ।

(i) शरत् + चन्द्रः = मम मित्रस्य नाम ।

(ii) मनुष्यः ज्ञानेन सफलं कुर्याज्जीवितम् = + ।

(iii) मनस् + चञ्चलम् = हि भवति

(iv) हरिश्शोते = + वैकुण्ठे ।

स्, तवर्ग + श्, चवर्ग

↓
↓

श्, चवर्ग (परिवर्तनम्)

(घ) धनुस् + टङ्कारः = धनुष्टङ्कारः तु युद्धस्य संकेतः ।

(i) प्रथमपंक्त्याः बालस् + षष्ठः = पाठं पठेत् ।

(ii) रामायणं वाल्मीकिना लिखितम्, तटीका = + च केन लिखिता?

(iii) मह्यम् पक्षिणाम् उत् + डयनम् = अतीव रोचते ।

(iv) टीकां तु लेखकष्टीकते = ।

स्, तवर्ग + ष्, टवर्ग

↓
↓

ष्, टवर्ग (परिवर्तनम्)

(ङ) अतिथे: सद् + कारः = सत्कारः करणीयः।

(i) परिश्रमी छात्रः एव परीक्षायां सफलतां लभ् + स्यते =।

(ii) दिक्पालः = + कः भवति?

$\frac{\text{वर्गस्य द्वितीयः तृतीयः चतुर्थः वर्णः} + \text{वर्गस्य प्रथमः, द्वितीयः वर्णः, श्, ष्, स्}}{\downarrow}$
 स्ववर्गस्य तृतीयः वर्णः भवति। (परिवर्तनम्)

(च) अ. हरिम् + वन्दे = हरिं वन्दे जगद्गुरुम्।

(i) अहम् + पुनः = पाठं पठिष्यामि।

(ii) अपूर्वः खलु = + आसीत् नाटके नायकस्य अभिनयः।

(iii) त्वं माम् = + आकारयसि किम्?

(iv) श्रेष्ठम् + कर्म = एव कर्तव्यम्।

$\frac{\text{पदान्त म्} + \text{व्यञ्जनवर्णः}}{\downarrow}$

अनुस्वारः (·) (परिवर्तनम्)

(छ) आ. अति सम् + चयः = सञ्चयः न कर्तव्यः।

(i) शीतकाले शैत्यं कम्पनम् + च = अप्यनुभूयते।

(ii) शीतकाले रात्रौ सञ्चरणम् = + दुष्करम्।

(iii) भुजनगरम् + तु = गुजरातराज्ये अस्ति।

(iv) त्वं किमर्थं कुम् + ठितः = असि?

$\frac{\text{म्/ अनुस्वारः} + \text{वर्गीय- व्यञ्जनम्}}{\downarrow}$

परवर्ति-वर्गस्य पञ्चमः- (परिवर्तनम्)

विसर्ग-सन्धिः

1. उदाहरणमनुसृत्य सन्धिं सन्धिविच्छेदं वा कुरुत —

(क) हे मित्र! नमः + ते = नमस्ते ।

(i) शत्रोः अपि शिरः + छेदः = शिरश्छेदः न करणीयः ।

(ii) कठिना परिस्थितिः दारुणः + च = कालः ।

(iii) तुरड्गाः + तुरड्गैः = सह धावन्ति ।

(iv) धनुष्टङ्कारः = + श्रूयते ।

(v) सः कठिनं तपस्तेपे = + ।

विसर्ग (:) + श्, च्, छ्

श् (परिवर्तनम्)

विसर्ग + स्, त्, थ्

स् (परिवर्तनम्)

विसर्ग + ष्, ट्, ठ्

ष् (परिवर्तनम्)

(ख) रामः वनमगच्छत् लक्ष्मणः + अपि = लक्ष्मणोऽपि तेन सह अगच्छत् ।

(i) निर्धनः + जनः = निर्धनो जनः धनाभावे सदा दुःखितः भवति ।

(ii) चौरः + अयम् = मम स्यूतं चोरितवान् ।

(iii) एकस्मिन् वने व्याघ्रः + नष्टः = अभवत् ।

(iv) पण्डितो जनः = + विद्वान् भवति ।

(v) सः पठति ततोऽसौ = + लिखति ।

(vi) तस्य मनोरथः = + सिध्यति ।

(ग) वने वह्निः + दह्यते = वह्निदह्यते पादपान् ।

विसर्ग (:) + अ

उ (गुण ओ) + ऽ (अवग्रहः)

विसर्ग (:) + वर्गस्य तृतीयः, चतुर्थः वर्णः, य्, र्, ल्, व्, ह्

उ (गुण ओ)

- (i) वसन्ते प्रकृतिः + एव = प्रकृतिरेव मनोहारिणी।
- (ii) कन्या पितुः + गृहम् = त्यक्त्वा पतिगृहं गच्छति।
- (iii) नाविकः = + नौकां चालयति।
- (iv) नाटककारः कविरपि = + च काव्यं कुरुतः।
- (v) अहं पदातिरेव = + विद्यालयम्
आगच्छामि।

अ, आ भिन्नस्वरात् परः विसर्गः + स्वरः, वर्गस्य तृतीयः, चतुर्थः पञ्चमो
वा वर्णः स्यात्

↓
र्(परिवर्तनम्)

- (ष) ध्यानेन न पठसि अतः + एव = अत एव उत्तमाङ्गकान् न प्राप्नोषि।
- (i) आकाशे = + कपोता उत्पतन्ति।
- (ii) अर्जुनः + उवाच = अहं युद्धं न करिष्यामि।
- (iii) विद्यालयं बालका आगच्छन्ति + पठन्ति च।
- (iv) बसयानेन स गच्छति = + विद्यालयम्।
- (v) एषः + आगच्छति = कार्यं करोति पठति च।

अनुनासिकसन्धिः

1. अधोलिखितानि वाक्यानि ध्यानेन पठत—

- (क) एतन् शोभनीयम्
- (i) तन् उचितम्।
 - (ii) वाङ्मयं तपः।
 - (iii) तन्मयो भूत्वा कार्यं कुरु।
 - (iv) एतन्मुरारः अस्ति।
 - (v) तन्नाम किमस्ति।

उपरि लिखितानि सर्वाणि उदाहरणानि अनुनासिकसन्धेः सन्ति।

अनुनासिकसन्धौ पूर्वपदस्य अन्तिमः वर्णः यदि वर्गस्य कोऽपि वर्णः भवति, उत्तरपदस्य
प्रथमः वर्णः यदि अनुनासिकवर्णः भवति तदा पूर्वपदस्य अन्तिमवर्णः स्ववर्गस्य
पञ्चमवर्णं परिवर्तितः भवति। यथा —

अभ्यासवान् भव — दशमकक्षायाः

तन्नाम - तत् (त्) + नाम
वर्गस्य प्रथमः वर्णः+वर्णस्य अन्तिमः वर्णः
तदा त् वर्णः स्वर्गस्य अन्तिमे 'न्' इति वर्णे परिवर्तितः भवति ।
एते सर्वे वर्णाः अनुनासिकवर्णाः सन्ति।
यथा- ङ्, ज्, ण्, न्, म्

अभ्यासः

1. अधोलिखितानां सन्धिं सन्धिविच्छेदं वा कुरुत —

- (i) हे ईश्वर! सन्मति यच्छ।
- (ii) हे छात्राः! सत् + मार्गे चलता।
- (iii) प्रलयकाले सर्वत्र अम्मयं भवति।
- (iv) जगन्नाथः सर्वान् रक्षति।
- (v) तन्मात्रम् एव खादा।
- (vi) कक्षायां षट्+नवति: छात्राः सन्ति।
- (vii) सा जगत्+माता इति रूपेण प्रसिद्धा अस्ति।
- (viii) मम सन्मुखे तिष्ठ।
- (ix) दिक्+नागः सर्वान् रक्षति।

तुक् आगम-सन्धिः

2. अधोलिखितानि वाक्यानि पठत —

- (i) ग्रीष्मे जनाः वृक्षच्छायां सेवन्ते।
- (ii) हे छात्राः! एकम् अनुच्छेदं लिखत।
- (iii) पुरा भारते एकच्छत्रं राज्यम् आसीत्।
- (iv) आकाशः मेघैः आच्छन्नः अस्ति।
- (v) सम्बन्ध-विच्छेदः न करणीयः।

- उपरि यानि रेखाङ्कितपदानि सन्ति तानि सर्वाणि 'तुक्' आगम-सन्धेः उदाहरणानि सन्ति ।
- तुक्-आगमः - सन्धौ यदि पूर्वपदे 'अ, इ, उ, ऋ स्वराः भवन्ति उत्तरपदे च 'छ' भवति तदा उभयोः पदयोः मध्ये 'च्' वर्णः आगच्छति।
- परं यदि पूर्वपदे आ, ई ऊ स्वराः भवन्ति तदा 'च्' वर्णस्य आगमः विकल्पेन भवति।
- यथा- लक्ष्मी-छाया = लक्ष्मी छाया/लक्ष्मीच्छाया

3. अधोलिखितानां सन्धिं सन्धिविच्छेदं वा कुरुत —

- (i) शोधच्छात्रः —
- (ii) विच्छेदः —
- (iii) अनु+छेदः —
- (iv) परि+छेदः —
- (v) लक्ष्मीच्छाया —
- (vi) वृक्ष+छाया —
- (vii) तव+छविः —
- (viii) वृक्षच्छेदनम् —
- (ix) छुरिका+ छिन्नः —
- (x) शब्दच्छेदः —



समासः

- श्रुतिः — अहं दिनं दिनं विद्यायाः आलयम् समयम् अनतिक्रम्य गच्छामि।
 अनुकृतिः — अहम् अपि प्रतिदिनं विद्यालयं यथासमयं गच्छामि।
 श्रुतिः — किं त्वं जानासि यद् वसुदेवस्य सुतः: कः आसीत्?
 अनुकृतिः — जानामि। वसुदेवसुतः श्रीकृष्णः आसीत्।
 श्रुतिः — मह्यं पीतः वर्णः रोचते। सः अपि पीतम् अम्बरं धारयति स्मा।
 अनुकृतिः — सत्यं वदसि। सः पीताम्बरं धारयति स्म अतः सः ‘पीताम्बरः’ इति नाम्ना अपि प्रसिद्धः। मया पठितं यत् कृष्णः च बलरामः च यमुनायाः तटे क्रीडतः स्म।

श्रुतिः — मयापि पठितं यत् कृष्णबलरामौ यमुनातटे क्रीडतः स्म।

उपरिलिखितेषु संवादवाक्येषु श्रुतिः यानि वाक्यानि वदति तेषु रेखाङ्कित-पदानि पृथक् पृथक् सन्ति परन्तु अनुकृतिः यानि वाक्यानि वदति तेषु वाक्येषु तानि एव रेखाङ्कित-पदानि समस्तरूपेण (संक्षिप्तरूपेण) योजयित्वा प्रदर्शितानि सन्ति। यथा शब्दानां पृथक्-पृथक् लेखनं ‘विग्रहः’ कथ्यते तथैव समस्तरूपेण (संक्षिप्तरूपेण) वा लेखनं ‘समासः’ इति कथ्यते।

समासानां विभाजनं मुख्यतः चतुर्धा भवति —

1. अव्ययीभावः
2. तत्पुरुषः
3. द्वन्द्वः
4. बहुव्रीहिः

(कर्मधारयः द्विगुः चेति तत्पुरुष-समासस्य एव द्वौ भेदौ स्तः।)

1. अव्ययीभावः

- (क) प्रायः जनाः प्रत्यक्षम् एव सत्यं स्वीकुर्वन्ति।
- (ख) तस्मिन् विद्यालये प्रतिमासं परीक्षाः भवन्ति।
- (ग) छात्राः यथामति अध्ययनं कुर्वन्ति।
- (घ) हरिद्वारे उपगङ्गम् अनेके देवालयाः सन्ति।

उल्लिखितवाक्येषु रेखाङ्कितपदेषु चतसः विशेषताः सन्ति —

- (i) सर्वेषु पदेषु प्रथम्/ पूर्व-पदम् अव्ययम् उपसर्गो वा अस्ति।
- (ii) सर्वाणि पदानि नपुसंकलिङ्गे सन्ति।
- (iii) सर्वेषां पदानां प्रयोगः अव्ययवत् भवति।
- (iv) एतेषु समस्तपदेषु पूर्वपदम् प्रधानम् अस्ति यतो हि वाक्येषु क्रियापदानि प्रथम्/ पूर्व पदस्य अनुसारम् अर्थं बोधयन्ति।

इत्थं वयं जानीमः यत् अव्ययीभावसमासः पूर्वपदप्रधानः भवति। अयं समासः सर्वदा नुपुसंकलिङ्गे तिष्ठति।

एवम् अव्ययीभावसमासां स्पष्टरूपेण विज्ञाय अस्य इतराणि उदाहरणानि द्रष्टव्यानि —

क्रमः	समस्तपदम्	विग्रहः
1.	यथामति	मतिम् अनतिक्रम्य
2.	अनुगुणम्	गुणानाम् अनुरूपम्
3.	निर्बाधम्	बाधानाम् अभावः
4.	अनुरथम्	रथस्य पश्चात्
5.	निर्विघ्नम्	विघ्नानाम् अभावः
6.	प्रतिमासम्	मासं मासम् इति
7.	उपगुरु	गुरोः समीपम्
8.	अधिहरि	हरौ इति
9.	सपरिवारम्	परिवारेण सह
10.	प्रतिदिनम्	दिने दिने इति

अभ्यासः

प्रदत्त-तालिकायां समस्तपदं विग्रहं वा लिखत —

क्रमः	समस्तपदम्	विग्रहः
1.	निर्मलम्
2.	एकम् एकम् इति
3.	दोषाणाम् अभावः
4.	सव्यवधानम्

अभ्यासवान् भव — दशमकक्षायाः

5.	निर्थकम्
6.	चिन्तायाः अभावः
7.	स्नेहेन सहितम्
8.	समयम् अनतिक्रम्य
9.	गङ्गायाः समीपम्
10.	सहर्षम्

2. तत्पुरुषः

- (i) वानराः वृक्षोपरि क्रीडन्ति। (वृक्षस्य उपरि)
- (ii) वनराजः उच्चैः गर्जति। (वनस्य राजा)
- (iii) संन्यासी पदनिर्लिप्तः भवति। (पदाय निर्लिप्तः)
- (iv) रामः शरणागतं विभीषणम् अरक्षत्। (शरणम् आगतम्)
- (v) चिकित्सकः अग्निदग्धस्य उपचारम् अकरोत्। (अग्निना दग्धस्य)

उल्लिखितेषु उदाहरणेषु वर्यं पश्यामः यत्—

- (i) प्रथम/पूर्वपदेषु द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, षष्ठी चेति भिन्न-भिन्नविभक्तीनां प्रयोगः वर्तते।
- (ii) क्रियायाः प्रयोगः द्वितीय/उत्तरपदाय भवति।

अतः यस्मिन् समासे प्रथम/ पूर्वपदेषु द्वितीया विभक्तितः सप्तमी विभक्ति-पर्यन्तं विभिन्नविभक्तीनां प्रयोगः भवति सः समासः तत्पुरुषसमासः भवति।

तत्पुरुषसमासस्य इतराणि उदाहरणानि—

क्रम	समासः	विग्रहः	उपभेदः
1.	ग्रामगतः	ग्रामं गतः	द्वितीया-तत्पुरुषः
2.	पर्वतारूढः	पर्वतम् आरूढः	द्वितीया-तत्पुरुषः
3.	कालिदासलिखितम्	कालिदासेन लिखितम्	तृतीया-तत्पुरुषः
4.	चक्रहतः	चक्रेण हतः	तृतीया-तत्पुरुषः
5.	यज्ञसामग्री	यज्ञाय सामग्री	चतुर्थी-तत्पुरुषः
6.	निद्राकुलः	निद्रया आकुलः	चतुर्थी-तत्पुरुषः
7.	सिंहभीतः	सिंहात् भीतः	पञ्चमी-तत्पुरुषः

8.	आकाशपतितम्	आकाशात् पतितम्*	पञ्चमी-तत्पुरुषः
9.	गृहपतिः	गृहस्य पतिः	षष्ठी-तत्पुरुषः
10.	गौरीशः	गौर्या: ईशः	षष्ठी-तत्पुरुषः
11.	सङ्गीतपटुः	सङ्गीते पटुः	सप्तमी-तत्पुरुषः
12.	चिन्तामनः	चिन्तायां मनः	सप्तमी-तत्पुरुषः
13.	असत्यम्	न सत्यम्	नव्-तत्पुरुषः
14.	अनुपकारः	न उपकारः	नव्-तत्पुरुषः

*आकाशात् पतितं तोयं यथा गच्छति सागरम्। सर्वदेवनमस्कारः केशवं प्रति गच्छति॥

अभ्यासः

अधोलिखितेषु समासं विग्रहं वा कृत्वा लिख्यताम्—

क्रमः	समासः	विग्रहः
1.	न्यायस्य अधीशः
2.	देहविनाशः
3.	न मन्त्रः
4.	अयोग्यः
5.	वृक्षोपरि
6.	निद्राया: भज्जस्य दुःखम्
7.	वनराजः राजा
8.	नराणां पतिः
9.	पक्षिकुलम्
10.	प्रीतेः लक्षणम्
11.	निशान्धकारे
12.	न पक्वम्
13.	मृत्तिकाक्रीडनकम्
14.	वृद्धेः लाभाः
15.	अधर्मः

**कर्मधारयः
(विशेषण-विशेष्यौ)**

- (i) कृष्णसर्पः बिलम् प्राविशत् (कृष्णः च एषः सर्पः/कृष्णः सर्पः)
 - (ii) महादेवी करुणां करोतु (महती च इयं देवी/ महती देवी)
 - (iii) महावृक्षः फलानि ददाति (महान् च अयं वृक्षः/महान् वृक्षः)
- (उपमानोपमेयौ (उपमान+उपमेयौ))
- (i) सिंहपुरुषः/पुरुषसिंहः श्रीरामः रावणं हतवान् (सिंह इव पुरुषः/पुरुषः सिंहः इव)
 - (ii) देव्या: कमलनेत्रे दृष्ट्वा भक्तः प्रसन्नः अभवत् (कमले इव नेत्रे)
 - (iii) तस्याः चन्द्रमुखं दृष्ट्वा सः मोहितः अभवत् (चन्द्रः इव मुखम्)

उल्लिखितेषु वाक्येषु रेखाङ्कितपदेषु विशेषणविशेष्ययोः अथवा उपमानोपमेययोः प्रयोगः अस्ति। एतेषु विशेष्यपदम् अथवा उपमेयपदम् एव प्रधानं भवति। उपमानपदस्य पश्चात् ‘इव’ इति अव्ययस्य प्रयोगेण उपमानोपमेय-कर्मधारयसमासस्य विग्रहः भवति। किन्तु विशेषण-विशेष्ययोः प्रथमा-विभक्त्याः प्रयोगेण समाप्तविग्रहः भवति।

अभ्यासः

1. समस्तपदं विग्रहं वा लिखत—

क्रमः	समस्तपदम्	विग्रहः
1.	महान् वृक्षः
2.	पुरुषव्याघ्रः
3.	महत् कम्पनम्
4.	महाविनाशः
5.	रक्तम् उत्पलम्
6.	पीतपुष्पाणि
7.	घन इव श्यामः
8.	महोत्सवः
9.	विशालः पर्वतः
10.	महागौरी

द्विगु-समासः

- (i) जगत्पालकः त्रिलोकं रक्षति।
- (ii) नवरात्रे सः सप्तशतीं पठति।
- (iii) दानस्य महत्वं चतुर्युगं यावद् भवति।
- (iv) दण्डकारण्ये पञ्चवटीं इति स्थाने श्रीरामः सीतया लक्ष्मणेन च सह अवसत्।
- (v) इयं शताब्दी विज्ञानस्य अस्ति।

उल्लिखितेषु वाक्येषु रेखाङ्कितपदेषु चतस्रः विशेषताः सन्ति —

- (क) एतानि पदानि सङ्ख्याशब्दैः प्रारभन्ते।
- (ख) बहुवचनसङ्ख्याप्रयोगे अपि सर्वेषु पदेषु एकवचनस्य प्रयोगः विद्यते।
- (ग) समस्तपदानि नपुंसकलिङ्गे अथवा स्त्रीलिङ्गे भवन्ति।
- (घ) समस्तपदानि/समूहस्य/समाहारस्य बोधं कारयन्ति।

एतादृशाः समासाः/एतादृशानि समस्तपदानि द्विगुसमासाः कथ्यन्ते।

इत्थं वयं जानीमः यत् द्विगुसमासेषु प्रथमशब्दः सङ्ख्यावाचको भवति। एते समासाः नपुंसकलिङ्गे स्त्रीलिङ्गे वा भवन्ति।

समाहार/समूहकारणात् एतेषां समासानां विग्रहः एवं भवति —

क्रमः	समस्तपदम्	विग्रहः
1.	नवरात्रम्	नवानां रात्रीणां समाहारः
2.	पञ्चवटी	पञ्चानां वटानां समाहारः
3.	चतुर्युगम्/चतुर्युगी	चतुर्णा युगानां समाहारः
4.	त्रिलोकम्/त्रिलोकी	त्रयाणां लोकानां समाहारः
5.	शताब्दम्/शताब्दी	शतस्य अब्दानां समाहारः

अधोलिखित-तालिकायाम् समस्तपदं विग्रहं वा लिखत —

क्रमः	समस्तपदानि	विग्रहः
1.	सप्तानाम् अहां समाहारः
2.	पञ्चानां पात्राणां समाहारः
3.	त्रयाणां भुवनानां समाहारः
4.	पञ्चरात्रम्
5.	अष्टाध्यायी

3. द्वन्द्व-समासः

(i) इतरेतरद्वन्द्वः

- (i) दशरथस्य चत्वारः पुत्राः रामलक्ष्मणभरतशत्रुघ्नाः आसन्। (रामः च लक्ष्मणः च भरतः च शत्रुघ्नः च)
- (ii) रामलक्ष्मणौ मिथिलाम् अगच्छताम् (रामः च लक्ष्मणः च)
- (iii) मयूरीकुकुटौ संवदतः/कुकुटमयूर्यौ संवदतः। (मयूरी च कुकुटः च/कुकुटः च मयूरी च)

अभ्यासवान् भव — दशमकक्षायाः

उल्लिखितवाक्येषु चतस्रः विशेषताः सन्ति —

- (i) समासेषु शब्दानां सङ्ख्यायाः अनुसारं द्विवचनं, बहुवचनं वा प्रयुक्तम्।
- (ii) वाक्येषु सर्वेषां पदानां सङ्ख्यायाः अनुसारं क्रियापदस्य वचनं निर्धारितम् भवति
अतः सर्वाणि पदानि प्रधानानि सन्ति।
- (iii) समासस्य अन्तिमपदानुसारं समासस्य लिङ्गं निर्धार्यते।

(ii) समाहार द्वन्द्वः

- (i) योगिनं शीतोष्णं न बाधते। (शीतं च उष्णं च, तयोः समाहारः)
- (ii) सः पुत्रपौत्रं दृष्ट्वा प्रसीदति। (पुत्रः च पौत्रः च, तयोः समाहारः)
- (iii) सः दिवारात्रं प्रसन्नः तिष्ठति। (दिवा च रात्रिः च, तयोः समाहारः)

उल्लिखितवाक्येषु रेखाङ्कितपदेषु यद्यपि द्वे एव पदे प्रधाने परन्तु तयोः समाहार/समूह-कारणात् एकवचनस्य प्रयोगः अभवत् एवम् एतेषु उदाहरणेषु अधोलिखित-विशेषताः सन्ति —

- (i) समस्तपदानि नपुंसकलिङ्गे एकवचने सन्ति।
- (ii) द्वयोः पदयोः एकः समाहारः भवति।

(iii) एकशेषद्वन्द्वः

पितरौ= माता च पिता च- अत्र एकस्य पितृशब्दस्य द्विवचने प्रयोगेण एकशेषद्वन्द्वः समासः कथ्यते। इतरेतरद्वन्द्व समासे ‘मातापितरौ’ इत्यस्य अपि प्रयोगः भवति।

अभ्यासः

अधोलिखिततालिकायां समस्तपदेभ्यः विग्रहं विग्रहेभ्यः च समस्तपदानि लिख्यन्ताम्—

क्रमः	समस्तपदानि	विग्रहः
1.	अग्निसोमौ
2.	पाणिपादम्
3.	सीता च रामः च
4.	इन्द्रः च वरुणः च
5.	रमा च शारदा च
6.	धर्मः च अर्थः च कामः च मोक्षः च
7.	लतापुष्पम्
8.	मूषकः च माजारः च
9.	अहोरात्रम्
10.	सुखं च दुःखम् च

4. बहुव्रीहिः

- (i) चतुर्मुखः ब्रह्मा सृष्टिरचनां करोति। (चत्वारि मुखानि यस्य सः)
- (ii) चतुर्भुजः विष्णुः सृष्टे पालनं करोति। (चतसः भुजाः यस्य सः)
- (iii) त्रिनेत्रः शिवः जगत् संहरति। (त्रीणि नेत्राणि यस्य सः)
- (iv) क्रूरकर्मा जनः आतङ्कवादी भवति। (क्रूरं कर्म यस्य सः)
- (v) सिंहवाहना दुर्गा महिषासुरस्य वधम् अकरोत्। (सिंहः वाहनं यस्याः सा)

उल्लिखितवाक्येषु रेखाङ्कितपदेषु किमपि पदं प्रधानं नास्ति। अपि तैः पदैः सङ्केतितं किमपि अन्यद् एव पदं प्रधानम् अस्ति। एतेषु समासेषु अधोलिखिताः विशेषताः सन्ति।

- (i) द्वे पदे मिलित्वा अन्यपदं सङ्केतयन्ति।
- (ii) द्वे पदे यदा परस्परं विशेषणम् विशेष्यं च भवतः तदा ते प्रथमाविभक्तौ समानलिङ्गे च तिष्ठतः।
- (iii) विग्रहाय अन्ते यस्य सः/यस्याः सा इत्यादीनां प्रयोगः भवति।

इत्थं वयं जानीमः यद् बहुव्रीहिसमासः अन्यपदप्रधानः भवति। यदा बहुव्रीहिसमासे द्वे पदे एकस्मिन् एव विभक्तौ भवतः तदा समानाधिकरण-बहुव्रीहिः भवति। बहुव्रीहिसमासे यदा द्वे पदे पृथक्-पृथक्- विभक्तौ भिन्न-लिङ्गे वा तदा व्यधिकरण-बहुव्रीहिः समासः भवति।

अभ्यासः

अधोलिखितसमस्तपदेभ्यः विग्रहाः, विग्रहेभ्यः च समस्तपदानि लिख्यन्ताम्—

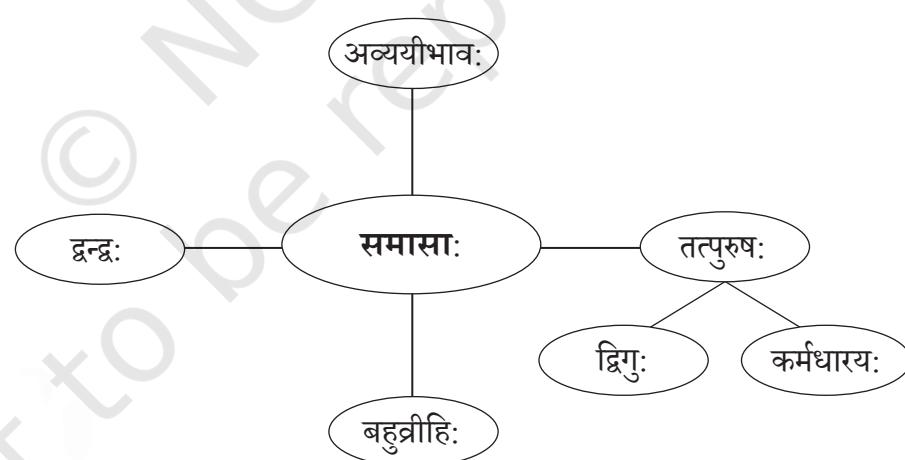
क्रमः	समस्तपदानि	विग्रहः
1.	लम्बम् उदरं यस्य सः
2.	पीताम्बरः
3.	कृतः उपकारः येन सः
4.	प्रत्युत्पन्नमतिः
5.	गज इव आननं यस्य सः
6.	चन्द्रमुखी
7.	चक्रं पाणौ यस्य सः
8.	चन्द्रमौलिः
9.	बहूनि कमलानि यस्मिन् तत्
10.	जितानि इन्द्रियाणि येन सः

अभ्यासवान् भव — दशमकक्षाया:

मिश्रिताभ्यासः

अधोलिखितसमस्तपदेभ्यः विग्रहाः विग्रहेभ्यः च समस्तपदानि निर्माय तेषां नामानि
अपि लिख्यन्ताम्—

क्रमः	समस्तपदम्	विग्रहः	समासनाम
1.	मेघश्यामः
2.	न युक्तम्
3.	देहविनाशाय
4.	नीलं च तत् कमलम्
5.	हर्षेण मिश्रितम्
6.	कर्कशः ध्वनिः
7.	पञ्चानां वटानां समाहारः
8.	वनराजः
9.	स्थिता प्रज्ञा यस्यः सः
10.	माता च पिता च





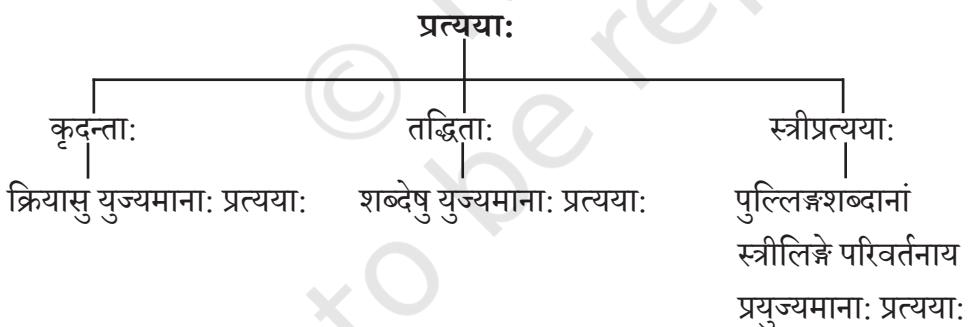
प्रत्ययः

1. अधोलिखितानि वाक्यानि पठत—

- (i) बालकः पठितुं विद्यालयं गच्छति।
- (ii) पठित्वा गुरुं प्रणम्य सः गृहमागच्छति।
- (iii) ततः सः तर्तुम् तरणतालं गच्छति।
- (iv) तस्य मित्रं व्यायामं कर्तुं व्यायामशालां गच्छति।
- (v) ततः आगत्य तौ पाठान् स्मरतः।

उपरिलिखितानि रेखाङ्कितपदानि प्रत्यययुक्तानि सन्ति। भवन्तः नवकक्षायां एतान् प्रत्ययान् पठितवन्तः, अधुना तेषां पुनरभ्यासं कृत्वा एतानि अतिरिच्च्य कठिपयान् प्रत्ययान् पठिष्यामः।

- (क) शब्दस्य धातोः वा अन्ते ये शब्दांशाः प्रयुज्यन्ते ते प्रत्ययाः भवन्ति।
- (ख) प्रत्ययानां योगेन शब्दस्य अर्थः परिवर्तते।
- (ग) प्रत्ययाः त्रिविधाः भवन्ति।



ध्यातव्यम् तथ्यम्—

- (क) कृत्वा-तुमुन्-प्रत्यययुक्तानि पदानि अव्ययानि भवन्ति।
- (ख) धातुना विशेषणं निर्मातुं, ‘कर्तुं योग्यम्’ इत्यर्थे तव्यत्, अनीयर् यत् प्रत्ययाः प्रयुज्यन्ते।
- (ग) धातुना (क्रियया) विशेषणं निर्मातुं शतृशानचौ प्रत्ययौ प्रयुज्येते।
- (घ) भूतकालिकक्रियाणां प्रयोगाय कत-कतवत् प्रत्ययौ प्रयुज्येते।
- (ङ) अनेन गुणेन युक्त इत्यर्थे मतुप्/वतुप्, ठक्, णिनि च प्रत्ययाः प्रयुज्यन्ते।
- (च) भाववाचकसंज्ञां विज्ञापयितुं त्व, तल् च प्रत्ययौ प्रयुज्येते।

शतृ-प्रत्ययः

2. अधोलिखितानि वाक्यानि ध्यानेन पठन्तु—

- (i) ध्यायतः विषयान् पुंसः तेषु सङ्गः उपजायते।
- (ii) गच्छन्तः यात्रिणः जल्पन्ति।
- (iii) खादन् नरः न वदति।
- (iv) चिन्तयन् लवः लिखति।
- (v) गायन्ती बालिका प्रशंसां प्राप्नोति।
- (vi) पतत् फलं त्रुट्यति (विभक्तं भवति)

उपरिलिखितेषु वाक्येषु रेखाङ्कितपदानि शतृ-प्रत्यययुक्तानि सन्ति। शतृप्रत्यययुक्तानि पदानि विशेषणानि भवन्ति। एतेषां रूपम् एवं भवति—

पठ्	+	शतृ	-	पठत्
लिख्	+	शतृ	-	लिखत्
धाव्	+	शतृ	-	धावत्
गम्	+	शतृ	-	गच्छत्
भू	+	शतृ	-	भवत्
नी	+	शतृ	-	नयत्
क्रीड़	+	शतृ	-	क्रीडत्
ब्रू	+	शतृ	-	वदत्
श्रु	+	शतृ	-	शृणवत्
कृ	+	शतृ	-	कुर्वत्
पा/पिब्	+	शतृ	-	पिबत्

एतेषां पदानां प्रयोगं पश्यामः— (पुलिलङ्घः)

विभक्तिः एकवचनम्

प्रथमा	पठन्	बालकः
द्वितीया	पठन्तं	बालकम्
तृतीया	पठता	बालकेन
चतुर्थी	पठते	बालकाय
पञ्चमी	पठतः	बालकात्
षष्ठी	पठतः	बालकस्य
सप्तमी	पठति	बालके
सम्बोधनम्	हे पठन्	बालक!

द्विवचनम्

पठन्तौ	बालकौ
पठन्तौ	बालकौ
पठदभ्यां	बालकाभ्याम्
पठदभ्यां	बालकाभ्याम्
पठदभ्यां	बालकाभ्याम्
पठतोः	बालकयोः
पठतोः	बालकयोः
हे पठन्तौ	बालकौ!

बहुवचनम्

पठन्तः	बालकाः
पठतः	बालकान्
पठद्विः	बालकैः
पठद्वयः	बालकेभ्यः
पठद्वयः	बालकेभ्यः
पठतां	बालकानाम्
पठत्सु	बालकेषु
हे पठन्तः	बालकाः!

(स्त्रीलिङ्ग)

विभक्ति:	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पठन्ती बालिका	पठन्त्यौ बालिके	पठन्त्यः बालिकाः
द्वितीया	पठन्तीं बालिकाम्	पठन्त्यौ बालिके	पठन्तीः बालिकाः
तृतीया	पठन्त्या बालिकया	पठन्तीभ्यां बालिकाभ्याम्	पठन्तीभिः बालिकाभिः
चतुर्थी	पठन्त्यै बालिकायै	पठन्तीभ्यां बालिकाभ्याम्	पठन्तीभ्यः बालिकभ्यः
पञ्चमी	पठन्त्याः बालिकायाः	पठन्तीभ्यां बालिकाभ्याम्	पठन्तीभ्यः बालिकभ्यः
षष्ठी	पठन्त्याः बालिकायाः	पठन्त्योः बालिकयोः	पठन्तीनाम् बालिकानाम्
सप्तमी	पठन्त्याम् बालिकायाम्	पठन्त्योः बालिकयोः	पठन्तीषु बालिकासु
सम्बोधनम्	हे पठन्ति बालिके!	हे पठन्त्यौ बालिके!	हे पठन्त्यः बालिकाः!

(नपुंसकलिङ्ग)

विभक्ति:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	पतत् फलम्	पतती फले	पतन्ति फलानि
द्वितीया	पतत् फलम्	पतती फले	पतन्ति फलानि
तृतीया	पतता फलेन	पतद्भ्याम् फलाभ्याम्	पतद्धिः फलैः
चतुर्थी	पतते फलाय	पतद्भ्याम् फलाभ्याम्	पतद्धयः फलेभ्यः
पञ्चमी	पततः फलात्	पतद्भ्याम् फलाभ्याम्	पतद्धयः फलेभ्यः
षष्ठी	पततः फलस्य	पततोः फलयोः	पतताम् फलानाम्
सप्तमी	पतति फले	पततोः फलयोः	पतत्सु फलेषु
सम्बोधनम्	हे पतत् फल!	हे पतती फले!	हे पतन्ति फलानि!

शानच् प्रत्ययः

3. शानच्-प्रत्यययुक्तपदानि अपि विशेषणानि भवन्ति।

परस्मैपदि-धातुभिः सह शतृप्रत्ययः प्रयुज्यते। आत्मनेपदिधातुभिः सह शानच् प्रत्ययः अपि प्रयुज्यते —

सेव्	+	शानच्	-	सेवमानः
मुद्	+	शानच्	-	मोदमानः
रुच्	+	शानच्	-	रोचमानः
वृद्ध्	+	शानच्	-	वर्धमानः
सह्	+	शानच्	-	सहमानः
लभ्	+	शानच्	-	लभमानः

अभ्यासवान् भव — दशमकक्षाया:

एतेषां प्रयोगान् अथः पश्यामः—

सेवमानः बालकः	सेवमानौ बालकौ	सेवमानाः बालकाः
एतस्य रूपाणि पुँलिङ्गे बालकवत् भवन्ति।		
सेवमाना बालिका	सेवमाने बालिके	सेवमानाः बालिकाः
एतस्य रूपं स्त्रीलिङ्गे लतावत् चलति।		
लभमानं धनम्	लभमाने धने	लभमानानि धनानि
सेवमानं मित्रम्	सेवमाने मित्रे	सेवमानानि धनानि
नपुंसकलिङ्गे एतस्य रूपं फलवत् भवति।		

अभ्यासः

1. शतृप्रत्ययं योजयित्वा वाक्यपूर्ति कुरूत —

- (i) धावकाः यशः प्राप्नुवन्ति। (धाव्+शतृ)
- (ii) वस्त्राणि रजकः श्रान्तः भवति। (नी+शतृ)
- (iii) जलं तृषातौ सन्तुष्टौ स्तः। (पि॒ब्+शतृ)
- (iv) कथां महिला शिशुं शाययति। (श्रु+णिच्+शतृ)
- (v) कार्यं स्त्रियः गीतं गायन्ति। (कृ+शतृ)

2. शानच्प्रत्ययं योजयित्वा वाक्यपूर्ति कुरूत —

- (i) गुरुं सेव्+शानच् छात्राः सफलतां लभन्ते।
- (ii) कष्टं सह+शानच् जनाः दुःखिनः भवन्ति।
- (iii) सत्यं ब्रू+शानच् नराः सम्मानं प्राप्नुवन्ति।
- (iv) तस्य वृध्+शानच् प्रगतिः पितरं हर्षयति।
- (v) मुद्+शानच् बालिका नृत्यति।

3. अधोलिखितवाक्येषु रेखाङ्कितपदस्य शुद्धमुक्तरं प्रदत्तेभ्यः विकल्पेभ्यः चित्वा लिखत —

(क) कथां श्रु+शतृ महिलाः ज्ञानं लभन्ते।

शृण्वन्	शृण्वती	शृण्वत्यः
---------	---------	-----------

(ख) गम्+शतृ बालिके चिन्तयतः।

गच्छन्ती	गच्छन्त्यौ	गच्छन्तौ
----------	------------	----------

(ग) वद्+शतृ बालकम् आकारया	वदन्	वदन्तौ	वदन्तम्
(घ) धाव्+शतृ क्रीडकेन पथिकः आहतः।	धावन्	धावन्तम्	धावता
(ङ) श्रान्तः भू+शतृ अरुणः स्वपिति।	भवन्	भवन्तौ	भवन्तः।

तव्यत्-प्रत्ययः

अधोलिखितानि वाक्यानि पठत—

विधिलिङ्गलकारः

- (i) अमितः पाठं स्मरेत्।
- (ii) रमा लेखान् लिखेत्।
- (iii) वयं वृक्षान् आरोपयेम।
- (iv) वयं प्रतिदिनं दुग्धं पिबेम।
- (v) यूयं फलानि खादेत।
- (vi) छात्राः प्रश्नान् पृच्छेयुः।
- (vii) यूयं कार्यं कुर्यात्।
- (viii) सः धर्मं पालयेत्।
- (ix) सर्वे कथां शृणुयुः।
- (x) सः उच्चैः हसेत्।

‘तव्यत्’ प्रत्ययः

- अमितेन पाठः स्मर्तव्यः।
- रमया लेखा: लेखितव्याः।
- अस्माभिः वृक्षाः आरोपयितव्याः।
- अस्माभिः प्रतिदिनं दुग्धं पातव्यम्।
- युष्माभिः फलानि खादितव्यानि।
- छात्रैः प्रश्नाः प्रष्टव्याः।
- युष्माभिः कार्यं कर्तव्यम्।
- तेन धर्मः पालयितव्यः।
- सर्वैः कथा श्रोतव्या।
- तेन उच्चैः हसितव्यम्।

अत्र भवन्तः किं पश्यन्ति?

एतानि सर्वाणि वाक्यानि ‘तव्यत्’ प्रत्यययुक्तानि सन्ति।

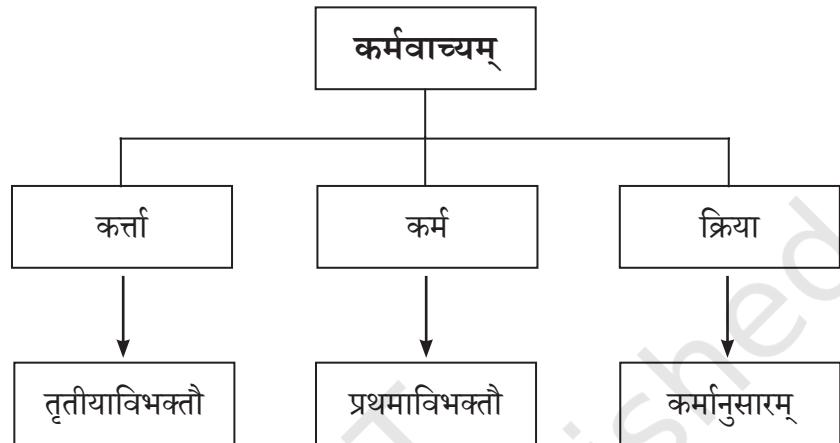
विशेषः—

- तव्यत्-प्रत्ययस्य प्रयोगः ‘विधिलिङ्गलकारस्य’ अर्थे भवति।
- अस्य अर्थः भवति सम्भावना, अनुमतिः इत्यादयः।
- तव्यत्-प्रत्ययस्य ‘त्’ वर्णस्य लोपः भवति ‘तव्य’ धातोः पश्चात् प्रयुज्यते।
यथा- पठ्+तव्यत्=पठितव्य
- प्रत्ययस्य पश्चात् अस्य रूपाणि—

अभ्यासवान् भव — दशमकक्षायाः

पुलिलङ्गे	— बालवत्	पठितव्यः	पठितव्यौ	पठितव्याः
स्त्रीलिङ्गे	— लतावत्	पठितव्या	पठितव्ये	पठितव्याः
नपुंसकलिङ्गे	— फलवत्	पठितव्यम्	पठितव्ये	पठितव्यानि

- ‘तव्यत्’ प्रत्ययस्य प्रयोगः कर्मवाच्ये भवति —



अभ्यासः

1. रिक्तस्थानानि पूरयत —

- रामेण पाठः | (लिख्+तव्यत्)
- लतया पुष्पाणि न | (त्रुट्+तव्यत्)
- त्वया जलं वृथा न | (कृ+तव्यत्)
- त्वया उच्चैः न | (वद्+तव्यत्)
- अस्माभिः बहिः | (भ्रम्+तव्यत्)
- सर्वैः सत्यं | (वद्+तव्यत्)
- युष्माभिः सन्तुलितभोजनम् एव | (खाद्+तव्यत्)
- अमितेन अवश्यमेव तत्र | (गम्+तव्यत्)
- नकुलेन पाठाः | (पठ्+तव्यत्)
- तैः धर्मः | (पाल्+तव्यत्)

2. कोष्ठकप्रदत्तशब्दैः सह उचितां विभक्तिं प्रयुज्य रिक्तस्थानानि पूरयत —

- एतत् कार्यं कर्तव्यम्। (अस्मद्)
- खगाः रक्षणीयाः। (युष्मद्)
- पाठाः पठितव्याः। (नमित)
- अनुशासनं पालयितव्यम्। (सर्व)



प्रत्ययः

- (v) देशरक्षा कर्तव्या। (सैनिक)
- (vi) मधुरं वक्तव्यम्। (जन)
- (vii) परिश्रमः कर्तव्यः। (श्रमिक)
- (viii) नियमाः पालयितव्याः। (अध्यापक)
- (ix) मनसा पाठयितव्यम्। (शिक्षक)
- (x) लेखौ लिखितव्यौ। (तत्)

3. कोष्ठकप्रदत्तशब्दैः सह उचितां विभक्तिं प्रयुज्य रिक्तस्थानानि पूर्यत —

- (i) न्यायाधीशेन कर्तव्यः। (न्याय)
- (ii) त्वया खादितव्यम्। (पौष्टिकभोजन)
- (iii) सर्वैः प्रातः कर्तव्यम्। (भ्रमण)
- (iv) तेन पठितव्याः। (कथा)
- (v) अस्माभिः स्मर्तव्याः। (पाठ)
- (vi) युष्माभिः एव सेवितव्यानि। (सुचरित)
- (vii) जनैः एव कर्तव्यानि। (सुकार्य)
- (viii) छात्रैः प्रष्टव्याः। (प्रश्न)
- (ix) बालैः न दूषयितव्यम्। (जल)
- (x) युष्माभिः न त्रोटयितव्यानि। (पुष्प)

अनीयर-प्रत्ययः

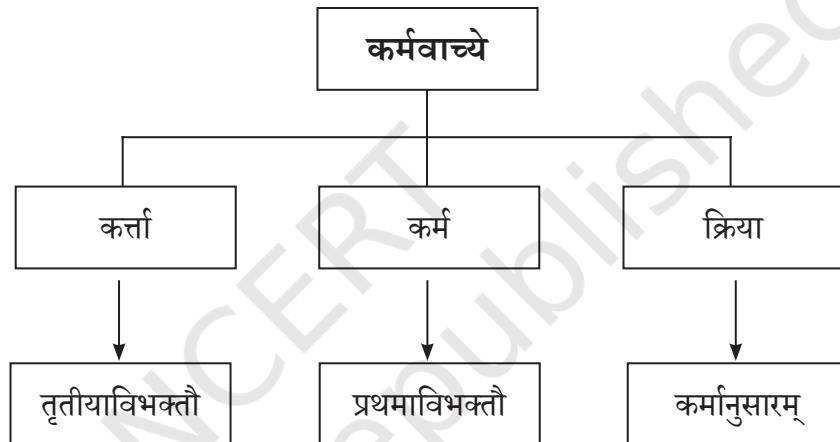
1. अधोलिखितानि वाक्यानि पठत —

- (i) बालैः वृद्धाः सदैव पूजनीयाः।
- (ii) छात्रैः अध्यापकाः सम्माननीयाः।
- (iii) अस्माभिः पितरौ पूजनीयौ।
- (iv) युष्माभिः गुरुणां आज्ञा पालनीया।
- (v) सर्वैः जलं रक्षणीयम्।
- (vi) जनैः धरा रक्षणीया।
- (vii) सर्वैः वृक्षाः आरोपणीयाः।
- (viii) अस्माभिः पुष्पाणि न त्रोटनीयानि।
- (ix) सर्वैः अनुशासनं पालनीयम्।
- (x) सुमितेन सुचरितानि सेवितव्यानि।

अभ्यासवान् भव — दशमकक्षायाः

उपरि यानि रेखाङ्कितानि पदानि सन्ति तानि ‘अनीयर्’ प्रत्यययुक्तानि सन्ति।

- ‘अनीयर्’ प्रत्ययस्य प्रयोगः योग्यार्थं भवति।
 - ‘अनीयर्’ प्रत्ययस्य ‘र्’ वर्णस्य लोपः भवति, केवलम् ‘अनीय’ धातोः पश्चात् प्रयुज्यते।
यथा- पठ्+अनीयर् = पठनीय।
 - धातोः पश्चात् यदा ‘अनीयर्’ प्रत्ययस्य प्रयोगः भवति तदा अस्य रूपाणि —
पुलिङ्गे — बालवत् = पठनीयः पठनीयौ पठनीयाः
स्त्रीलिङ्गे — लतावत् = पठनीया पठनीये पठनीयाः
नपुंसकलिङ्गे — फलवत् = पठनीयम् पठनीये पठनीयानि
- ‘अनीयर्’ प्रत्ययस्य प्रयोगः कर्मवाच्ये भवति।



1. अधोलिखितानि वाक्यानि पठित्वा ‘अनीयर्’ प्रत्यययुक्तपदानि चित्वा समक्षं लिखत —

पदानि

- | | |
|--|-------|
| (i) अस्माभिः धर्मः आचरणीयः। | |
| (ii) जनैः परिश्रमः करणीयः। | |
| (iii) सर्वैः पर्यावरणस्य रक्षा करणीया। | |
| (iv) बालैः नियमाः पालनीयाः। | |
| (v) त्वया एषः पाठः पठनीयः। | |
| (vi) सर्वैः समयस्य अनुपालनं कर्तव्यम्। | |
| (vii) त्वया कदापि वृथा न वदनीयम्। | |
| (viii) अनेन एतत् न करणीयम्। | |
| (ix) अस्माभिः दूषितं जलं न पानीयम्। | |
| (x) युष्माभिः पर्युषितम् अन्नं न खादनीयम्। | |

2. अधोलिखितेषु वाक्येषु ‘अनीयर्’ प्रत्यययुक्तानि पदानि इति (✓) चिह्नेन चिह्नितं कुरुत—

- (i) मनसा सततं स्मरणीयम्
- (ii) वचसा सततं वदनीयम्
- (iii) लोकहितं मम करणीयम्
- (iv) न भोगभवने रमणीयम्
- (v) न सुखशयने शयनीयम्
- (vi) अहर्निशं जागरणीयम्
- (vii) लोकहितं मम करणीयम्
- (viii) न जातु दुःखं गणनीयम्
- (ix) न च निजसौख्यं मननीयम्
- (x) कार्यक्षेत्रे त्वरणीयम्
- (xi) लोकहितं मम करणीयम्
- (xii) दुःखसागरे तरणीयम्
- (xiii) कष्टपर्वते चरणीयम्
- (xiv) विपत्तिविपिने भ्रमणीयम्
- (xv) लोकहितं मम करणीयम्
- (xvi) सदा मया सञ्चरणीयम्
- (xvii) लोकहितं मम करणीयम्

3. कोष्ठकप्रदत्तपदैः सह उचितां विभक्तिं प्रयुज्य रिक्तस्थानानि पूरयत—

- (i) युष्माभिः प्रातः उत्थाय | (पठ्+अनीयर्)
- (ii) जनैः सर्वदा सर्वेषां कल्याणं | (कृ+अनीयर्)
- (iii) अस्माभिः सुकार्याणि | (कृ+अनीयर्)
- (iv) सर्वैः ईशवन्दना | (स्मृ+अनीयर्)
- (v) त्वया मधुराणि वचनानि | (वद्+अनीयर्)
- (vi) सैनिकैः दुःखं न | (गण्+अनीयर्)
- (vii) अस्माभिः धर्मः | (आ+चर्+अनीयर्)
- (viii) त्वया वृथा न | (वच्+अनीयर्)
- (ix) जनैः प्रातः | (जागृ+अनीयर्)

अभ्यासवान् भव — दशमकक्षाया:

4. उदाहरणानुसारं लिखत —

	पुलिङ्गे			स्त्रीलिङ्गे			नपुंसकलिङ्गे		
शब्दः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
हसनीय-	हसनीयः	हसनीयौ	हसनीया:	हसनीया	हसनीये	हसनीया:	हसनीयम्	हसनीये	हसनीयानि
पठनीय-
पानीय-
ग्रहणीय-

तद्वित-प्रत्ययाः

शिक्षकः — अधोलिखितवाक्यानि ध्यानेन पठत —

- (i) बुद्धिमान् सदैव सफलः भवति
- (ii) कीर्तिमान् सर्वत्र यशः प्राप्नोति
- (iii) धनवान् निर्धनस्य साहाय्यं करोति।
- (iv) शक्तिमान् जनः भारं वोदुं समर्थः भवति।
- (v) बलवान् जनः निर्बलं न उपहरेत्।

एतेषु वाक्येषु कर्तृपदेषु वयं बुद्धिकीर्तिधनशक्तिबलम् इत्यादिषु किं योजितवन्तः येन अर्थः बुद्ध्या युक्तः, कीर्त्या युक्तः, शक्त्या युक्तः, बलयुक्तः च भवति।

छात्रः — महोदय! बुद्धिकीर्तिशक्तयः इत्यादिशब्देषु ‘मान्’ इति योजितः धन-बलशब्दाभ्यां वान् इति योजितः।

शिक्षकः — सुष्ठु! सम्यगभिज्ञातम्

1. मान् वान् एव मतुप् वतुप् प्रत्यययोः प्रयोगः युक्ततायाः अर्थे भवति।
2. मतुप् प्रत्ययस्य मत्, वतुप् प्रत्ययस्य च वत् शब्देषु संयोज्यते पुनः हलन्तशब्दानुसारं रूपनिर्माणं भवति।
3. अकारान्तशब्देषु वतुप् प्रत्ययः अ-भिन्नस्वरान्तशब्देषु च मतुप्-प्रत्ययस्य प्रयोगः भवति।
4. स्त्रीलिङ्गे बुद्धिमती, धनवती इत्यादिप्रकारेण नदीशब्दवत् रूपनिर्माणं भवति। अधुना अनयोः प्रयोगस्य अभ्यासं कुर्मः।

यथा —

धनवत् (पुलिङ्गे)

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	धनवान्	धनवन्तौ	धनवन्तः
द्वितीया	धनवन्तम्	धनवन्तौ	धनवतः
तृतीया	धनवता	धनवद्भ्याम्	धनवद्भिः



प्रत्ययः

चतुर्थी	धनवते	धनवद्भ्याम्	धनवद्भ्यः
पञ्चमी	धनवतः	धनवद्भ्याम्	धनवद्भ्यः
षष्ठी	धनवतः	धनवतोः	धनवताम्
सप्तमी	धनवति	धनवतोः	धनवत्सु
सम्बोधनम्	हे धनवन्!	हे धनवन्तौ!	हे धनवन्तः!

धनवती (स्त्रीलिङ्गः)

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	धनवती	धनवत्यौ	धनवत्यः
द्वितीया	धनवतीम्	धनवत्यौ	धनवतीः
तृतीया	धनवत्या	धनवतीभ्याम्	धनवतीभिः
चतुर्थी	धनवत्यै	धनवतीभ्याम्	धनवतीभ्यः
पञ्चमी	धनवत्याः	धनवतीभ्याम्	धनवतीभ्यः
षष्ठी	धनवत्याः	धनवत्योः	धनवतीनाम्
सप्तमी	धनवत्याम्	धनवत्योः	धनवतीषु
सम्बोधनम्	हे धनवति!	हे धनवत्यौ!	हे धनवत्यः!

धनवत् (नपुंसकलिङ्गः)

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	धनवत्	धनवती	धनवन्ति
द्वितीया	धनवत्	धनवती	धनवन्ति

- अन्यासु विभक्तिषु पुलिलिङ्गवद् रूपाणि भवन्ति।

इन् प्रत्यययुक्तपदानां रूपाण्यपि हलन्तशब्दवद् भवन्ति। तेभ्यः स्त्रीलिङ्गावबोधाय स्त्रीप्रत्ययस्य

प्रयोगं कृत्वा स्त्रीलिङ्गपदनिर्माणम् अपि भवति यथा—

गुणिन् (पुलिलिङ्गः)

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	गुणी	गुणिनौ	गुणिनः
द्वितीया	गुणिनम्	गुणिनौ	गुणिनः
तृतीया	गुणिना	गुणिभ्याम्	गुणिभिः
चतुर्थी	गुणिने	गुणिभ्याम्	गुणिभ्यः
पञ्चमी	गुणिनः	गुणिभ्याम्	गुणिभ्यः
षष्ठी	गुणिनः	गुणिनोः	गुणीनाम्
सप्तमी	गुणिनि	गुणिनोः	गुणिषु
सम्बोधनम्	हे गुणि!	हे गुणिनौ!	हे गुणिनः

गुणिनी (स्त्रीलिङ्गः)			
विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	गुणिनी	गुणिन्यौ	गुणिन्यः
द्वितीया	गुणिनीम्	गुणिन्यौ	गुणिनीः
तृतीया	गुणिन्या	गुणिनीभ्याम्	गुणिनीभ्यः
चतुर्थी	गुणिन्यै	गुणिनीभ्याम्	गुणिनीभ्यः
पञ्चमी	गुणिन्याः	गुणिनीभ्याम्	गुणिनीभ्यः
षष्ठी	गुणिन्याः	गुणिन्योः	गुणिनीनाम्
सप्तमी	गुणिन्याम्	गुणिन्योः	गुणिनीषु
सम्बोधनम्	हे गुणिनि!	हे गुणिन्यौ!	हे गुणिन्यः!

अभ्यासः

1. अधोलिखितवाक्येषु समुचितपदेन रिक्तस्थानपूर्ति कुरुत —

- (i) (बल + इन्) जनाः निर्बलेषु बलप्रयोगं न कुर्यात्।
- (ii) रथिनम् (.....+.....) जनं वार्तायां मग्नं न कुर्यात्।
- (iii) शिल्पिन्यः (.....+.....) बालिकाः कुत्र गताः? :
- (iv) दण्डनि (.....+.....) जने न विश्वसिहि।
- (v) (कर+इन्) वने वसति।
- (vi) धनिनः (.....+.....) गर्विताः न भवेयुः।
- (vii) सीता अवदत् - अहम् (कुशल+इन्) अस्मि।
- (viii) बलिनौ (.....+.....) अपमानं न सहेतो।
- (ix) (.....+.....) गुणिना जनेन एतत् कार्यं सुष्ठु कृतम्।
- (x) दण्डनः (.....+.....) दण्डं धारयन्ति।

2. प्रदत्तशब्देषु मतुप् अथवा वतुप् प्रत्ययस्य यथापेक्षितं रूपं संयोज्य/वियोज्य लिखत —

- (i) बुद्धिमती (.....+.....) नारी प्रशस्यते।
- (ii) एतौ छात्रौ (शक्ति+मतुप्) स्तः।
- (iii) ताः कन्याः गुणवत्यः (.....+.....) सन्ति।
- (iv) लक्ष्मीवान् (.....+.....) लक्ष्म्याः आदरं कुर्यात्।
- (v) (धन+वतुप्) जनाः दरिद्राणां सहायतां कुर्वन्तु।

- (vi) सत्यवत्यै (.....+.....) नार्ये पुस्तकं यच्छ।
- (vii) (सत्य+वतुप्) जनैः सदा सत्यभाषणं क्रियते।
- (viii) बलवता (.....+.....) जनेन निर्बलेषु बलं न प्रयोक्तव्यम्।
- (ix) (शक्ति+मतुप्) नार्या इदं कार्यं कृतम्।
- (x) गुणवद्धिः (.....+.....) छात्रैः ध्यानेन पठ्यते।

इन् (णिनि) प्रत्ययः

अकारान्तशब्दैः सह ‘युक्त’ इत्यर्थे णिनि (इन्) प्रत्ययस्य प्रयोगः अपि भवति यथा—

गुण + णिनि (इन्)	— गुणैः युक्तः
दण्ड + इन्	— दण्डेन युक्तः
शिल्प + इन्	— शिल्पिन् — शिल्पकलया युक्तः
कर + इन्	— करिन् (गजः) — करेण (शुण्डेन) युक्तः
बल + इन्	— बलिन् — बलेन युक्तः

एतेषां प्रयोगः अपि वाक्येषु शब्दरूपनिर्माणाय क्रियते।

त्व-तल्-प्रत्ययौ

शिक्षकः — एतं श्लोकं पठत —

विद्वत्त्वं च नृपत्वं च नैव तुल्यं कदाचन।
स्वदेशो पूज्यते राजा, विद्वान् सर्वत्र पूज्यते॥

अत्र ‘विद्वत्त्वम्, नृपत्वम्’ इति पदयोः कस्य प्रत्ययस्य प्रयोगः?

छात्रा: — गुरुवर! न जानीमः वयम् कृपया बोधयतु।

शिक्षकः — अत्र भाववाचकस्य ‘त्व’ इति प्रत्ययस्य प्रयोगः।

$$\left[\begin{array}{l} \text{विद्वस्+त्व=विद्वत्त्वम्} \\ \text{नृप+त्व=नृपत्वम्} \end{array} \right]$$

‘त्व’ प्रत्ययस्य प्रयोगः इत्येवं क्रियते

अस्य प्रत्ययस्य प्रयोगेण शब्दः नपुंसकलिङ्गे भवति। अतः शब्दरूपं ‘फलम्’ इति शब्दवत् निर्मायते।

उमेशः — यथा दीर्घत्वम्।

शिक्षकः — आम् शोभनम्। एवमेव अन्यशब्दानपि निर्माय वदन्तु।

महेशः — लघुत्वम्, महत्त्वम्

अभ्यासवान् भव — दशमकक्षायाः

- शिक्षकः — अतिशोभनम्। अधुना एतां पड़िक्तं पठत-
का जडता? पाठतोऽप्यनभ्यासः।
अर्थात् यदि पठितस्य अभ्यासः न क्रियते तर्हि जडता आयाति। अत्र भाववाच्ये
एव तल् प्रत्ययः प्रयुक्तः।
- रहीमः — किं त्व, तल् च द्वावेव भाववाचकौ प्रत्ययौ?
- शिक्षकः — आम् सम्यगवगतम्।
- रमेशः — तर्हि किमन्तरं द्वयोः मध्ये?
- शिक्षकः — अन्तरं केवलं लिङ्गप्रयोगस्य एव।
- छात्रा: — कथमिव?
- शिक्षकः — तल् प्रत्ययस्य प्रयोगेण शब्दः स्त्रीलिङ्गः भवति। यथा जडता, दीर्घता, लघुता,
महत्ता इत्यादिप्रकारेण तल् प्रत्यययुतस्य शब्दस्य रूपाणि ‘बालिका’ शब्दवत्
भवन्ति।
- इदानीमस्याः तालिकायाः माध्यमेन अवगच्छामः-
- | | | | |
|--------|---|-------|----------|
| लघु | — | लघुता | लघुत्वम् |
| महत् | — | | |
| दीर्घ | — | | |
| गुरु | — | | |
| पवित्र | — | | |
- छात्रा: — तालिकां पूर्यन्ति।
- शिक्षकः — अधुना वाक्येषु एतयोः अभ्यासं कुर्मः।
- अथः प्रदत्तवाक्येषु त्व/तल्-प्रत्ययस्य संयोजनं/वियोजनं वा कृत्वा रिक्तस्थानानि
पूर्यत—
- (i) कृष्णसुदाम्नोः मित्रता (..... +) विश्वप्रसिद्धाः।
 - (ii) विद्वत्वम् (..... +) च नृपत्वम् (..... +) च नैव तुल्यम्।
 - (iii) कार्येषु दीर्घसूत्रता (..... +) कदापि न कर्तव्या।
 - (iv) आकारस्य (लघु+त्व) कार्यबाधकः न भवेत्।
 - (v) पशवः स्वपशुत्वम् (..... +) तु दर्शयन्ति एव।

- (vi) वेदानां (महत्+त्व) को न जानाति।
- (vii) गङ्गायाः पवित्रता (.....+.....) जगत्प्रसिद्धा।
- (viii) मूर्खः स्वमूर्खतां (.....+.....) सभायां न प्रदर्शयेत्।
- (ix) नदीनां (दीर्घ+तल्) चिन्तनात् परः विषयः।
- (x) मित्रेण सह मित्रत्वम् (.....+.....) कदापि न त्याज्यम्।

ठक्- प्रत्ययः

अधोलिखितानि वाक्यानि पठत —

- स एकः श्रेष्ठः नागरिकः अस्ति।
- एतद् आध्यात्मिकं कार्यम् अस्ति।
- एषः धार्मिकः ग्रन्थोऽस्ति।
- अद्य विद्यालये सांस्कृतिकः कार्यक्रमोऽस्ति।
- देशस्य सेवा अस्माकं नैतिकं कर्तव्यम् अस्ति।
- एतत् अस्माकं दैनिकं कार्यम् अस्ति।
- अद्य अस्माकं वार्षिकी परीक्षा अस्ति।
- एषः कार्मिकः परिश्रमी अस्ति।
- एषा मासिकी पत्रिका अस्ति।
- दिल्लीप्रदेशे अनेकानि ऐतिहासिकानि स्थानानि सन्ति।

उपरि यानि रेखाङ्कितानि पदानि सन्ति तानि सर्वाणि ‘ठक्’ प्रत्यय-युक्तानि सन्ति।

- ‘ठक्’ प्रत्ययः भावार्थे प्रयुज्यते।
- ‘ठक्’ प्रत्ययः ‘इक्’ रूपेण परिवर्तितः भवति।
- ‘ठक्’ प्रत्यये आदिस्वरे वृद्धिः भवति।

यथा — धर्म+ठक्=धार्मिक

- ‘ठक्’ प्रत्ययस्य रूपाणि त्रिषु लिङ्गेषु भवन्ति।

यथा —

पुलिलङ्गे—	बालकवत्—	नैतिकः	नैतिकौ	नैतिकाः
स्त्रीलिङ्गे—	नदीवत्—	नैतिकी	नैतिक्यौ	नैतिक्यः
नपुंसकलिङ्गे—	फलवत्—	नैतिकम्	नैतिके	नैतिकानि

‘ठक्’ प्रत्ययस्य प्रयोगः विशेषणरूपेण भवति।

अभ्यासः

1. अथोलिखितेषु कोष्ठकप्रदत्तशब्दैः सह ‘ठक्’ प्रत्ययस्य प्रयोगं कृत्वा रिक्तस्थानानि पूरयत —
 - (i) (धर्म+ठक्) जनाः धर्मम् एव आचरन्ति।
 - (ii) अद्य (वर्ष+ठक्) परीक्षापरिणामः प्राप्स्यते।
 - (iii) अद्य वयं (इतिहास+ठक्) स्थलानि द्रष्टुं गच्छामः।
 - (iv) (प्रथम+ठक्) शिक्षा बाल्यतः एव भवति।
 - (v) (सेना+ठक्) देशं रक्षन्ति।
 - (vi) अधुना (अध्यात्म+ठक्) शिक्षा अनिवार्या।
 - (vii) (नगर+ठक्) एव देशम् उन्नयन्ति।
 - (viii) एताः (विज्ञान+ठक्) चिन्तायां मग्नाः सन्ति।
2. ‘ठक्’ प्रत्यययुक्तपदानि चित्वा लिखत —
 - (i) भौतिकी उन्नतिरपि अनिवार्या।
 - (ii) अधुना वार्षिकं कार्यं सम्पन्नम्।
 - (iii) सैनिकाः देशम् उन्नयन्ति।
 - (iv) दैविकी विपदा कष्टकरी भवति।
 - (v) एषः सार्वभौमिकः सिद्धान्तोऽस्ति।
 - (vi) सार्वकालिकाः उपदेशाः एते।
 - (vii) सामाजिकं कार्यम् एव एतत्।
 - (viii) वैज्ञानिकाः अन्वेषणे रताः भवन्ति।
 - (ix) भारतस्य भौगोलिकी स्थितिः सुन्दरा अस्ति।
 - (x) एषा कवे: मौलिकी कृतिः।

स्त्री-प्रत्ययाः

अथोलिखितवाक्यानि ध्यानेन पठन्तु —

- इयं एका छात्रा अस्ति।
- विद्योत्तमा विदुषी आसीत्।
- अध्यापिका छात्रान् पाठयति।
- अजा तृणं चरति।
- आचार्या स्नेहेन पाठयति।

- गायिका गीतं गायति।
- सुता गृहस्य भूषणं भवति।
- नदी मलिना न कर्तव्या।
- नायिका अभिनयं करोति।

उपरि लिखितानि रेखाङ्कितपदानि स्त्रीलिङ्गे सन्ति। पुलिलङ्गपदानां स्त्रीलिङ्गे परिवर्तनाय स्त्रीप्रत्ययाः प्रयुज्यन्ते। अत्र वयं टाप् प्रत्ययौ पठिष्यामः। टाप् प्रत्यये (आ) शिष्यते, डीप् च प्रत्ययः (ई/आनी) शिष्यते।

नद	+ डीप्	- नदी
गोप	+ डीप्	- गोपी
महिष	+ डीप्	- महिषी
ब्राह्मण	+ डीप्	- ब्राह्मणी
वदन्	+ डीप्	- वदन्ती
श्रीमन्	+ डीप्	- श्रीमती
दातृ	+ डीप्	- दात्री
गुणिन्	+ डीप्	- गुणिनी
तपस्विन्	+ डीप्	- तपस्विनी

सर्वेषां रूपाणि नदीवत् भवन्ति यथा— गोपी गोप्यौ गोप्यः।

छात्र	+ टाप्	- छात्रा
गायक	+ टाप्	- गायिका
धावक	+ टाप्	- धाविका
शिक्षक	+ टाप्	- शिक्षिका
साधक	+ टाप्	- साधिका
प्रथम	+ टाप्	- प्रथमा
द्वितीय	+ टाप्	- द्वितीया
सरल	+ टाप्	- सरला
अज	+ टाप्	- अजा
मूषक	+ टाप्	- मूषिका
सुत	+ टाप्	- सुता
बालक	+ टाप्	- बालिका

सर्वेषां रूपाणि लतावत् भवन्ति यथा— गायिका गायिके गायिका:

अभ्यासः

1. शुद्धं विकल्पं चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत —

- (i) इयं पठति (छात्रः/छात्रा)
- (ii) बालिकासु अध्ययनशीला अस्ति (प्रथमः/ प्रथमा)
- (iii) शोभनानां भोजनानां भवा (दातृ/ दात्री)
- (iv) एषा हवनं करोति (तपस्वी/ तपस्वी)
- (v) गङ्गा एका अस्ति (नद/ नदी)

2. कोष्ठकप्रदत्तपदानां समुचितं प्रयोगं कुर्वत्यः/ कुर्वतः रिक्तस्थानानि पूरयत —

मञ्जूषा

श्रीमती, प्राध्यापिका, नदी, तपस्विन्या, नदीम्, प्रथमा, मातुलानी, बालिका:,
गच्छन्ती, मेधाविनी, छात्राः:

- (i) इयम् एका अस्ति
- (ii) परितः वृक्षाः सन्ति।
- (iii) सह तस्य पुत्रः अपि प्रवचनं करोति।
- (iv) एताः सन्ति।
- (v) ताः सर्वाः सन्ति।
- (vi) वाचाला अस्ति।
- (vii) ग्रामं श्रमिका श्रान्ता अस्ति।
- (viii) एषा बालिका अस्ति।
- (ix) मम विदेशं गच्छति।
- (x) रमा एका अस्ति।

3. अधोलिखिते अनुच्छेदे रेखाङ्कितपदानि स्त्रीलिङ्गे परिवर्त्य अनुच्छेदं पुनः
लिखत—

एकः बालकः ग्रामे वसति। सः विद्यालयं गच्छति। तेन सह तस्य भ्राता अपि गच्छति।
तस्य शिक्षकः तं प्रेमणा पाठ्यति। विद्यालये अनेके छात्राः सन्ति। तेषु एकः अत्यधिकः
मेधावी अस्ति।



अव्ययानि

1. अधोलिखितानि वाक्यानि पठत —

- दुर्वहम् अत्र जीवितम्।
- प्रकृतिः एव शरणम्।
- सः सदा सत्यं वदति।
- यानानां पङ्क्तयो हि अनन्ताः।
- वायुयानं भृशं दूषितम्।
- जलं निर्मलं न अस्ति।
- एतत् खलु राजासनम् अस्ति।
- अलम् अतिशालीनतया।
- ननु भगवान् वाल्मीकिः अयम्।

उपरि यानि रेखांकितानि पदानि सन्ति तानि सर्वाणि अव्ययपदानि सन्ति।
अव्ययपदानि लिङ्गवचनविभक्तिषु न परिवर्तन्ते। तद्यथा —

(क) i. बालः अपि धावति ii. बालिका अपि धावति।

अत्र लिङ्गकारणात् अपि परिवर्तनं न भवति।

(ख) i. यदा सः आगच्छति तदा ते गच्छन्ति। ii. यदा ते आगच्छन्ति तदा वयं गच्छामः।

अत्र वचनकारणात् अपि ‘यदा-तदा’ अव्यययोः परिवर्तनं न भवति।

(ग) i. बालः उच्चैः वदति ii. पिता बालम् उच्चैः वदति।

अत्र विभक्तिकारणाद् अपि ‘उच्चैः’ इति अव्ययपदे परिवर्तनं न भवति।

अतः—

सदृशं त्रिषु लिङ्गेषु सर्वासु च विभक्तिषु।
वचनेषु च सर्वेषु यन्न व्येति तदव्ययम्॥

- अव्ययानि न परिवर्तन्ते।
- अव्ययानि त्रिषु लिङ्गेषु सदृशानि भवन्ति।
- अव्ययानि त्रिषु वचनेषु सदृशानि भवन्ति।
- अव्ययानि सर्वासु विभक्तिषु सदृशानि भवन्ति।

अव्ययपदानि

कालवाचकानि	स्थानवाचकानि	युग्मानि	समानार्थकानि	विकीर्णानि
पुरा- प्राचीनकाल में	यत्र- जहाँ	यावत्-तावत् =	ननु	अपि-भी
सद्यः- तुरन्त	तत्र- वहाँ	जब तब	नूनम्]	वृथा-बेकार
सपदि- तुरन्त	उपरि- ऊपर	यत्र-तत्र= जहाँ	खलु]	अथ किम्- हाँ
अचिरात्- अभी	कुत्र- कहाँ	वहाँ		और क्या
अचिरेण- अभी	अत्र- यहाँ	शनैः-शनैः= धीरे-	सम्प्रति	च- और
सततम्- निरन्तर	सर्वत्र- सब जगह	धीरे	अधुना	अपरम्- और भी
अभितः- दोनों ओर	नीचैः- नीचे	यदा = जब	इदानीम्	सत्वरम्- शीघ्र
परितः- चारों ओर		तदा = तब	साम्प्रतम्	अन्यथा- दूसरे
उभयतः- दोनों ओर		कदा = कब	सदा	प्रकार से
सर्वतः- सब ओर		यदि तर्हि= यदि	सर्वदा	सर्वथा- सब प्रकार
कदाचित्- कभी,		तो	इत्थम्- इस प्रकार	से
किसी समय		मुहुर्मुहुः=	से	एव- ही
अचिरम्- अभी		बार-बार	एवम्- इस प्रकार	प्रति- और
एकदा- एक बार		यथा-तथा= जैसा		अलम्- बस, समर्थ
सकृत्- एक बार		वैसा		च- और
सहसा- अचानक		यथापि तथापि=		न- नहीं
सदा- हमेशा		जैसे भी वैसे भी		मा- मत
इतस्ततः- इधर-उधर				अतः- इसलिए
कुतः- कहाँ से				इति- इस प्रकार
नक्तम्- रात				उच्चैः- ज़ोर से
दिवा- दिन				पुनः- फिर
अद्य- आज				तूष्णीम्- चुपचाप
ह्यः- बीता हुआ कल				तु- तो
श्वः- आने वाला कल				परम्- परन्तु
वृथा- व्यर्थ				कथम्-कैसे
समीपे- पास में				अनृतम्- झूठ
दूरे - दूर				ततः- तत्पश्चात्
				परस्परम्-आपस में
				इव- के समान

अभ्यासः

1. अधोलिखितानि वाक्यानि पठित्वा अव्ययपदानि चित्वा लिखत —

अव्ययपदानि

- | | |
|--|---------|
| (i) एकदा तस्य भार्या पितुर्गृहं प्रति चलिता। | — |
| (ii) भवान् कुतः भयात् पलायितः। | — |
| (iii) तत्र गम्यताम्। | — |
| (iv) त्वं सत्वरं चल। | — |
| (v) तेन सदृशं न अस्ति। | — |
| (vi) गीता सुगीता च वदतः। | — |
| (vii) यदा सः पठति तदा एव शोभते। | — |
| (viii) तापसौ लवकुशौ ततः प्रविशतः। | — |
| (ix) अलम् अतिदाक्षिण्येन। | — |
| (x) अहम् अपि श्रावयामि। | — |

2. उचिताव्ययपदैः रिक्तस्थानानि पूरयत —

मञ्जूषा

सर्वत्र, एव, इति, ननु, एवम्, तत्र, उच्चैः, तथापि, बहुधा, मा

- | | |
|--|--------------------|
| (i) मम गुरुः | भगवान् वाल्मीकिः। |
| (ii) कः | भणति? |
| (iii) कुपिता सा | वदति। |
| (iv) त्वं | गच्छ। |
| (v) यूयं चापलं | कुरुत। |
| (vi) कृषीवलः बहुवारं प्रयत्नमकरोत् | वृषः नोत्थितः। |
| (vii) कृषकः बलीवर्द | पीडयति। |
| (viii) बहूनि अपत्यानि मे सन्ति | सत्यम्। |
| (ix) सर्वेषु अपत्येषु जननी तुल्यवत्सला | । |
| (x) | जलोपप्लवः सञ्जातः। |

3. विपर्ययाव्ययपदैः सह योजयत —

यत्र

यथा

यथैव

यदा

यदैव

यावत्

अत्र.....

यदि

4. उचितार्थैः सह मेलनं कुरुत —

- | | |
|-------------|----------------|
| (i) पुरा | नहीं/मत |
| (ii) उच्चैः | हमेशा |
| (iii) नूनम् | परंतु |
| (iv) इत्थम् | ही |
| (v) सर्वथा | इस प्रकार |
| (vi) एवम् | सब प्रकार से |
| (vii) एव | इस प्रकार से |
| (viii) परम् | निश्चय |
| (ix) सदा | ज़ोर से |
| (x) मा | प्राचीनकाल में |

5. उचिताव्ययपदैः सह रिक्तस्थानानि पूरयत —

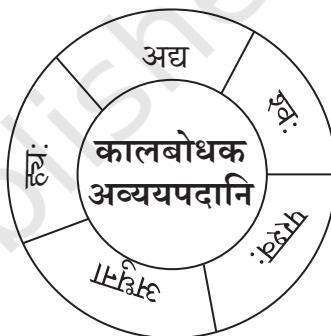
मञ्जूषा

यथा-तथा,	यदि-तहि,	यथैव-तथैव,	यावत्-तावत्,	यत्र-तत्र।
----------	----------	------------	--------------	------------

- (i) लवः कुशः।
- (ii) अहं कृष्णवर्णः त्वं किं गौराङ्गः!
- (iii) गुरुः वदति शिष्यः करोति।
- (iv) वृक्षाः खगाः।
- (v) लता आगच्छति त्वं तिष्ठ।

6. उदाहरणानुसारं लिखत —

- (i) श्वः सोमवासरः.....
- (ii)
- (iii)
- (iv)
- (v)



7. पर्यायाव्ययपदानि लिखत —

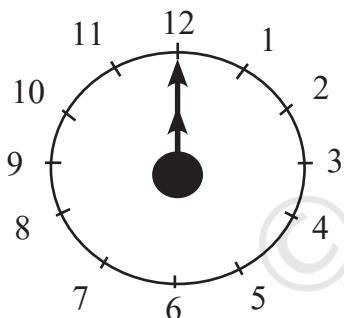
	नन्		सम्प्रति	

10

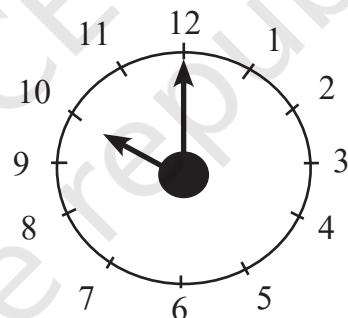
समयः

छात्राः एतानि उदाहरणानि पश्यन्तु—

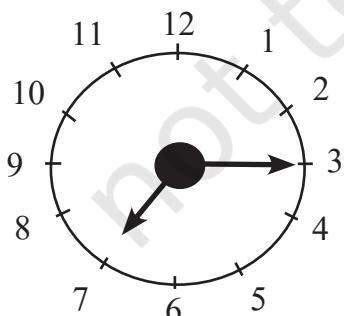
- अधुना दशवादनं संवृत्तम्।
- सार्धदशवादने अहं बहिः गच्छामि
- इदानीं रात्रेः नववादनम्।
- पादोनदशवादने शत्र्यां गच्छामि।
- माता — पुत्र! षड्वादनं जातम्!
- पुत्र — आम् मातः। उत्तिष्ठामि। मया तु सार्धसप्तवादने विद्यालयं प्रति गन्तव्यम् अस्ति।
- सम्प्रति अष्टवादनं जातम्।
- एकादशवादने मित्रम् आगच्छति।



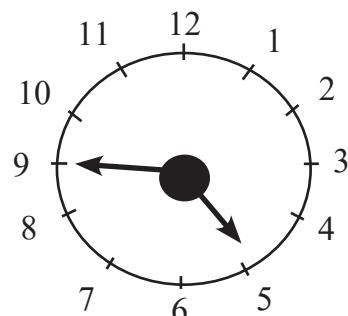
द्वादशवादनम्



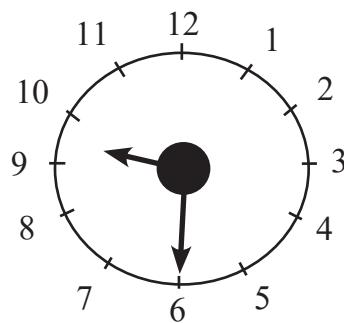
दशवादनम्



सपादसप्तवादनम्



पादोनपञ्चवादनम्



सार्धनवादनम्

अभ्यासः

1. अधोलिखितवाक्येषु उदाहरणानुसारं समयबोधकेषु पदेषु रिक्तस्थानानि पूरयत—
उदाहरणम्—

द्वितीयरेलवाहनं (10:15) वादने जयपुरं प्राप्नोति।

द्वितीयरेलवाहनं सपाददशवादने जयपुरं प्राप्नोति।

- (i) पुरुषोत्तम-एक्सप्रेस इति रेलयानं (9:30) वादने पुरीतः प्रस्थानं करोति।
- (ii) चेतक-एक्सप्रेस इति रेलयानं (4:45) वादने दिल्लीम् आगच्छति।
- (iii) हावड़ा-एक्सप्रेस (11:00) वादने हावड़ास्थानकं प्राप्नोति।
- (iv) रेलयानमेकं (8:15) उत्तराञ्चलं प्रति गच्छति।

2. अधोलिखितवाक्येषु उदाहरणानुसारं समयबोधकेषु पदेषु रिक्तस्थानानि पूरयत—
उदाहरणम्—

माता प्रातः (5:00) वादने उत्तिष्ठति।

माता प्रातः पञ्चवादने उत्तिष्ठति।

- (i) राहुलः प्रातर्भ्रमणाय (6:15) वादने उद्यानं गच्छति।
- (ii) मल्लिका (7:30) वादने प्रातराशं करोति।
- (iii) अनन्या (5:45) वादने क्रीडति।
- (iv) सर्वे (10:00) वादने शयनं कुर्वन्ति॥

3. अधोलिखितवाक्येषु समयबोधकेषु पदेषु रिक्तस्थानानि पूरयत —
उदाहरणम् —

प्रातः (7:00) वादनतः (7:45) वादनपर्यन्तं
विद्यालये प्रार्थनासभा भवति।

प्रातः सप्तवादनतः: पादोनाष्टवादनपर्यन्तं विद्यालये प्रार्थनासभा भवति।

(i) (8:15) वादनतः (9:00) वादनपर्यन्तं
विज्ञानविषयस्य कालांशः भवति।

(ii) वर्य (9:00) वादनतः (9:45) वादनपर्यन्तं
गणितविषयं पठामः।

(iii) (2:45) वादनतः (3:30) वादनपर्यन्तं
हिन्दीभाषाकालांशः भवति॥

(iv) संस्कृतशिक्षकः (10:15) वादने अध्यापयति।

4. अधोलिखितवाक्येषु समयबोधकेषु पदेषु रिक्तस्थानानि पूरयत —
उदाहरणम् —

छात्रः (5:00) वादने उत्तिष्ठति (6:15) वादने
व्यायामं करोति।

छात्रः पञ्चवादने उत्तिष्ठति सपादषड्वादने व्यायामं करोति।

(i) छात्रः (7:30) वादने प्रातराशं कृत्वा (9:45)
वादने विद्यालयं गच्छति।

(ii) (4:00) वादने गृहमागत्य (4:30)
वादनपर्यन्तं विश्रामं करोति।

(iii) (5:00) वादने भोजनं कृत्वा (9:30)
वादनपर्यन्तम् अध्ययनं करोति।

(iv) रात्रौ (9:45) वादनतः (5:00) वादनपर्यन्तं
शयनं करोति।



11

वाच्यम्

बालकाः! एतानि उदाहरणानि ध्यानेन पठन्तु—

(क)

बालकः पाठं पठति।	—
छात्रः लेखं लिखति।	—
कृषकः कार्यं करोति।	—
शिक्षकः पाठयति।	—
श्रमिकः पाषाणं त्रोटयति।	—
बालिका नृत्यति।	—
धावकः धावति।	—
क्रीडकः क्रीडति।	—
अहं गृहं गच्छामि।	—
आवां भ्रमावः।	—
वयं कार्यं कुर्मः।	—
त्वं किं करोषि?	—
युवां कुत्र गच्छथः?	—
यूयं कन्दुकं क्रीडथा।	—
माता भोजनं पचति।	—
पिता आपणं गच्छति।	—
मम मित्रं चलचित्रं पश्यति।	—
अविवेकी वृक्षान् कृन्तति।	—
लता कथां शृणोति।	—
तृषार्तः जलं पिबति।	—
बुभुक्षितः भोजनं करोति।	—
बालिका गीतं गायति।	—
शिशुः रोदिति।	—

(ख)

बालकेन पाठः पठ्यते।
छात्रेण लेखः लिख्यते।
कृषकेण कार्यं क्रियते।
शिक्षकेण पाठ्यते।
श्रमिकेण पाषाणः त्रोट्यते।
बालिकया नृत्यते।
धावकेन धाव्यते।
क्रीडकेन क्रीड्यते।
मया गृहं गम्यते।
आवाभ्यां भ्रम्यते।
अस्माभिः कार्यं क्रियते।
त्वया किं क्रियते?
युवाभ्यां कुत्र गम्यते?
युष्माभिः कन्दुकं क्रीड्यते।
मात्रा भोजनं पच्यते।
पित्रा आपणं गम्यते।
मम मित्रेण चलचित्रं दृश्यते।
अविवेकिना वृक्षाः कर्त्यन्ते।
लतया कथा श्रूयते।
तृषार्तेन जलं पीयते।
बुभुक्षितेन भोजनं क्रियते।
बालिकया गीतं गीयते।
शिशुना रुद्यते।

अहं स्वपिमि	—	मया सुप्यते।
त्वं पाठं स्मरसि।	—	त्वया पाठः स्मर्यते।
सः कथां कथयति।	—	तेन कथा कथ्यते।

उपरि उभयोः स्थानयोः कथनस्य भावः एकः एव अस्ति परं कथनस्य शैली भिन्ना अस्ति। प्रथमे 'क' खण्डे वाक्येषु कर्तुः प्राधान्यम् अस्ति, क्रियारूपाण्यपि कर्तृपदानुसारं प्रचलन्ति। परं 'ख' खण्डे कर्मणः भावस्य वा प्राधान्यम् अस्ति, अत्र क्रियारूपाणि अपि कर्मपदानुसारं प्रयुज्यन्ते।

अत्र ध्यातव्यम् —

अवधेयांशः—

- कथनस्य काऽपि विशिष्टा विधा वाच्यम् इति कथ्यते।
- वाच्यं त्रिविधं भवति -कर्तृवाच्यं, कर्मवाच्यं भाववाच्यञ्च।
- कर्तृवाच्ये कर्ता प्रधानः भवति, कर्तरि च प्रथमाविभक्तिः प्रयुज्यते, कर्मणि द्वितीया विभक्तिः भवति क्रियारूपञ्च कर्तृपदानुसारं प्रचलति।
- कर्मवाच्ये कर्मणः प्रधानता भवति, कर्मणि प्रथमा विभक्तिः भवति कर्तरि च तृतीया विभक्तिः भवति क्रियारूपञ्च कर्मपदानुसारं भवति।
- यस्मिन् वाक्ये कर्म न भवति (अकर्मकधातुषु) तेषां भाववाच्ये परिवर्तनं भवति।
- भाववाच्ये क्रिया प्रथमपुरुषे एकवचने भवति।
- लज्जा, ही, भू, अस्, विद्, स्था, जागृ, वृद्ध, एध, शी, क्षि, भी, जीव, मृ, स्वप्, क्रीड़, खेल्, रम्, रुच्, दीप्, ज्वल् इत्यादयः अकर्मकधातवः सन्ति।

कतिपयक्रियारूपाणि अधः प्रदीयन्ते—

कर्तृवाच्यम्	कर्मवाच्यम्/भाववाच्यम्
पठति	पठ्यते
लिखति	लिख्यते
हसति	हस्यते
तिष्ठति	स्थीयते
ज्वलति	ज्वल्यते
वहति	उद्यते
भवति/अस्ति	भूयते
जागर्ति	जाग्रियते
स्वपिति	सुप्यते
जीवति	जीव्यते

अभ्यासवान् भव — दशमकक्षायाः

सेवते	सेव्यते
लज्जते	लज्ज्यते
खादति	खाद्यते
क्रीडति	क्रीड्यते
रमते	रम्यते
रोचते	रुच्यते
वर्धते	वर्ध्यते
बिभेति	बिभ्यते
पतति	पत्यते
शृणोति	श्रूयते
पिबति	पीयते
पश्यति	दृश्यते
रोदिति	रुद्यते
गच्छति	गम्यते
पठति	पठ्यते
पाठयति	पाठ्यते

अभ्यासः

1. अधोलिखितवाक्येषु कर्तृपदं परिवर्त्य वाक्यानि लिखत —

- (i) बालकः पायसं खादति।
..... पायसः खाद्यते।
- (ii) अहं फलं खादामि।
..... फलं खाद्यते।
- (iii) त्वं किं शृणोषि?
..... किं श्रूयते?
- (iv) आवां चित्राणि पश्यावः।
..... चित्राणि दृश्यन्ते।
- (v) वयं पाठं स्मरामः।
..... पाठः स्मर्यते।

- (vi) बालकौ धावतः।
 धाव्यते।
- (vii) कुकुराः इतस्ततः भ्रमन्ति।
 इतस्ततः भ्रम्यते।
- (viii) गजः शनैः शनैः चलति।
 शनैः शनैः चल्यते।
- (ix) वानरः कूर्दति।
 कूर्द्यते।
- (x) अहं शाटिकां क्रीणामि।
 शाटिका क्रीयते।
2. अधोलिखितवाक्येषु कर्मपदं परिवर्त्य वाक्यानि लिखत—
- (i) श्रमिकः भारं वहति।
 श्रमिकेण उद्घते।
 - (ii) सः पाषाणं त्रोट्यति।
 तेन त्रोट्यते।
 - (iii) सा गीतं गायति।
 तया गीयते।
 - (iv) माता रोटिकां पचति।
 मात्रा पच्यते।
 - (v) पिता फलानि आनयति।
 पित्रा आनीयन्ते।
 - (vi) सेवकः सेवां करोति।
 सेवकेन क्रियते।
 - (vii) चिकित्सकः उपचारं करोति।
 चिकित्सकेन क्रियते।
 - (viii) नीलिमा पाठं स्मरति।
 नीलिमया स्मर्यते।

अभ्यासवान् भव — दशमकक्षायाः

- (ix) अहं गृहं गच्छामि।
मया गम्यते।
- (x) आवां लेखान् लिखावः।
आवाभ्यां लिख्यन्ते।

3. अधोलिखितवाक्येषु क्रियापदपरिवर्तनं कृत्वा वाक्यानि लिखत —

- (i) अहं जलं पिबामि।
मया जलं ।
- (ii) आवां विद्यालयं गच्छावः।
आवाभ्यां विद्यालयः ।
- (iii) वयं ग्रामं गच्छामः।
अस्माभिः ग्रामः ।
- (iv) त्वं फलानि खादसि।
त्वया फलानि ।
- (v) छात्रः अध्ययनं करोति।
छात्रेण अध्ययनं ।
- (vi) अहं श्रान्तः भवामि।
मया श्रान्तः ।
- (vii) बालकः क्रीडति।
बालकेन ।
- (viii) शिष्यः गुरुं सेवते।
शिष्येण गुरुः ।
- (ix) पाचकः भोजनं पचति।
पाचकेन भोजनं ।
- (x) धावकः धावति।
धावकेन ।



अशुद्धिसंशोधनम्

अध्यापक: — ‘तुम सब पुस्तक पढ़ो’ – अस्य वाक्यस्य संस्कृतभाषायाम् अनुवादं कुरुत।
(छात्राः विचिन्तयन्ति)

अध्यापक: — कृतम् किम्?
(छात्राः विचारमग्नाः)

अध्यापक: — उमेश! भवान् वदतु।

उमेश: — यूयं पुस्तकं पठन्तु।

अध्यापक: — ‘यूयं पुस्तकं पठन्तु’ इति अशुद्धं वाक्यम्। अमित! उत्तिष्ठ। शुद्धं करोतु।

अमित: — यूयं पुस्तकं पठत।

अध्यापक: — अतिसुन्दरम्। एतद् एव शुद्धं वाक्यम्।

छात्राः — आम्।

अध्यापक: — संस्कृते बहूनि कारणानि भवन्ति यैः वाक्यानि अशुद्धानि भवन्ति।
(किञ्चित् विरम्य)

अध्यापक: — किं भवन्तः जानन्ति अशुद्धयः कियत्यः भवन्ति। पश्यन्तु
(अध्यापकः श्यामपट्टे लिखति।)

1. कर्तृक्रिययोः अशुद्धयः—

अशुद्धम् वाक्यम्	शुद्धम् वाक्यम्
------------------	-----------------

- | | |
|--|--|
| (i) <u>त्वं</u> पाठं <u>पठति</u> । | — त्वं पाठं पठसि। |
| (ii) <u>ते</u> लेखं <u>लिखति</u> । | — ते लेखं लिखन्ति। (पुलिङ्गे)
ते लेखं लिखतः। (स्त्रीलिङ्गे) |
| (iii) <u>वयं</u> भोजनं <u>खादामि</u> । | — वयं भोजनं खादामः। |

अभ्यासवान् भव — दशमकक्षायाः

- (iv) यूयं बहिः गच्छा — यूयं बहिः गच्छता
(v) त्वं लेखं लिखतु। — त्वं लेखं लिख।
(vi) युवां भोजनं खादताम्। — युवां भोजनं खादतम्।
(vii) आवां खेलनाय गच्छामः। — आवां खेलनाय गच्छावः।
(viii) अहं तत्र गमिष्यामः। — अहं तत्र गमिष्यामि।
(ix) सः एव बुद्धिमान् सन्ति। — सः एव बुद्धिमान् अस्ति।
(x) तौ उपवने क्रीडावः। — तौ उपवने क्रीडतः।
(xi) ताः भोजनं पचति। — ताः भोजनं पचन्ति।

2. विशेषणविशेष्ययोः अशुद्धयः—

- (i) चतुरः बालाः वदन्ति — चतुराः बालाः वदन्ति।
(ii) एकः कन्या एव एवं वदति। — एका कन्या एव एवं वदति।
(iii) नीलः गगनं शोभते। — नीलं गगनं शोभते।
(iv) कुशला बालाः एव प्रश्नं पृच्छन्ति। — कुशला: बालाः एव प्रश्नं पृच्छन्ति।
(v) मधुरं फलानि खाद। — मधुरं फलं खाद।
(vi) कुशलः बालाः एव सः। — कुशलः बालः एव सः।
(vii) सुन्दराणि चित्रं सः रचयति। — सुन्दराणि चित्राणि सः रचयति।
(viii) तत् फलानि मधुराणि सन्ति। — तानि फलानि मधुराणि सन्ति।
(ix) ते बालिकाः बुद्धिमत्यः सन्ति। — ताः बालिकाः बुद्धिमत्यः सन्ति।

3. लिङ्गसम्बन्ध—अशुद्धयः—

- (i) ते मम मित्राः सन्ति। — तानि मम मित्राणि सन्ति।
(ii) फलाः करण्डके सन्ति। — फलानि करण्डके सन्ति।
(iii) वृक्षाणि हरिताः सन्ति। — वृक्षाः हरिताः सन्ति।
(iv) उपवने पुष्पाः सन्ति। — उपवने पुष्पाणि सन्ति।
(v) शाखेषु खगाः सन्ति। — शाखासु खगाः सन्ति।
(vi) देवालयासु देवाः वसन्ति। — देवालयेषु देवाः वसन्ति।

- (vii) उपवनः सुन्दरम् अस्ति। — उपवनं सुन्दरम् अस्ति।
- (viii) वनः अतिविस्तृतम् अस्ति। — वनम् अतिविस्तृतम् अस्ति।
- (ix) खगानि आकाशे उड्डयन्ते। — खगाः आकाशे उड्डयन्ते।
- (x) राधाया: ग्रीवम् शोभना अस्ति। — राधायाः ग्रीवा शोभना अस्ति।

4. वाच्यसम्बन्ध—अशुद्धयः—

- (i) सः पाठः पठ्यते। — तेन पाठः पठ्यते।
- (ii) तेन फलानि खाद्यते। — तेन फलानि खाद्यन्ते।
- (iii) त्वम् लेखः लिख्यते। — त्वया लेखः लिख्यते।
- (iv) त्वया ग्रन्थान् पठ्यन्ते। — त्वया ग्रन्थाः पठ्यन्ते।
- (v) त्वया भोजनं करोषि। — त्वया भोजनं क्रियते।
- (vi) मया पाठाः स्मरामि। — मया पाठाः स्मर्यन्ते।
- (vii) तया कार्यं क्रियन्ते। — तया कार्यं क्रियते।
- (viii) अहं नियमाः पाल्यन्ते। — मया नियमाः पाल्यन्ते।
- (ix) राधा गीतं गायति। — राधा गीतं गायति।
- (x) अमितेन प्रातः उत्तिष्ठति। — अमितेन प्रातः उत्थीयते।

5. उपपदसम्बन्ध—अशुद्धयः—

- (i) सीता रामस्य सह वनम् अगच्छता। — सीता रामेण सह वनम् अगच्छत्।
- (ii) सः ग्रामस्य प्रति गच्छति। — सः ग्रामं प्रति गच्छति।
- (iii) राधा मात्रे सदृशी अस्ति। — राधा मात्रा सदृशी अस्ति।
- (iv) पिता पुत्रे क्रुद्यति। — पिता पुत्राय क्रुद्यति।
- (v) सः अश्वेन पतति। — सः अश्वात् पतति।
- (vi) सः विद्यालयेन आगच्छति। — सः विद्यालयात् आगच्छति।
- (vii) वयं ग्रामे गमिष्यामः। — वयं ग्रामं गमिष्यामः।
- (viii) बालकः कुक्कुरेण बिभेति। — बालकः कुक्कुरात् बिभेति।
- (ix) पिता पुत्राय विश्वसिति। — पिता पुत्रे विश्वसिति।
- (x) माता पुत्रीं स्निह्यति। — माता पुत्रां स्निह्यति।

6. वचनसम्बन्धि—अशुद्धयः—

- (i) सः पाठं पठन्ति। — सः पाठं पठति ।
- (ii) वयं लेखं लिखामि। — वयं लेखं लिखामः।
- (iii) त्वं कुत्र गच्छथ। — त्वं कुत्र गच्छसि।
- (iv) ते पाठं स्मरति। — ते पाठं स्मरन्ति।
- (v) यूयं तत्र गच्छतम्। — यूयं तत्र गच्छत।
- (vi) सर्वे शक्तिमन्तः अस्ति। — सर्वे शक्तिमन्तः सन्ति।
- (vii) त्वया सर्वाणि कार्याणि करणीयम्। — त्वया सर्वाणि कार्याणि करणीयानि।
- (viii) ताः कन्याः तत्र अस्ति। — ताः कन्याः तत्र सन्ति।
- (ix) तौ बालकौ गच्छति। — तौ बालकौ गच्छतः।
- (x) ते बालिके पठन्ति। — ते बालिके पठतः।

7. संख्यासम्बन्धि—अशुद्धयः—

- (i) त्रयः बालिकाः वार्तालापं कुर्वन्ति। — तिसः बालिकाः वार्तालापं कुर्वन्ति।
- (ii) चत्वारः बालिकाः क्रीडन्ति। — चतसः बालिकाः क्रीडन्ति।
- (iii) एका पुरुषः कार्यं करोति। — एकः पुरुषः कार्यं करोति।
- (iv) त्रीणि सैनिकाः देशं रक्षन्ति। — त्रयः सैनिकाः देशं रक्षन्ति।
- (v) पञ्चा बालकाः पठन्ति। — पञ्च बालकाः पठन्ति।
- (vi) द्वे बालकौ खादतः। — द्वौ बालकौ खादतः।
- (vii) त्रयः पुस्तकानि सन्ति। — त्रीणि पुस्तकानि सन्ति।
- (viii) एकः पात्रं तत्र अस्ति। — एकं पात्रं तत्र अस्ति।
- (ix) त्रीणि पुरुषाः एव कार्यं कुर्वन्ति। — त्रयः पुरुषाः एव कार्यं कुर्वन्ति।
- (x) चत्वारः कन्याः प्रसीदन्ति। — चतसः कन्याः प्रसीदन्ति।

8. अन्या: अशुद्धयः—

- (i) राधा श्वः गच्छति। — राधा श्वः गमिष्यति।
- (ii) बालकः ह्यः गच्छति। — बालकः ह्यः अगच्छत्।
- (iii) भवान् किं कथयसि। — भवान् किं कथयति।

- (iv) रमा श्वः करोति । — रमा श्वः करिष्यति।
 (v) सः ह्यः न पठति । — सः ह्यः न अपठत्।

अभ्यासः

1. अधोलिखितानि वाक्यानि शुद्धानि कुरुत —

- (i) वयं चित्रं पश्यन्ति।
 (ii) भवान् भोजनं खाद।
 (iii) त्वं पाठं स्मरतु।
 (iv) सः पीतः वस्त्रं धारयति।
 (v) त्रीणि वृक्षाः तत्र शोभन्ते।
 (vi) ताः महिलाः न गमिष्यति।
 (vii) त्वम् किं क्रियते।
 (viii) पिता श्वः आगच्छति।
 (ix) युष्माभिः किं पठन्ति।
 (x) सः तत्र न सन्ति।
 (xi) अमितेन एतत् कार्यं करोति।
 (xii) युं तत्र न गन्तव्यम्।
 (xiii) मया एतानि फलानि खादितव्यम्।
 (xiv) कन्याः पाठं पठति।
 (xv) अम्बा भोजनं पचन्ति।
 (xvi) तेन भोजनं खादनीयानि।
 (xvii) अम्बा तत्र सन्ति।
 (xviii) त्वम् जलं पानीयम्।
 (xix) ते लेखान् लिखति।
 (xx) अस्माभिः फलानि खाद्यते।



13

मित्रिताभ्यासः

अभ्यासः I

1. अधोलिखितम् अनुच्छेदं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत—

पठनम् अतीव अरुचिकरं मन्यमानः सुवीरः हतोत्साहः भूत्वा कक्षस्य एकस्मिन् कोणे विचारमग्नः अतिष्ठत् । तस्य मनसि असफलतायाः कारणात् आत्मघातस्य भावना जागृता । दुःखितः भूत्वा आत्मचिन्तनं कुर्वन् सः भित्तिम् आरोहन्तम् एकं पिपीलकं पश्यति, यः पुनः पुनः पतित्वा अपि हतोत्साहितः न भवति, अपि तु सततं प्रयासेन सः अन्ततः भित्तिम् आरोहति तत्रस्थं मिष्टानं च प्राप्नोति । तस्य विवेको जागृतो भवति । आत्मनः आत्मघातस्य भावनां निन्दयन् सः चिन्तयति यत् यद्येष पिपीलकः सततप्रयासेन सफलः भवितुं शक्नोति तर्हि न किमपि असम्भवं जगति । एतद्विचिन्त्य सः पठनस्य पुनः पुनरभ्यासं कुर्वन् कक्षायां विशिष्टं स्थानं प्राप्तवान् । तस्मिन् एतत् परिवर्तनं दृष्ट्वा शिक्षकः तस्य प्रशंसां कुर्वन् बोधयति—“वत्स! वीरभोग्या वसुन्धरा । वसुधायां बहूनि वस्तूनि सन्ति परन्तु परिश्रमशीला: वीराः एव तानि प्राप्नुवन्ति ।”

अभ्यासः

(i) एकपदेन उत्तरत—

(क) कः हतोत्साहः अभवत्?

(ख) असफलतायाः कारणात् सुवीरस्य मनसि कस्य भावना जागृता?

(ग) पिपीलकः भित्तौ किं प्राप्नोति?

(घ) सुवीरः पुनः पुनरभ्यासेन किं स्थानं प्राप्तवान्?

(ii) पूर्णवाक्येन उत्तरत—

(क) सुवीरः आत्मघातस्य भावनां निन्दयन् किं चिन्तयति?

(ख) के वसुधायां वस्तूनि प्राप्नुवन्ति?

(iii) यथानिर्देशम् उत्तरत —

(क) ‘सः अन्ततः भित्तिम् आरोहति’- अत्र किम् अव्यय-पदम्?

(ख) ‘संसारे’ इति पदस्य किं समानार्थकपदम् अनुच्छेदे प्रयुक्तम्?

(ग) ‘तस्य विवेकः जागृतः अभवत्’- अत्र किं कर्तृपदम्?

(घ) ‘वसुधायां बहूनि वसूनि सन्ति’- अत्र किं विशेषणपदम्?

2. ‘आत्मघातः कस्याः अपि समस्यायाः समाधानं न भवति’ एतद्विषयम् अधिकृत्य
एकम् लघुम् अनुच्छेदं लिखत —

.....
.....
.....
.....
.....

3. ‘पठनस्य के लाभाः’ - इति वर्णनं कुर्वन्तः मित्रं प्रति पत्रमेकं लिखत —

.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....

4. सन्धिच्छेदः सन्धिः वा क्रियताम्—

(i) हतोत्साहः +

(ii) विवेकः+जागृतः

अभ्यासवान् भव — दशमकक्षायाः

(iii) सः+अन्ततः+

(iv) एतद्विचिन्त्य

5. समासं विग्रहं वा कृत्वा वाक्यानि पुनः लिखत —

(i) सुवीरः हतः उत्साहः यस्य सः भूत्वा एकस्मिन् कोणे तिष्ठति ।

(ii) तस्य मनसि आत्मधातस्य भावना जागृता ।

(iii) सः अभ्यासं कुर्वन् कक्षायां विशिष्टं स्थानं प्राप्तवान् ।

(iv) वत्स! वीरैः भोग्या वसुन्धरा ।

6. उचित-प्रत्ययप्रयोगेण रिक्तस्थानानि पूर्यत —

(i) पठनम् अरुचिकरं (मन्+शानच्) छात्राः सफलाः न भवन्ति ।

(ii) सततप्रयासेन मन्दोऽपि सफलः (भू+तुमन्) शक्नोति ।

(iii) अस्मिन् वर्षे अहम् कक्षायां विशिष्टं स्थानं। (प्र+आप+कतवतु)

(iv) पुनः पुनः पतित्वा अपि हतोत्सहितः न। (भू+तव्यत्)

7. प्रदत्तवाक्यानां वाच्यपरिवर्तनम् कृत्वा लिखत —

(i) सुवीरः एकस्मिन् कोणे तिष्ठति ।

(ii) पिपीलकः अन्ततः भित्तिम् आरोहति ।

(iii) शिक्षकेण तस्य प्रशंसा क्रियते ।

(iv) परिश्रमशीलैः वीरैः एव वसूनि प्राप्यन्ते ।

8. प्रदत्तवाक्यानां संस्कृतभाषया अनुवादं कुरुत —

(i) उसका विवेक जागृत हो जाता है ।

(ii) उसने वृक्ष पर चढ़ते हुए साँप को देखा ।

(iii) हमें पुनः पुनः पाठों का अभ्यास करना चाहिए।

(iv) मुझे पढ़ना अच्छा लगता है।

9. प्रदत्तानि वाक्यानि शुद्धानि कृत्वा पुनः लिखत—

- (i) बालकः एकस्मिन् कोणे तिष्ठति ।
- (ii) सः भित्तिम् आरोहन्तं पिपीलकं पश्यति ।
- (iii) वसुधायां बहूनि वसूनि सन्ति ।
- (iv) अहम् उत्साहितः भूत्वा तत्रागच्छम् ।

अभ्यासः II

1. लिखितमनुच्छेदं पठित्वा निर्देशानुसारं प्रश्नान् उत्तरत—

वयं सर्वे सुखम् इच्छामः । कोऽपि दुःखं नैव इच्छति । अतः दुःखानां विनाशः कथं भवति, इति ज्ञातव्यम् । गीतायाम् अर्जुनं प्रति श्रीकृष्णः अकथयत्, ‘प्रसादे सर्वदुःखानां हानिरस्योपजायते ।’ अतः सर्वेषां दुःखानाम् अभावस्य कृते मनसः प्रसन्नता अत्यावश्यकी वर्तते । विपरीतपरिस्थितिषु ये धैर्यं न त्यजन्ति ते सर्वदा आन्तरिक-प्रसन्नतायाः माध्यमेन प्रतिकूलपरिस्थितीः विरुद्ध्य विजयम् अधिगच्छन्ति । प्रियजनस्य रुणतायां ये सेवां कृत्वा प्रसन्नाः भवन्ति ते न केवलम् प्रियजनस्य दुःखस्य अपि तु स्वदुःखस्य अपि विनाशं कृत्वा भूयोऽपि प्रसन्नाः भवन्ति, परन्तु ये आत्मनः परस्य वा रोगं, समस्यां वा दृष्ट्वा केवलं हाहाकारं कुर्वन्ति तेषां दुःखेषु वृद्धिः एव भवति । अतः विषादः कदापि न कर्तव्यः प्रसन्नता च कदापि न त्याज्या ।

(i) एकपदेन उत्तरत—

- (क) प्रसादे केषां हानिः भवति?
- (ख) ये समस्यायां प्राप्तायां केवलं हाहाकारं कुर्वन्ति तेषां दुःखेषु किं भवति?

(ii) पूर्णवाक्येन उत्तरत—

- (क) प्रतिकूलपरिस्थितीः विरुद्ध्य के विजयम् अधिगच्छन्ति?
- (ख) किं कदापि न कर्तव्यं किम् च न त्याज्यम्?

अभ्यासवान् भव — दशमकक्षायाः

(iii) निर्देशानुसारम् उत्तरत—

(क) ‘पराजयम्’ इति पदस्य किं विलोमपदं गद्यांशे प्रयुक्तम्?

(ख) ‘तेषाम् दुःखेषु वृद्धिः भवति’ इति वाक्यांशे ‘भवति’ इति क्रियापदस्य कर्तृपदं किम् अस्ति?

(ग) ‘सर्वेषाम्’ इति सर्वनामपदम् अत्र कस्मै प्रयुक्तम्?

(घ) ‘स्वस्य’ इति पदस्य किं पर्यायपदम् अत्र आगतम्?

(iv) गद्याशस्य कृते समुचितं शीर्षकं लिखत ।

2. प्रसन्नतायाः महत्त्वविषये पञ्चवाक्यमितम् अनुच्छेदं सरलसंस्कृतेन लिखत-

3. गृहे पितुः रुणतायाः कारणेन भवतः/भवत्याः मित्रम् दुःखितः अस्ति । तं सान्त्वयन्तः पत्रमेकं सरलसंस्कृतेन लिखत—

4. अधोलिखितवाक्येषु रेखांकितपदानि अधिकृत्य सन्धि/सन्धिविच्छेदं कुरुत—

- (i) हा॒हा॒का॒रे॒ण तु दुःखे॒षु व॒द्धिः+एव भवति । +
- (ii) मनसः प्रसन्नता तु अत्यावश्यकी । +
- (iii) कः + अपि दुःखं नैव इच्छति । +
- (iv) विषादः कदापि न कर्तव्यः । +
- (v) वृद्धानां सेवां कृत्वा प्रसन्नो भव । +
- (vi) वयं सर्वे सुखम्+इच्छामः । +

5. रेखांकितपदानां समस्तपदं विग्रहं वा कृत्वा वाक्यानि पुनः लिखत—

- (i) दुःखानां विनाशः कथं भवति इति ज्ञातव्यम् । +
- (ii) नीतिषु लाभालाभौ न विचारणीयौ । +
- (iii) दुःखानाम् अभावः मनसः प्रसन्नतायै आवश्यकः । +

6. उचितप्रत्ययप्रयोगेण रिक्तस्थानानि पूरयत—

- (i) दुःखानां विनाशस्य उपायं ज्ञा + तव्यत् । +
- (ii) प्रियजनस्य रुणता दुःखदायिका । +
- (iii) रोगं दृष्ट्वा केवलं हा॒हा॒कारं न कर्तव्यम् । +
- (iv) त्वं प्रतिकूलपरिस्थितीं वि+रुध्+ल्यप् विजयं प्राप्नुहि । +

7. प्रदत्तवाक्यानां वाच्यपरिवर्तनं कृत्वा लिखत—

- (i) गीतायां श्रीकृष्णः अर्जुनं प्रति कथयति । +
- (ii) वयं सर्वे सुखम् इच्छामः । +
- (iii) विनप्रजनः पितरं सेवते । +
- (iv) पुत्रेण औषधैः पितुः रोगविनाशस्य प्रयत्नः क्रियते । +

8. प्रदत्तवाक्यानां संस्कृतभाषया अनुवादं कुरुत—

(i) हम सभी सुख चाहते हैं।

(ii) मन की प्रसन्नता कभी नहीं छोड़नी चाहिए।

(iii) गीता में श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा।

(iv) वह प्रियजन की रुग्णता में सेवा करके प्रसन्न होता है।

9. प्रदत्तानि वाक्यानि शुद्धानि कृत्वा पुनः लिखत—

(i) मूर्खाः जनाः दुःखं दृष्ट्वा केवलं हाहाकारं करोति।

(ii) दुःखानाम् अभावस्य कृते मनसः प्रसन्नता अत्यावश्यकी वर्तते।

(iii) रोगं समस्यां वा दृष्ट्वा तस्य समाधानं कुरु।

(iv) विषादः कदापि न कर्तव्यः।



आदर्शप्रश्नपत्रम्

समयः— होरात्रयम्

सम्पूर्णाङ्कः-80

सामान्यनिर्देशाः—

- अस्मिन् प्रश्नपत्रे चत्वारः खण्डाः सन्ति।
- प्रत्येकं खण्डम् अधिकृत्य एकस्मिन् स्थाने क्रमेण उत्तराणि लेखनीयानि।
- सर्वेषां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतेन लेखनीयानि।
- प्रश्नपत्रानुसारं प्रश्नसंख्या अवश्यमेव लेखनीया।

खण्ड – ‘क’

(अपठितः अनुच्छेदः – 10 अङ्काः)

1. अधोलिखितम् अनुच्छेदं पठित्वा यथानिर्देशं प्रश्नान् उत्तरत—

बाल्यावस्था जीवनस्य महत्त्वपूर्णः कालः भवति। अस्मिन् समये यदि वयं परिश्रमं कुर्मः तदा जीवनं सुखमयं भवति। विद्यार्थी बाल्यकाले विद्याध्ययने प्रवृत्तः भवति चेत् तस्य परीक्षाफलं शोभनं भवति, विषयस्यापि ज्ञानं सरलतया भवति। सः स्वस्वप्नं पूर्यितुं समर्थो भवति। एवमेव चरित्रनिर्माणे चापि बाल्यकालः महत्त्वपूर्ण स्थानम् आदधाति। बाल्यकाले यादृशाः संस्काराः लभ्यन्ते तादृशः एव आचारः व्यवहारः च आजीवनम् अस्माभिः सह तिष्ठतः। अत एव अस्माभिः बाल्यकाले अवधानपूर्वकं गुणाधानस्य प्रयासः कर्तव्यः। अस्मिन् समये अध्ययनप्राप्तये अपि सावधानमनसा प्रयत्नः करणीयः। शरीरस्वास्थ्यरक्षायै चापि बाल्यकालादेव पौष्टिकाहारः ग्रहीतव्यः व्यायामः चापि करणीयः।

(i) एकपदेन उत्तरत—

$1 \times 2 = 2$

- (क) बाल्यकाले अवधानपूर्वकं कस्य प्रयासः कर्तव्यः?
(ख) किमर्थं पौष्टिकाहारः ग्रहीतव्यः?

(ii) पूर्णवाक्येन उत्तरत—

$2 \times 2 = 4$

- (क) जीवनं कदा सुखमयं भवति?
(ख) कौ अस्माभिः सह सदैव तिष्ठतः?

अभ्यासवान् भव — दशमकक्षायाः

(iii) निर्देशानुसारम् उत्तरत—	1×3=3
(क) ‘अनवधानमनसा’ इत्यस्य विलोमपदं गद्यांशात् चित्वा लिखत।	
(ख) ‘महत्त्वपूर्णः कालः’ इत्यनयोः किं विशेषणपदम्?	
(ग) ‘बाल्यावस्था जीवनस्य महत्त्वपूर्णः कालः भवति’ इति वाक्ये किं क्रियापदम्?	

(iv) प्रदत्तगद्यांशस्य कृते समुचितं शीर्षकं लिखत—	1
---	---

खण्ड – ‘ख’

(रचनात्मक-कार्यम् — 15 अङ्काः)

2. भवान् (अनिमेषः) शैक्षिकयात्रार्थं शिक्षकैः सह अरुणाचलप्रदेशं गन्तुमिच्छति। तदर्थम् अनुमतिं प्राप्तये यात्राव्ययार्थं च रूप्यकाणि लब्धुं पितरं प्रति लिखितं पत्रमिदं मञ्जूषाप्रदत्तपदानां सहायतया पूरयत — $\frac{1}{2} \times 10 = 5$

मञ्जूषा

अनुमतिः, मातृचरणयोः, रूप्यकाणि, यात्राव्ययार्थम्, व्यस्तः, शैक्षिकयात्रार्थम्, छात्राः, कुशली, यथाशीघ्रम्, भवतः

छात्रावासतः:

दिनाङ्कः.....

पूज्य पितृचरणाः

प्रणतयः।

अत्र अहं सकुशलः स्वाध्ययने अस्मि। आशासे भवान् अपि अस्ति। मम विद्यालयात् दशमकक्षायाः अनेके शिक्षकैः सह अरुणाचल-प्रदेशं गन्तुम् इच्छन्ति। यदि भवतः स्यात्, अहमपि तैः सह गन्तुकामोऽस्मि। सहस्ररूप्यकाणि अपि आवश्यकानि। स्वमन्तव्यं सूचयतु। यदि सम्मतिः अस्ति अपि प्रेषयतु। मम प्रणतिः निवेदनीया।

भवतः पुत्रः

अनिमेषः

3. अथःप्रदत्तं चित्रं दृष्ट्वा तदाधारितानि पञ्चवाक्यानि लिखत — 5



.....
.....
.....
.....

अथवा

‘वर्धमानं प्रदूषणम्’ इति विषयमधिकृत्य मञ्जूषातः पदानि चित्वा पञ्चवाक्यात्मकम् अनुच्छेदं लिखत। 5

मञ्जूषा

वैश्विक-उष्णता, यानानां व्यवहारः, विषाक्तवायुः, अवकरक्षेपणम्, जलप्रदूषणम्,
वायुप्रदूषणम्, धर्वनिप्रदूषणम्, कोलाहलः, शुचिपर्यावरणम्, मलिनम्, यन्त्रागारम्

4. अधोलिखित-वाक्यानां संस्कृतेन अनुवादं कुरुत —

- | | |
|----------------------------------|-----------------------------|
| (i) छात्र विद्यालय जाता है। | A student goes to school. |
| (ii) मैं परिश्रम करता हूँ। | I work hard. |
| (iii) तुम क्या करते हो? | What do you do? |
| (iv) पिता के साथ पुत्र घूमता है। | Son walk with his father. |
| (v) शिक्षक पाठ पढ़ाते हैं। | Teacher teaches the lesson. |
-
.....
.....
.....

खण्ड – ‘ग’

(अनुप्रयुक्त-व्याकरणम् — 25 अङ्काः)

5. अधोलिखित-वाक्येषु रेखाङ्कितपदानां सन्धिं विच्छेदं वा कुरुत — $1 \times 4 = 4$

- (i) पिताऽस्य किं तपस्तेपे इत्युक्तिः तत् कृतज्ञता।
- (ii) सेवितव्यो महावृक्षः फलच्छायासमन्वितः।
- (iii) विचित्रे खलु संसारे नास्ति किञ्चन्निरर्थकम्।
- (iv) स एव वह्निः+दहते शरीरम्।

6. अधोलिखित-वाक्येषु रेखाङ्कितपदानां समस्तपदं लिखत — $1 \times 4 = 4$

- (i) यदि अहं कृष्णः वर्णः यस्य सः तर्हि श्रीरामस्य वर्णः कीदृशः?
- (ii) सर्वेषां महत्त्वं विद्यते समयम् अनतिक्रम्य।

अभ्यासवान् भव — दशमकक्षाया:

- (iii) मिलित्वा प्रकृतेः सौन्दर्यम् रक्षणीयम्।
(iv) माता च पिता च वन्दनीयौ।
7. अधोलिखित-वाक्येषु रेखाङ्कितपदेषु प्रकृतिप्रत्ययौ संयुज्य विभज्य वा रिक्तस्थानानि पूरयत— $1 \times 4 = 4$
- (i) श्रमक्लमपिपासोष्णशीतादीनां सहिष्णु+तल्।
(ii) वैज्ञानिकाः कथयन्ति यत् पाषाणशिलानां संघर्षेन कम्पनं जायते।
(iii) बुद्धि+मतुप् सर्वत्र पूज्यते।
(iv) राजसिहंस्य पत्नी बुद्धिमती आसीत्।
8. प्रदत्तेभ्यः विकल्पेभ्यः समुचितं विकल्पं चित्वा वाच्यानुसारं रिक्तस्थानानि पूरयत— $1 \times 3 = 3$
- (i) सत्यं कथ्यते। (त्वम्/त्वाम्/त्वया)
(ii) काकः पिकस्य पालयति। (सन्ततिः/ सन्ततिम्/ सन्तत्या)
(iii) पित्रा पुत्राय विद्याधनं। (ददाति/ दीयते/ यच्छति)
9. कोष्ठके प्रदत्त-समयवाचकान् अङ्गान् संस्कृतेन लिखत— $1 \times 4 = 4$
- (i) बालकः वादने उत्तिष्ठति। (6:00)
(ii) सः विद्यालयं गच्छति। (7:15)
(iii) वादने विद्यालये अर्धाविकाशः भवति। (11:30)
(iv) सः वादने विद्यालयात् गृहम् गच्छति। (1:45)
10. मञ्जूषाप्रदत्त-अव्ययपदैः रिक्तस्थानानि पूरयत— $\frac{1}{2} \times 6 = 3$

मञ्जूषा

यत्र, अद्य, सदा, यदि, तत्र, तर्हि

- (i) परिश्रमं कुर्मः सफलाः भवामः।
(ii) समयस्य सदुपयोगः करणीयः।
(iii) जीवनम् दुर्वहं जातमस्ति।
(iv) हरीतिमा पर्यावरणं शुद्धम्।
11. रेखाङ्कितपदं संशोध्य वाक्यानि लिखत— $1 \times 3 = 3$
- (i) ते नार्यः गल्पं कुर्वन्ति।
(ii) अहं परिश्रमं करोति।
(iii) बालकः कार्यं कुर्वन्ति।

खण्ड – ‘घ’

(पठित-अवबोधनम् – 30 अङ्काः)

12. अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा यथानिर्देशं प्रश्नान् उत्तरत— 5

कश्चन निर्धनो जनः भूरि परिश्रम्य किञ्चिद् वित्तमुपार्जितवान्। तेन वित्तेन स्वपुत्रम् एकस्मिन् महाविद्यालये प्रवेशं दापयितुं सफलो जातः। तत्तनयः तत्रैव छात्रावासे निवसन् अध्ययने संलग्नः समभूत्। एकदा पिता तनूजस्य रुणतामाकर्ण्य व्याकुलो जातः, पुत्रं च द्रष्टुं प्रस्थितः। परमर्थकाश्येन पीडितः सः बसयानं विहाय पदातिरेव प्राचलत्।

(i) एकपदेन उत्तरत— $\frac{1}{2} \times 2 = 1$

- (क) निर्धनो जनः भूरि परिश्रम्य किम् उपार्जितवान्?
- (ख) अर्थकाश्येन पीडितः सः केन प्राचलत्?

(ii) पूर्णवाक्येन उत्तरत— $1 \times 1 = 1$

- (क) निर्धनः जनः वित्तेन किं कृतवान्?

(iii) निर्देशानुसारम् उत्तरत— $1 \times 3 = 3$

- (क) ‘धनम्’ इत्यस्य समानार्थकपदं गद्यांशात् चित्वा लिखत।
- (ख) ‘निर्धनः जनः’ इत्यनयोः किं विशेषणपदम्?
- (ग) ‘परमर्थकाश्येन पीडितः सः बसयानं विहाय पदातिरेव प्राचलत्’ इति वाक्ये ‘सः’ इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?

13. अधोलिखितं पद्यांशं पठित्वा यथानिर्देशं प्रश्नान् उत्तरत— 5

उदीरितोऽर्थः पशुनापि गृह्यते हयाश्च नागाश्च वहन्ति बोधिताः।

अनुकृतमप्यूहति पण्डितो जनः परेञ्जितज्ञानफला हि बुद्धयः॥

(i) एकपदेन उत्तरत— $\frac{1}{2} \times 2 = 1$

- (क) केन उदीरितः अर्थः गृह्यते?
- (ख) का: परेञ्जितज्ञानफलाः भवन्ति?

(ii) पूर्णवाक्येन उत्तरत— $1 \times 1 = 1$

- (क) पण्डितः जनः किम् ऊहति?

(iii) निर्देशानुसारम् उत्तरत— $1 \times 3 = 3$

- (क) ‘अश्वाः’ इति अर्थे पद्ये किं पदं प्रयुक्तम्?
- (ख) ‘मूर्खः’ इत्यस्य विलोमपदं श्लोकात् चित्वा लिखत।
- (ग) ‘हयाश्च नागाश्च वहन्ति बोधिताः’ इति वाक्ये किं क्रियापदम्?

- 14. अधोलिखितं नाट्यांशं पठित्वा यथानिर्देशं प्रश्नान् उत्तरत—** 5
- चाणक्यः — भो श्रेष्ठिन्! प्रीताभ्यः प्रकृतिभ्यः प्रतिप्रियमिच्छन्ति राजानः।
 चन्दनदासः — आज्ञापयतु आर्यः, किं कियत् च अस्मज्जनादिष्यते इति।
 चाणक्यः — भो श्रेष्ठिन्! चन्द्रगुप्तराज्यमिदं न नन्दराज्यम्। नन्दस्यैव अर्थसम्बन्धः
 प्रीतिमुत्पादयति। चन्द्रगुप्तस्य तु भवतामपरिक्लेश एव।
 चन्दनदासः — (सहर्षम्) आर्य! अनुगृहीतोऽस्मि।
 चाणक्यः — भो श्रेष्ठिन्! स चापरिक्लेशः कथमाविर्भवति इति ननु भवता प्रष्टव्याः स्मः।
- (i) एकपदेन उत्तरत— $\frac{1}{2} \times 2 = 1$
- (क) प्रीताभ्यः प्रकृतिभ्यः राजानः किम् इच्छन्ति?
 (ख) कस्य अर्थसम्बन्धः प्रीतिमुत्पादयति?
- (ii) पूर्णवाक्येन उत्तरत— $1 \times 1 = 1$
- (क) चन्दनदासेन (भवता) किं प्रष्टव्यम्?
- (iii) निर्देशानुसारम् उत्तरत— $1 \times 3 = 3$
- (क) ‘दुःखाभावः’ इति अर्थे नाट्यांशे किं पदं प्रयुक्तम्?
 (ख) ‘आर्य अनुगृहीतोऽस्मि’ अत्र ‘अस्मि’ इति क्रियापदस्य कर्तृपदम् किम्?
 (ग) ‘किं कियत् च अस्मज्जनादिष्यते’ इति वाक्ये किं क्रियापदम्?
- 15. अधोलिखितवाक्येषु रेखाङ्कितपदमाधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत—** $1 \times 4 = 4$
- (i) विद्वांस एव लोकेऽस्मिन् चक्षुष्मन्तः प्रकीर्तिताः।
 (ii) समीपे एका नदी प्रवहति।
 (iii) अतिदाक्षिण्येन अलम्।
 (iv) गहनकानने सा व्याग्रं ददर्श।
- 16. अधोलिखितयोः श्लोकयोः अन्वये रिक्तस्थानानि पूर्यत—** $\frac{1}{2} \times 8 = 4$
- (i) त्यक्त्वा धर्मप्रदां वाचं परुषां योऽभ्युदीरयेत्।
 परित्यज्य फलं पक्वं भुड्कतेऽपक्वं विमूढधीः॥
 अन्वयः— यः वाचं त्यक्त्वा अभ्युदीरयेत् (सः)
 पक्वं फलं परित्यज्य अपक्वं।
- (ii) अपत्येषु च सर्वेषु जननी तुल्यवत्सला।
 पुत्रे दीने तु सा माता कृपार्द्धदया भवेत्॥
 अन्वयः— सर्वेषु च जननी भवति। सा माता दीने
 तु भवेत्।

अथवा

अधोलिखितस्य श्लोकस्य भावार्थे रिक्तस्थानपूर्ति मञ्जूषाप्रदत्तपदानां
सहायतया कुरुत— $1 \times 4 = 4$

मञ्जूषा

कार्यम् सुखप्राप्तेः कल्याणम् अन्येषाम्

यः इच्छत्यात्मनः श्रेयः प्रभूतानि सुखानि च।
न कुर्यादहितं कर्म सः परेभ्यः कदापि च ॥

भावार्थः—यः नरः आत्मनः इच्छति, तस्य अपि
इच्छा अस्ति, सः कृते कदापि अकल्याणकरं न कुर्यात्
इति अवधातव्यम्।

17. अधोलिखितवाक्यानि घटनाक्रमानुसारं लिखत—

$\frac{1}{2} \times 8 = 4$

- (i) बुद्धिमती व्याघ्रभयात् मुक्ता जाता।
- (ii) ग्रामे राजसिंहः नाम राजपुत्रः वसति स्मा।
- (iii) गलबद्धशृगालकः व्याघ्रः सहसा पलायितः।
- (iv) व्याघ्रः शृगालं निजगले बद्ध्वा काननं गतवान्।
- (v) तस्य भार्या पुत्रद्वयोपेता पितुर्गृहं प्रति चलिता।
- (vi) जम्बुकः व्याघ्रं पुनः तत्र गन्तुं प्रेरितवान्।
- (vii) इयं व्याघ्रमारी इति विचिन्त्य भयेन व्याघ्रः पलायितः।
- (viii) सा पुत्रौ उक्तवती—एकं व्याघ्रं विभज्य खादतम्।

18. अधोलिखितवाक्येषु रेखाङ्कितपदानां प्रसङ्गानुसारं शुद्धम् उत्तरं विकल्पेभ्यः
चित्वा लिखत— $1 \times 3 = 3$

- (i) अत्र जीवनं दुर्वहं जातम्।
सरलम्/कठिनम्/जटिलम्
- (ii) संव्यवहाराणां वृद्धिलाभाः प्रचीयन्ते।
संस्काराणाम्/संलापानाम्/व्यापाराणाम्
- (iii) तोयैः अल्पैः अपि तरोः पुष्टिः भवति।
जलैः/त्वग्भिः/दुग्धैः।

परिशिष्टम्

व्यवहार-वाक्यानि

हरि: ॐ / नमो नमः/ नमस्कारः/ प्रणामः!	— Hello!
सुप्रभातम्	— Good morning
सुमध्याह्नम्	— Good afternoon
शुभरात्रिः	— Good night
अस्तु	— Alright/ Okay
कृपया	— Please
धन्यवादः	— Thank you
स्वागतम्	— Welcome
क्षम्यताम्	— Excuse me/ Pardon me/ Sorry
चिन्ता मास्तु	— Don't worry
श्रीमन्	— Sir
मान्या/आर्या	— Lady
साधु-साधु/ समीचीनम्	— Very good
आम्	— Yes
ना	— No
अलम्	— Enough/ Stop
श्रीमन्! अहं जल-पानार्थं गन्तुम् इच्छामि?	— Sir! May I go to drink water?
श्रीमन्! अहं लघुशङ्कार्थं गन्तुम् इच्छामि?	— Sir! May I go to toilet?
श्रीमन्! अहं किम कार्यार्थं गन्तुम् इच्छामि?	— Sir! I want to go for some work?
अहं प्रष्टुम् इच्छामि	— I want to ask something
अहं न जानामि	— I don't know
मया न ज्ञातम्	— I didn't understand
कथमस्ति भवान्/भवती?	— How are you?
आगच्छन्तु	— Come in

उपविशन्तु	— <i>Sit down</i>
उत्तिष्ठन्तु	— <i>Stand up</i>
ज्ञातम् वा ?	— <i>Do you understand?</i>
बहिर्गच्छतु	— <i>Get out</i>
अलं वार्तालापेन/ मा वदत	— <i>Don't talk</i>
पुनः मिलामः	— <i>See you again</i>
जन्मदिनस्य शुभाशयाः	— <i>Happy birthday</i>
नववर्षस्य शुभाशयाः	— <i>Hearty greetings for a happy New Year</i>
सफलतायै अभिनन्दनम्	— <i>Hearty congratulations on your success</i>
शुभाः ते पन्थानः	— <i>Happy journey</i>
नववर्ष नवचैतन्यं ददातु	— <i>Let the new year bring a new life</i>
भवदीयः समारम्भः यशस्वी भवतु	— <i>Wishing the function a grand success</i>
शतं जीव शरदो वर्धमानाः	— <i>May you live for a hundred years</i>
भवतः नाम किम्?	— <i>What is your name?</i>
भवान् कुत्र गच्छति?	— <i>Where are you going?</i>
भवान् कस्यां कक्षायां पठति?	— <i>In which class do you study?</i>
भवतः विद्यालस्य नाम किम्?	— <i>What is the name of your school?</i>
भवान् कुत्र वसति?	— <i>Where do you live?</i>
मम नाम अस्ति	— <i>My name is</i>
अपि कुशलं ते/ भवतः/ भवत्या?	— <i>Are you fine?</i>
कथं चिरादागतोऽसि?	— <i>Why did you come late?</i>
किं जातम्?	— <i>What happened?</i>
अपि सर्वं कुशलम्?	— <i>Is everything Okay?</i>

अभ्यासवान् भव — दशमकक्षायाः

भवान् ह्यः कुत्र गतः आसीत्?
भवता/भवत्या किं पृष्टम्?
भवता/ भवत्या किं कथ्यते?
किम् एतत् उचितम्?
भवता/ भवत्या! ज्ञातम् एतत्?
किम् भवान्/भवती एतदर्थम्
अनुमतिः दास्यति?
मम अपि एषः विचारोऽस्ति
सर्वे कुशलिनः सन्ति
शान्तं भव
कलहं मा कुरुत
तूष्णीं भवा।
उपविशत यूयम्
पाठं पठत
पाठं स्मरत
सत्यं वद
प्रियं वद
किं खादसि?
शनैः वद
उच्चैः मा वद
किमर्थम् उच्चैः वदसि?
वृथा मा वद
किमर्थम् एवं जल्पसि?
शीघ्रं कुरु
अलम् अतिविस्तरेण
अलम् अतिविकृत्थनेन

— Where did you go yesterday?
— What have you asked?
— What do you say?
— Is this right?
— Do you! understand this?
— Would you give me permission
for this?
— This is also my opinion
— Everyone is fine
— Be calm
— Don't quarrel
— Be quiet
— Sit down please
— Read this lesson
— Learn this lesson
— Always speak the truth
— Always speak politely
— What do you eat?
— Speak slowly
— Don't speak loudly
— Why do you speak loudly?
— Don't speak unnecessarily
— Why are you beating around
the bush?
— Be quick
— Unnecessary elaboration is not
required
— Unnecessary selfpraise is not
required

अलम् मिथः कलहेन	— <i>Don't quarrel</i>
उच्चैः करतलध्वनिं कुरुत	— <i>Clap loudly</i>
अत्र उपविशत	— <i>Sit here</i>
अवकरम् इतस्ततः मा क्षिपत	— <i>Don't throw garbage here and there</i>
गीतं गायत	— <i>Sing a song</i>
मह्यं चाकलेहं देहि	— <i>Give me a chocolate</i>
अहम् अपि खादितुम् इच्छामि	— <i>I also want to eat</i>
लेखं लिखत	— <i>Write an essay</i>
भोजने किम् अस्ति?	— <i>What is the menu for the meal?</i>
गतः कालः पुनः न आयाति	— <i>The past never comes back</i>
समयस्य सदुपयोगं कुरुत	— <i>Always use your time wisely</i>
पठितस्य अभ्यासं कुरुत	— <i>Practice what you read</i>
मया कार्यं कृतम्	— <i>I have completed my work</i>
मया कार्यं न कृतम्	— <i>I have not completed my work</i>
पाठं स्मृतं न वा ?	— <i>Have you learnt this lesson?</i>
किमर्थं तूष्णीम् असि ?	— <i>Why are you quiet?</i>
त्वरितं कुरुत	— <i>Do it quickly</i>
एतत् उचितं न अस्ति	— <i>This is not fair</i>
निरर्थकं कार्यं मा कुरुत	— <i>Don't do useless work</i>
सुष्ठु उक्तम्	— <i>Well said</i>
सज्जा: भवत	— <i>Be ready</i>
अभ्यासं कुरुत	— <i>Do Practise</i>

ध्येय-वाक्यानि

सेवा अस्माकं धर्मः

शं नो वरुणः

नभः स्पृशं दीप्तम्

योगक्षेमं वहाम्यहम्

विद्याऽमृतमश्नुते

यतो धर्मस्ततो जयः

शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्

निष्ठा धृतिः सत्यम्

विद्याऽमृतमश्नुते

बलस्य मूलं विज्ञानम्

अहर्निशं सेवामहे

सत्यं शिवं सुन्दरम्

आदित्याज्जायते वृष्टिः

बहुजनहिताय बहुजनसुखाय

तत् त्वं पूषन् अपावृणु

ज्ञानविज्ञानविमुक्तये

असतो मा सद्गमय

सत्यमेव जयते

धर्मचक्रप्रवर्तनाय

युद्धं प्रज्ञायै

योऽनूचानः स नो महान्

योगः कर्मसु कौशलम्

जननीजन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी

जलेष्वेव जयामहे

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन

आकाशे शत्रून् जहि

श्रमेव एव जयते

— थल सेना

— जल सेना

— वायु सेना

— भारतीय जीवन बीमा निगम

— राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

— उच्चतम न्यायालय

— अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान परिषद्

— दिल्ली विश्वविद्यालय

— काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

— रक्षानुसंधान विकास संगठन

— डाक तार विभाग

— दूरदर्शन

— भारतीय मौसम विभाग

— आकाशवाणी

— केन्द्रीय विद्यालय संगठन

— विश्वविद्यालय अनुदान आयोग

— केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा संस्थान

— भारत सरकार

— लोक सभा

— सैन्य विद्यालय

— राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान

— भारतीय प्रशासनिक सेवा अकादमी

— नेपाल सरकार

— इण्डोनेशिया जल सेना

— इण्डोनेशिया वायु सेना

— थल सेना में वायु रक्षा विभाग

— श्रम मंत्रालय

संवादः

- 1. निशा**
- नमो नमः सखि! एवं धावन्ती कुत्र गन्तुं तत्परा असि ?
 - गरिमा**
 - सखि! वस्तुतः अत्यन्तं त्वरायामस्मि, अद्य मम विद्यालये सौन्दर्यप्रतियोगिता अस्ति, तत्रैव गमनीयम्।
 - निशा**
 - सौन्दर्यप्रतियोगिताऽस्ति। सौन्दर्ये कीदृशी प्रतियोगिता? एततु विधात्रा प्रदत्तं रूपमेवा विधातुः निर्णये कीदृशी प्रतियोगिता?
 - गरिमा**
 - एततु सर्वथा सत्यं परं विधात्रा प्रदत्तं रूपं कः कथं रक्षति गुणान्वितं च करोति इति अस्य कृते प्रतियोगिता आवश्यकी।
 - निशा**
 - सखि ! त्वं सत्यं वदसि, परं किं केवलं बाह्यरूपमेव महत्त्वपूर्णम्? किम् आन्तरिकगुणानां न किमपि महत्त्वम्?
 - गरिमा**
 - एवं नास्ति सखि! विजेतृनिर्धारणाय सौन्दर्यप्रतियोगितासु बाह्यसौन्दर्येण सह मानवीयगुणानामपि परीक्षणं भवति।
 - निशा**
 - कथमान्तरिकगुणाः परीक्ष्यन्ते इति तु मम जिज्ञासा वर्धते?
 - गरिमा**
 - प्रश्नोत्तरमाध्यमेन, प्रतिभागिनीनां व्यवहारेण च आन्तरिकगुणानां परीक्षणं भवति।
 - निशा**
 - वस्तुतः एव दर्शनीया प्रतियोगिता। किमहमपि त्वया सह प्रतियोगितां द्रष्टुं चलेयम्?
 - गरिमा**
 - आम् आम्। अवश्यमेवा आगच्छ मया सहा शीघ्रं चलावः। प्रतियोगितायाः समयस्तु सञ्जातः।

2. दर्पणः

 - किमर्थं खिन्नाऽस्ति भवती?
 - मेधा**
 - कस्त्वम्? कथं ज्ञातं त्वया?
 - दर्पणः**
 - आश्चर्यम्! भवती मां न जानाति?
 - मेधा**
 - मम मातापितासखिभिरपि अविज्ञातं तथ्यं त्वया अवगतम्। मम कृते तु एतदेव महदाश्चर्यम्।
 - दर्पणः**
 - भो! अहं दर्पणोऽस्मि। भवती मां तव प्रतिरूपमेव अवजानातु।
 - मेधा**
 - किमेवम्?
 - दर्पणः**
 - आम्! प्रायः जनाः निजं सुन्दरतमं रूपं द्रष्टुमिच्छन्ति परं ते न जानन्ति यदहं केवलं यथायथं रूपमेव दर्शयामि।
 - मेधा**
 - उचितं कथितं त्वया। जनाः स्वार्थस्य वशीभूय अस्मान् सततं भ्रामयितुं प्रयतन्ते।
 - दर्पणः**
 - एतदर्थमेव जनाः तथ्यमवगन्तुं न समर्थाः।

- मेधा — सत्यमुक्तं त्वया। वयमपि मिथ्याप्रशंसया भ्रान्ताः भूत्वा तथ्यं विस्मृत्य
अहङ्कारिणः भवामः। त्वमेव तथ्यं ज्ञापयित्वा अस्मभ्यम् आत्ममन्थनस्य
अवसरं प्रयच्छसि।
- दर्पणः — एतदेव मम वास्तविकं प्रयोजनम्।
- मेधा — धन्यवादाः बोधनाया गच्छामि खिन्नतापहरणाया।
अधुना प्रतिदिनं द्रष्टुम् आगमिष्यामि।
- दर्पणः — (विहस्य) शुभास्ते सन्तु पन्थानः।
3. इक्षुदण्डः — भोः निष्प्रवृक्षः! निरन्तरं विशालताम् प्राप्स्यसि मत्समक्षम्। तव फलानि
तु लघूनि कटूनि च। जानासि किं कियत् मधुरं अहम् अस्मि। सर्वान् एव
मधुरसेन पूर्यामि।
- निष्प्रवृक्षः — आम् वस्तुतः एव त्वमतिमधुरसेन युक्तः। जनाः न केवलं खादन्ति
त्वाम् अपि तु तव रसमपि मग्नतया पिबन्ति। परं यदा शरीरं ब्रणयुक्तं
जायते मधुरतायाः प्राचुर्येण तदा मम प्रयोगेण एव त्वचः रोगाः
नश्यन्ति।
- इक्षुदण्डः — कथमेवं भणसि मित्र! अहं तु मधुरतायाः भाण्डारम्। मत्तः एव
गुडशर्करयोः निर्माणं भवति यच्च मिष्ठानानां मूलम्। मम रसपानं तु
ग्रीष्मतापं हरति, एतदर्थं तु आपणे यत्र तत्र सर्वत्र इक्षुरसः विक्रीयते।
- निष्प्रवृक्षः — सत्यं परं तेन मधुरसपानेन मधुमेहरोगिणां व्याधिरपि वर्धते। कथं
विस्मरसि इदं तथ्यम्?
- इक्षुदण्डः — विस्मरामि न परं वस्तुतः। मधुमेहरोगस्य तु अन्यान्यपि बहूनि
कारणानि। मुख्यतः अस्मै रोगाय जीवनचर्या, सन्तुलितभोजनाभाव
श्चेत्यादीनि कारणानि।
- निष्प्रवृक्षः — मित्र! अहं एतन्न कथयामि यत् रोगः। तव कारणेन भवति अपि तु
मधुमेहरोगिणां रोगः। वर्धते यदा तदा तस्य हरणाय ममोपयोगः एव
हितकारी भवति।
- इक्षुदण्डः — आम् एतत्तु सर्वथा सत्यम्। एवम् आवां द्वावेव तापहारकौ उपयोगिनौ
च। अत एव प्रतिवेशिनौ।
4. अड्कुशः — अमित! अमित! आगच्छा शीघ्रम् आगच्छा।
- अमितः — (अमितः न शृणोति)
- अड्कुशः — अमित! भवान् कुत्र अस्ति? किमर्थं न शीघ्रम् आगच्छति।
- अमितः — आगच्छामि। आगच्छामि।
- अड्कुशः — अवश्यमेव अन्तर्जाले कालं वृथा यापयति।

- अमितः — किम् इच्छति भवान् ?
- अड्कुशः — अहं किञ्चित् न इच्छामि, परं भवान् दिवारात्रम् अन्तर्जाले किं करोति ?
कालं वृथा नयति ।
- अमितः — मया कालः वृथा न नीतः ।
- अड्कुशः — अहर्निशम् अस्य प्रयोगं करोति तथापि कथयति- “कालं वृथा न नयामि ।”
- अमितः — आम् । आम् । सत्यं कथयामि अहम्। परियोजनार्थं सामग्रीसञ्चयनं करोमि ।
- अड्कुशः — मृषा मा वदा सामग्रीसञ्चयनम् अर्धहोरापरिमितमेव कालम् अपेक्षते।
भवान् तत्र किञ्चिद् अन्यत् पश्यति ।
- अमितः — अहं किञ्चिद् अन्यत् न पश्यामि ।
- अड्कुशः — अन्तर्जालस्य उचितप्रयोगः एव करणीयः, अतिप्रयोगं तु वर्जयेत् ।
- अमितः — (शिरो नमयित्वा किञ्चिद् न वदति)
- 5. राधा** — मोहिनि! किमर्थं चिन्तिता इव प्रतीयसे ?
- मोहिनी — परं मम पुत्रः अन्यथासमर्थः अस्ति। तस्य कृते विशेषविद्यालयस्य आवश्यकता अस्ति ।
- राधा — किमर्थम् ! अस्माकं वसत्याम् एव सर्वोदयः विद्यालयः वर्तते। तत्रैव प्रवेशं कारयतु ।
- मोहिनी — एतत् कथं सम्भवम् ? एतादृशेभ्यः छात्रेभ्यः विशेषावधानस्य आवश्यकता भवति ।
- राधा: — विशेषविद्यालयः ? न, न, भागिनि! सर्वकारस्य योजना अस्ति सर्वे विद्यार्थिनः सहैव अध्ययनं कुर्वन्तु ।
- मोहिनी — धन्यवादः भगिनि! महर्तीं चिन्ताम् अपसारितवती भवती ।
- राधा — एवं नास्ति । समावेशशिक्षायाः उद्देश्यमस्ति— सर्वे विद्यार्थिनः सर्वेषाम् आवश्यकताम् अवबुध्य परस्परं साहाय्यं कुर्वन्तु ।
- मोहिनी — किमेतत् सत्यम् ? किं राकेशः अपि सामान्यबालकैः सह पठितुं शक्नोति? (विद्यालयस्य.....चलति)
- राधा — अथ किम् ?
- मोहिनी — अहं राकेशस्य शिक्षार्थं चिन्तिता अस्मि ।
- 6. (विद्यालयस्य अवकाशाय घण्टानादः भवति सर्वे छात्राः गृहं प्रति गन्तुमुत्सुकाः धावन्तः इव प्रतीयन्ते परं गिरीशः तु मन्दं मन्दम् एव उद्विग्नमनाः भूत्वा चलति ।)**
- हरीशः — मित्र गिरीश ! त्वम् अवकाशे जातेऽपि गृहं प्रति गन्तुमुत्सुकः किमर्थं नैव दृश्यसे ? अपि कुशलं सर्वम् ?

- गिरीशः — आम् सर्वं कुशलं परं गृहे न कोऽपि अस्ति मह्यं प्रतीक्षारतः। अतः एव मन्दगत्या गच्छामि ।
- हरीशः — किमर्थम्? त्वमेकाकी एवासि गृहे ?
- गिरीशः — आम् स्वपित्रोः अहमेव एकाकी पुत्रः।
- हरीशः — तर्हि मातापित्रोः कश्चिदपि गृहे न भवति किम् ?
- गिरीशः — नैव, मम पितरौ प्रातःकाले कार्यालयं गच्छतः । रात्रौ नववादनात्पूर्वं कोऽपि गृहं नागच्छति ।
- हरीशः — अहो! सत्यमेव चिन्तायाः विषयः। तव पितामहः इत्यादयः कुत्र वसन्ति ?
- गिरीशः — पितामहः पितामही च पितृब्येन सह ग्रामे वसतः। अधुना तानेव प्रार्थयिष्यामि यदागत्य ते सर्वे अत्रैव वसन्तु ।
- हरीशः — आम् पितामहं, पितामहीं, पितृब्यं च सर्वान् ग्रामात् आकारय ।
- गिरीशः — (शीघ्रं गच्छन्) आम् अधुनैव गत्वा दूरभाषेण संवादं करोमि आशास्ति यत् ते ममाग्रहम् अवश्यमेव स्वीकरिष्यन्ति ।
- हरीशः — अत्युत्तमः विचारः। एवमेव कुरु ।
- गिरीशः — अस्तु मित्र! गच्छामि पुनर्मेलनाय ।
- हरीशः — शिवास्ते सन्तु पन्थानः ।
7. (सुमितः अमितः च उपवने भ्रमतः)
- अमितः — सुमित! चिन्तितः दृश्यसे ।
- सुमितः — आम् चिन्तितोऽस्मि ।
- अमितः — किमर्थम् ?
- सुमितः — गणितपरीक्षायां मया न्यूनाः अड्काः प्राप्ताः ।
- अमितः — तेन किम्?
- सुमितः — गणितविषयः तु अनिवार्य-विषयोऽस्ति।
- अमितः — जानामि अहम् ।
- सुमितः — परं मया तु अस्मिन् विषये सदैव काठिन्यम् अनुभूतम् ।
- अमितः — तेन किम्?
- सुमितः — अग्रे किं करिष्यामि ?
- अमितः — किं न जानासि केवलं दशमकक्षापर्यन्तम् एव अस्य विषयस्य पठनम् निवार्यम् ।
- सुमितः — जानामि तु ।
- अमितः — तर्हि किमर्थं त्वं चिन्तामग्नः? चित्रकलां गृहीत्वा स्वयोग्यतां प्रदर्शय ।
- सुमितः — (किञ्चित् न वदति)
- अमितः — भवान् चित्रकलायां निपुणः अस्ति ।

- सुमितः — (शिरः प्रचालयति)
 अमितः — चित्रकलायाः माहात्म्यं तु प्रतिदिनं वर्धते एव ।
 (संवदन्तौ गृहं प्रति गच्छतः)
- 8. शिक्षिका** — भवन्तः सर्वे दशमकक्षायाः छात्राः। किं भवन्तः स्वजीवनलक्ष्यविषये चिन्तितवन्तः ?
 एकः छात्रः — आम् महोदये! अहं गणितविषयं गृहीत्वा अभियान्त्रिकीं पठिष्यामि ।
 (मनोजः)
- शिक्षिका — शोभनम्, मनोजः तु अभियान्त्रिकीं पठिष्यति श्यामे! त्वं किं पठिष्यसि ?
 श्यामा — महोदये! मम रुचिः सङ्गीते अस्ति, अतः अहं सङ्गीतविषयं गृहीत्वा स्नातकपरीक्षां सम्मुखीकरिष्यामि, तदनन्तरं साधनां कृत्वा सङ्गीतक्षेत्रे भविष्यनिर्माणं करिष्यामि ।
- शिक्षिका — बहुशोभनम्! तरुण! शिरः विनमय्य किं चिन्तयसि?
 तरुणः — अहं व्यावसायिक-प्रबन्धनक्षेत्रे (एम.बी.ए.) कर्तुम् इच्छामि परम्.....
- शिक्षिका — परं किम्?
 तरुणः — मम पिता एकः निर्धनः कृषकः, सः व्यावसायिक-प्रबन्धनशिक्षायै अत्यधिकं शुल्कं दातुम् अक्षमः ।
- शिक्षिका — तरुण! एतदर्थं चिन्तां मा कुरु मेधाविनां छात्राणां कृते धनस्य कापि समस्या न भवति। सर्वे वित्तकोषाः उच्चाध्ययनाय ऋणं ददति। त्वं दत्तचित्तो भूत्वा अध्ययनं कुरु तव शुल्कस्य चिन्ता सर्वकारस्य अस्ति। अध्ययनं समाप्य एव ऋणशोधनं कर्तव्यं भविष्यति ।
- तरुणः — सत्यम् महोदये! मम मनसः चिन्ता अपगता। धन्यवादाः ।
- 9. सुमेधा** — (शनैः शनैः किञ्चित् वदति)
- माता — सुमेधे ! शनैः शनैः किं वदसि ?
 सुमेधा — यत् पठितं तत् स्मरामि।
 माता — परं हस्ते पुस्तकं तु न अस्ति।
 सुमेधा — (पुनः स्मर्तुं रता अभवत्)
 माता — प्रथमं स्मर तदनु पुनरावृत्तिं कुरु ।
 सुमेधा — मया स्मृतम् अधुना अभ्यासं करोमि।
 माता — पुनरावृत्तिः तु अनिवार्या ।
 सुमेधा — अध्यापकेन अपि एतत् कथितम् ।
 माता — पुनः पुनः अभ्यासेन विषयः हृदयङ्गमः भवति ।
 सुमेधा — आम्

- माता — किं जानाति भवती, पुनः पुनः अभ्यासेन एव अर्जुनः श्रेष्ठः धनुर्धरः अभवत्।
- सुमेधा — पठितं मया।
- माता — अतः सततम् अभ्यासं कुरु।
10. तन्वी — सखि अवनि! भवती ह्यः विद्यालयं न आगतवती। अपि कुशलिनी त्वम्?
- अवनी — आम् तन्वि! आम् सर्वथा कुशलिनी अस्मि। ह्यः तु पक्षिणां सौन्दर्यं द्रष्टुम् पक्षिविहारं गता आसम्।
- तन्वी — अहो! अत्यद्भुतम् कुत्रास्ति पक्षिविहारः?
- अवनी — भारते अनेके पक्षिविहाराः सन्ति अहं तु दिल्ल्याः समीये ‘नोएडा’ इति नगरम् अगच्छम्।
- तन्वी — के के खगाः दृष्टाः तत्र?
- अवनी — तत्र न केवलं सामान्याः, अपि तु दुर्लभाः खगाः अपि दृष्टाः, यथाकाष्ठकूटः, नीलकण्ठः, विविधाः चटकाः परमधुना वृक्षाणां कर्तनेन वनानां नाशेन च तेषामाश्रयस्थलानि नष्टानि।
- तन्वी — (मध्ये एव) विरम सखि विरम। मम उत्कण्ठा वर्धते।
- अवनी — आम् एताम् अनुभूतिमेव प्राप्तुमहं तत्र गता आसम्।
- तन्वी — आम् सत्यं कथयसि सखि! पक्षिणः यदा पक्षौ प्रसार्य इतस्ततः कूजन्तः उड्हयन्ते तदा तान् दृष्ट्वा अपूर्वा एवानन्दानुभूतिः भवति।
- अवनी — वस्तुतः खेदस्य विषयः अस्माकं पितरः तु कथयन्ति यत् तेषां शैशवावस्थायाम् अनेके खगाः गृहेषु इतस्ततः विचरन्ति स्म।
- तन्वी — वस्तुतः अद्यत्वे नगरेषु तु पक्षिणां दर्शनं प्रायः दुर्लभमेव।
- अवनी — तदैवाधुना पशुपक्षिसंरक्षणाय विविधाः पक्षिविहाराः, अभयारण्यानि च निर्मीयन्ते।



पत्रलेखनम्

(क) अनौपचारिकम् पत्रम्

1. चोरितस्य स्यूतस्य प्राथमिक-सूचनार्थम् आरक्ष्यधिकारिणं प्रति पत्रं लिखता।

आरक्ष्यधिकारि-महोदय!

लाजपतनगर-क्षेत्रम्

नवदेहली

विषयः— चोरितस्य स्यूतस्य प्राथमिक-सूचना।

श्रीमन्,

अनेन पत्रेण अहं भवते एतत् सूचयामि यत् ह्याः प्रातः एकादशा-वादने रेलमैट्रोयानेन विश्वविद्यालयात् अहं लाजपतनगरम् अगच्छम् मार्गे मम स्यूतं चोरितम् अभवत्। यस्मिन् द्विसहस्रं रूप्यकाणि, कार्यालयस्य परिचय-पत्रं, मैट्रोचिटिकापत्रं मम आधार-परिचयपत्रं चासन्। स्यूतस्य वर्णः कृष्णः आसीत्। अहं प्रार्थये यत् यथाशीघ्रं मम स्यूतम् अन्वेष्य मां कृतार्थं करोतु भवान्।

सधन्यवादम्

निवेदकः

अजयः

निवासस्थानम्

—

दूरभाष-संख्या

—

दिनाङ्कः—.....

अभ्यासवान् भव — दशमकक्षायाः

2. चोरिताया: घटिकाया: प्राथमिक-सूचनार्थम् आरक्ष्यधिकारिणं प्रति पत्रं लिखत।

(ख) औपचारिकम् पत्रम्

- विज्ञानविषयं प्राप्तुं प्राधानाचार्यं प्रति आवेदनपत्रम्।

सेवायाम्

प्रधानाचार्यमहोदय!

मीमांसाविद्यालयः, नवदेहली

विषयः- एकादशकक्षायां विज्ञानविषयग्रहणार्थं विशेषानुमतये निवेदनम्।

महोदय,

सविनयं निवेद्यते यदहमस्मिन् विद्यालये प्रथमकक्षातः पठामि। प्रतिवर्षमहम् उत्तमान् अङ्गकान् प्राप्य कक्षायां प्रथमस्थानमेव अधिगच्छामि स्मा। परमस्मिन् वर्षे परीक्षामध्ये एवाहम् अकस्मात् ज्वरग्रस्तः अभवम्। विज्ञानविषयस्य तु परीक्षाऽपि मया चिकित्सालयात् एव परीक्षाकेन्द्रं प्राप्य प्रदत्ता फलतः मया आशानुकूलः परीक्षापरिणामः न प्राप्तः। विद्यालयनियमानुसारं विज्ञानविषय-ग्रहणाय प्रतिशतं केवलम् एकस्य एव अङ्गस्य न्यूनता अस्ति।

महोदय! शैशवादेव मम हार्दिकी इच्छा जीवविज्ञाने शोधं कृत्वा वैज्ञानिकः भवितुमासीत्। परं यदि अहं विज्ञानविषये प्रवेशमेव प्राप्तुमसमर्थः भविष्यामि तदा कथमहं स्वकीयं स्वप्नं सार्थकारं करिष्यामि। अतः मम करबद्धः अनुरोधः अस्ति। यन्मह्यं विज्ञानविषयं पठितुं भवान् अनुमतिं प्रयच्छतु। एतदर्थम् अहं पुनः परीक्षणाय अपि सज्जः अस्मि।

आशासे यत् भवान् मम स्थितिमवगत्य मम विशेषानुरोधं स्वीकरिष्यति।
कृपाकाङ्क्षी

भवदाज्ञाकारी शिष्यः

- अध्ययनं प्रति मातरं समाश्वासयितुं पुत्र्या लिखितं पत्रं मञ्जूषायां प्रदत्तपदैः पूरयित्वा पुनः लिखत—

कुशलम्, प्रतियोगिताः, कुशलिनी, परिणामः, चिन्तिता, मतिम्, आनन्देन, करणीया,
खेलप्रतियोगितासु, कालः

परीक्षाभवनतः

दिनाङ्कः.....

पूज्यमातृचरणाः,

प्रणतीनां शतम्।

अत्र अहं। आशासे भवती पितृमहोदयः च स्तः। मातः!

अहं जानामि यद् भवती मम अर्धवार्षिक-परीक्षापरिणामकारणात् अस्ति।

अभ्यासवान् भव — दशमकक्षायाः

अत्र चिन्ता न। प्रथमसत्रे तु अहंरता आसम्। पठनाय तु
..... एव न आसीत् परम् अधुना तु सर्वाः
समाप्ताः। अद्यारभ्य अहं केवलं पठने एव विधास्यामि आशासे
वार्षिकपरीक्षायां मम भवताम् आशानुकूलः भविष्यति शेषं
सर्वं भवत्याः चरणयोः प्रणामाः
भवत्याः पुत्री
सुकन्या

3. जलसंरक्षणस्य महत्वं वर्णयन्तः मित्रं प्रति लिखितं पत्रं मञ्जूषायां प्रदत्तपदैः
पूर्यित्वा पुनः लिखत—

देशस्य, प्रयतमानाः, अपव्ययम्, विचारयति, जागरूकता, प्रयासः, जानीमः,
जीवनम्, सह, अस्तु

छात्रावासतः

दिनाङ्कः.....

प्रिय मित्र!

सप्रेम नमो नमः,

अत्र कुशलं तत्र। भवतः पत्रं पठित्वा अतीव प्रसन्नताम्
अनुभवामि यत् भवान् मित्रैः जलसंरक्षणप्रचारकार्ये रतोऽस्ति। एषः
तु उत्तमः अस्ति। वयं सर्वे एव यत् जीवने जलस्य महत्वं
तु अतुलनीयम्। जलम् एव इति वयं सर्वे जानीमः परं पुनरपि वयम्
अस्य कुर्मः। अनेन आगामिकाले यद् भीषणं जलसङ्कटं भवेत् इति
कोऽपि न। जलसंरक्षणार्थं अनिवार्या एव। यदि जनाः अत्र
ध्यानं न दास्यन्ति तदा अस्माकं स्थितिरपि अफ्रीकादेशवत् भविष्यति।
यथा ते जलबिन्दुप्राप्त्यर्थं सन्ति तथा एव अस्माकं देशस्य अपि स्थितिः
भविष्यति। अतः जलसंरक्षणार्थं जागरूकता अनिवार्या। शेषं सर्वं कुशलम्। पितृभ्यां
चरणयोः मम् वन्दनं।

भवतः मित्रम्

उमेशः

4. स्वस्थभोजनस्य महत्त्वं वर्णयन्त्याः अग्रजायाः अनुजं प्रति पत्रम्

प्रिय अमित!

सप्रेम नमो नमः।

माता लिखितं पत्रं प्राप्तम्। तेन पत्रेण मया ज्ञातं यत् भवान् सन्तुलितं भोजनं न सेवते, प्रतिदिनं च ‘चाऊमीन-बर्गर’ इति खादति। ईदृशं भोजनं स्वास्थ्याय सम्यक् न अस्ति। कदाचित् तु अस्य सेवनं कर्तुं शक्यते परं प्रतिदिनं त्वरितभोजनस्य सेवनं स्वास्थ्याय हानिकरम्।

स्वास्थ्याय तु सन्तुलितभोजनं ग्रहीतव्यम् एव यतः ‘स्वस्थशारीरे एव स्वस्थमनसः वासः’ भवति अतः भवान् त्वरितभोजनस्य सेवनं मा करोतु। स्वास्थ्यवर्धकभोजनमेव खादतु। अनेन भवान् कदापि रुणः न भविष्यति। भवान् स्वस्वास्थ्यविषये जागरूकः तिष्ठतु इति मे अनुरोधः।

भवतः अग्रजा

अमिता

**5. सन्तुलितभोजनमेव सेवनीयम् इति वर्णयतः अग्रजस्य अनुजां प्रति पत्रं
लिखत—**

परीक्षाभवनतः

दिनाङ्कः.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

भवतः अग्रजः

.....

अभ्यासवान् भव — दशमकक्षायाः

6. प्रतियोगिपरीक्षार्थं सन्नद्धीकरणाय आरम्भतः एव सामान्यज्ञानस्य अभ्यासः करणीयः इति उपदिशतः पितुः पुत्रं प्रति पत्रम्।

जयपुरतः

दिनाङ्कः.....

प्रिय पुत्र अविनाश!

शुभाशिषो लसन्तु।

आशासे त्वं सकुशलः स्वाध्याये रतः असि पुत्र! अहं जानामि परीक्षायां तव प्रस्तुतिः शोभना भवति। त्वं प्रतिवर्षं कक्षायां प्रथमं स्थानं प्राप्नोषि इति अहं जानामि। ग्रीष्मावकाशे त्वं कथितवान् यत् तव लक्ष्यं प्रतियोगिपरीक्षामुत्तीर्य सङ्घलोकसेवा - आयोगक्षेत्रे सेवाप्रदानम् अस्ति। पुत्र! एतल्लक्ष्यं प्राप्तुं बाल्यकालादेव सामान्यज्ञानस्य अध्ययनं करणीयम्। अत एव विषयस्य अभ्यासेन समम् एकहोरार्पयन्तं सामान्यज्ञानं वर्धयितुं प्रतिदिनं सामाचारपत्रं पठ तदा यदि अधुनातः एतल्लक्ष्यं प्राप्तुं नियमितम् अध्ययनं करिष्यसि नूनमेव साफल्यं लप्स्यसे। यदि काऽपि सहायता अपेक्षिता तर्हि अहं करिष्यामि। तव जनकः

आशीषकुमारः

7. जीवने सफलतां लब्धुं परिश्रमस्य महत्त्वं वर्णयन्त्याः मातुः पुत्रीं प्रति पत्रम् पूर्यत—

कानपुरतः

दिनाङ्कः.....

प्रिय पुत्रि!

तव जननी

सुधा

8. स्वदेशस्य संस्कृतिं वर्णयन्तीं विदेशिनीं सखीं प्रति पत्रं लिखत —

9. ‘पुत्रीं रक्ष पुत्रीं पाठ्य’ इति अभियानं कथं सार्थकं भविष्यतीति स्वविचारं प्रकटयन्तः मित्रं प्रति पत्रं लिखत —



अनुच्छेदलेखनम्

(श्रवण-भाषण-कौशल-विकासार्थम्)

1. जन्तुशाला

जन्तुर्नां शाला जन्तुशाला इति कथ्यते। जन्तुशालायाम् अनेके पशवः पक्षिणः च भवन्ति। जनाः इमान् पक्षिणः पशून् च द्रष्टुम् दूरतः आगच्छन्ति। जन्तुशालायाः सर्वाः व्यवस्थाः प्रशासनेन क्रियन्ते। बालकाः जन्तुशालां गत्वा प्रसन्नाः भवन्ति।

2. स्वच्छता

स्वच्छता जीवने आवश्यकी भवति। सामान्यतया जनाः स्वगृहं स्वच्छीकुर्वन्ति, परं मार्गस्य प्रतिवेशस्य च स्वच्छतायाः विषये अवधानं न यच्छन्ति। अस्माकं प्रधानमन्त्री नरेन्द्रमोदी राष्ट्रपितुः गान्धिनः जन्मदिवसे स्वच्छताभियानस्य आरम्भं कृतवान्। अधुना बालकाः अपि स्वच्छताविषये जागरूकाः सन्ति। ते स्वगृहं विद्यालयं च यथाशक्ति स्वच्छं कर्तुं प्रयतन्ते।

3. वृक्षो रक्षति रक्षितः

वृक्षाः जीवनस्य आधाराः भवन्ति। वृक्षैः, नदीभिः, पर्वतैः च सुशोभिता इयं प्रकृतिः मानवानां कृते उपयोगिनी भवति। परं स्वार्थरताः मानवाः विकासं प्रति अन्धधावनशीलाः निर्ममभावेन वृक्षान् कृन्तन्ति। अस्माभिः सर्वैः तथ्यमिदं ध्यातव्यं यत् यदा वयं वृक्षाणां रक्षणं करिष्यामः तदा वृक्षाः अस्माकं रक्षां करिष्यन्ति। वृक्षाणाम् अवदानविषये श्लोकोऽयं दर्शनीयः अपि —

पत्रपुष्पफलच्छायामूलवल्कलदारुभिः।
गन्धनिर्यासभस्मास्थितोक्त्यैः कामान् वितन्वते॥

4. हीमादासः

हीमादासः असमराज्यस्य एकस्मिन् अतिनिधने कृषकपरिवारे जन्म अलभता। अस्याः जन्म जनवरीमासस्य नवम्यां तिथौ द्विसहस्रतमे (2000) वर्षे अभवत्। द्रारिद्र्यात् सुविधानाम् अभावे सा नियमितं प्रशिक्षणमपि न प्राप्नोत् तथापि सा हतोत्साहा नाभवत्। विंशतिवर्षपर्यन्तवयसां कृते या आइ.ए.ए.एफ धावनप्रतियोगिता अभवत् तस्यां सा

स्वर्णपदकं प्राप्य भारतवर्षं गौरवान्वितम् अकरोत्। वस्तुतः आदर्शरूपा प्रेरणास्वरूपा च सा सर्वस्मै युववर्गाय।

5. सहिष्णुता

वयं प्रतिदिनं समाचारेषु यातायातमार्गेषु वर्धमानां हिंसाम् अधिकृत्य समाचारान् शृणुमः। अतीव दुःखदायिनी एषा स्थितिः यतः अद्यत्वे जनेषु सहिष्णुतायाः अभावः जातः। वस्तुतः सहिष्णुतायाः अभावे मानवस्य दुर्गतिः एव भवति। समाजस्य विघटनस्य कारणमपि धार्मिक-सहिष्णुतायाः अभावः एवास्ति। यदि अस्माकं मनसि ‘वयं सर्वे सदृशाः स्मः’ इति भावना भवेत् तदा प्रकृत्या एव वयं सहनशीलाः भविष्यामः। क्रोधं संयम्य उचितानुचितं विचार्य एव कोऽपि निर्णयः कर्तव्यः।

6. संस्कृतशिक्षणम्

प्राचीनकाले संस्कृतं व्यवहारस्य भाषासीत् परम् अधुना एषा तथा न दृश्यते मन्यते। संस्कृतभाषा जनभाषा भवेद् एतदर्थं ‘संस्कृतभारती’ नामकं संस्थानं संस्कृतभाषायाः प्रचाराय प्रसाराय च प्रयतते। अत्र अनेकाः परियोजनाः प्रचाल्यन्ते यासु बालानां वयस्कानां च कृते संस्कृतसम्भाषण-शिक्षणस्य रुचिकरी व्यवस्था क्रियते। ‘वदतु संस्कृतम्’, ‘संस्कृतव्यवहार-साहस्री’, ‘भाषाप्रवेशः’, ‘गीतसंस्कृतम्’, शिशुसंस्कृतम् इत्यादीनि अनेकानि बालोपयोगीनि पुस्तकानि अपि अनेन संस्थानेन प्रकाशितानि। सान्द्रमुद्रिकाः ध्वनिमुद्रिकाः अपि इतः प्राप्तुं शक्यन्ते। एवं संस्कृतभाषाधिगमाय सर्वथा उपयुक्तमेतत् स्थानम्।

7. मम धर्मः

अहं मानवः अस्मि। मानवता मम गुणः धर्मः च। धर्मस्य दृष्ट्या अहं केवलं भारतीयः एव अस्मि। विस्तरेण यदि कथयामि तर्हि भारतीय-परम्परानुसारं धर्मः जीवनव्यवहारः भवति। एवं भ्रातृत्वं, पितृत्वं, शिक्षकत्वं, छात्रत्वं, सहयोगित्वं, मित्र त्वं चेव्यादयः मे अनेके धर्माः। एतैः सर्वैः धर्मैः उपेतः अहम् एकः भारतीयः एतदेव सत्यम्। भारतस्य उन्नत्यर्थं प्रयतिष्ठे भारतीयां संस्कृतिं च उन्नेष्यामि-एष मम सङ्कल्पः।

8. पुस्तकम्

पुस्तकानि मानवस्य सर्वोत्तममित्राणि। कुपितं मित्रम् अस्माभिः सह कपटं कर्तुं शक्नोति परं पुस्तकानि सदैव अस्माकं कल्याणाय सज्जानि भवन्ति, अतः अस्माभिः एतादृशं हितकरं मित्रं कदापि न त्याज्यम्। प्रत्यक्षम् अप्रत्यक्षं सर्वविधं ज्ञानं पुस्तकेभ्यः प्राप्तुं शक्यते। अत एव कथितमपि — ‘सर्वस्य लोचनं शास्त्रं यस्य नास्त्यन्ध एव सः।’ अतः पुस्तकमेलकानि अपि भवन्ति यत्र वयं विविधविषयाणां पुस्तकानि एकस्मिन्नेव स्थाने प्राप्तुं क्षमाः, अतः अस्माभिः सदैव स्वाध्यायपैः भवितव्यम्।

9. स्वाध्यायः

विद्यालये पठितस्य पाठस्य यदा गृहे वयं पुनः अध्ययनं कुर्मः तद्विषये चिन्तनं कुर्मः अभ्यासं वा कुर्मः तत्कर्म ‘स्वाध्याय’ इति कथ्यते। अद्यत्वे छात्राणां मूलसमस्या स्वाध्यायस्य अभावः अस्ति। विद्यालये पञ्च-षड्-होरापर्यन्तम् अध्यापकेभ्यः विविधविषयानवगत्य छात्रः गृहं प्राप्नोति तदा च अन्यशिक्षकेभ्यः व्यक्तिगतरूपेणापि पाठनस्य प्रबन्धं पितरौ कुरुतः। एवं छात्रेभ्योऽपि इदमेव प्रतीयते यद् वयं प्रातःकालात् आरभ्य सायं यावत् पठामः एव, अतः अधुना मनोरज्जनाय अन्यत् किमपि कर्तव्यम्। एवं स्वाध्यायस्य अभावे विषयस्तु हृदयङ्गमः एव न भवति अपि तु परीक्षा चिन्ताकारणं सिध्यति अतः आवश्यकता तु इयमस्ति यत् पठितः विषयः प्रतिदिनं स्वाध्यायेन हृदयङ्गमः करणीयः।

10. मयूरः

मयूरः अस्माकं राष्ट्रियपक्षी अस्ति। एषः मूलतः वन्यपक्षी अस्ति। बहुरङ्गः मयूरः अतिसुन्दरः प्रतिभाति। वर्षाकालं वसन्तर्तु च प्राप्य एषः सुन्दरम् आकर्षकञ्च नृत्यं करोति। एतस्य नृत्यं दृष्ट्वा केकारवञ्च श्रुत्वा जनाः मुदिताः भवन्ति। भारतवत् म्याँमारस्य, श्रीलङ्कायाश्चापि राष्ट्रियपक्षी मयूरः अस्ति। देवानां सेनापतेः कार्तिकेयस्य वाहनम् अपि मयूरः एवास्ति। मयूरपिच्छं विना श्रीकृष्णस्य शृङ्गारः अपूर्णः मन्यते। अस्माभिः मयूरप्रजातिः रक्षणीया।

11. आतङ्कवादः

हिंसात्मकक्रियाभिः स्वकीय-वर्चस्त्वस्थापनाय भयोत्पादनम् अथवा भयस्य वातावरण-निर्माणम् एव आतङ्कवादः उच्यते। एषः केनापि एकेन जनेन समूहेन वा भवितुं शक्यते। अयम् असामाजिकतत्त्वैः असंवैधानिक-क्रियाभिः स्वकीयेच्छां पूर्यितुं विभिन्नस्तरेषु सञ्चाल्यमानः भवति। अनेन सामान्यजीवनं सङ्कटापन्नं भवति। आतङ्कवादेन गृहे, समाजे, देशे, विदेशेषु च असुरक्षायाः भावः भयञ्च उत्पद्यते। जनसम्मर्दे यत्र कुत्रापि, किमपि भवितुं शक्यते। आतङ्कवादिसङ्घटनानां मुख्यं लक्ष्यं भयोत्पादनमेव। आतङ्कवादस्य समूलनाशाय सर्वेषां राष्ट्राणां सहयोगः परमावश्यकः अस्ति।

1. अधोलिखितविषयानधिकृत्य पञ्चवाक्यात्मकमनुच्छेदं लिखत –

- (i) भूकम्पविभीषिका (ii) पर्वतारोहणम् (iii) पर्यावरणसंरक्षणम् (iv) गृहकार्य कियत् उपयोगि? (v) मम जीवनलक्ष्यम् (vi) हास्योपचारः (vii) ग्राम्यजीवनम् (viii) जलसंरक्षणस्य उपायाः (ix) विद्यालयस्य उन्नत्यै छात्राणां सहयोगः (x) क्रीडाप्रतियोगिता।



चित्रवर्णनम्

यहाँ ध्यातव्य है कि प्रत्येक चित्र के साथ दी गयी मञ्जूषा में प्रदत्त पद छात्रों की सहायता के लिए हैं, किन्तु उनका प्रयोग अनिवार्य नहीं है। छात्र स्वेच्छा से भी वाक्य संरचना कर सकते हैं।

1. अधोलिखितं चित्रं दृष्ट्वा मञ्जूषायां प्रदत्तपदानां सहायतया पञ्चवाक्यानि लिख्यन्ताम्—

मञ्जूषा

अग्रजस्य, अनुजस्य, भगिनी, स्वक्रमस्य, रक्षाबन्धनम्, रक्षासूत्रम्, करोति,
करिष्यति, मणिबन्धे, मिष्टान्म्, अन्यम्, पश्चात्, पश्यति, प्रसन्नः, मातापितरौ,
दृष्ट्वा, प्रसन्नौ, पर्वणः, बन्धति



उदाहरणवाक्यानि

- (i) अत्र रक्षाबन्धनपर्वणः आयोजनं भवति।
- (ii) भगिनी अग्रजस्य मणिबन्धे रक्षासूत्रस्य बन्धनं करोति।
- (iii) तस्याः अनुजः अपि स्वक्रमस्य प्रतीक्षां करोति।
- (iv) अग्रजस्य रक्षाबन्धनं कृत्वा भगिनी अनुजस्य मणिबन्धे अपि रक्षाबन्धनं
करिष्यति।
- (v) मातापितरौ रक्षाबन्धनं दृष्ट्वा मोदेते।

अभ्यासवान् भव — दशमकक्षायाः

- (i)
(ii)
(iii)
(iv)
(v)

2. अधोलिखितं चित्रं दृष्ट्वा मञ्जूषायां प्रदत्तपदानां सहायतया पञ्च वाक्यानि लिख्यन्ताम्—

मञ्जूषा

उदग्रविमानम्, सैनिकः, भोजनपुटकानि, जलौघपीडिताः, वृद्धस्य, लम्बितसोपाने, आरोहयति, पातयन्ति, सहायताम्, छदिषु, उत्थापयन्ति



- (i)
(ii)
(iii)
(iv)
(v)

3. अधोलिखितं चित्रं दृष्ट्वा मञ्जूषायां प्रदत्तपदानां सहायतया पञ्चवाक्यानि लिख्यन्ताम्—

मञ्जूषा

पलायितौ, धृत्वा, कुर्वन्ति, देशरक्षकेभ्यः, सैनिकाः, नमः, अन्ताराष्ट्रियसीमायाः, अवैधप्रवेशम्, प्रहरिणः, भुशुण्डं, परितः, पर्वताः, दृष्ट्वा, आतङ्कवादिनौ, देशरक्षकान्, सन्नद्धाः



- (i)
- (ii)
- (iii)
- (iv)
- (v)

अभ्यासवान् भव — दशमकक्षायाः

4. अधोलिखितं चित्रं दृष्ट्वा मञ्जूषायां प्रदत्तपदानां सहायतया पञ्चवाक्यानि लिख्यन्ताम्—

मञ्जूषा

चिकित्सकाः, परिचारिकाः, उपवाहनानि, क्रेन्यानेन, भीषणदर्घटनायाः, रेलयानस्य, पतितानि, दुर्घटनायां, ब्रणितम्, विपत्तौ, आवश्यकता

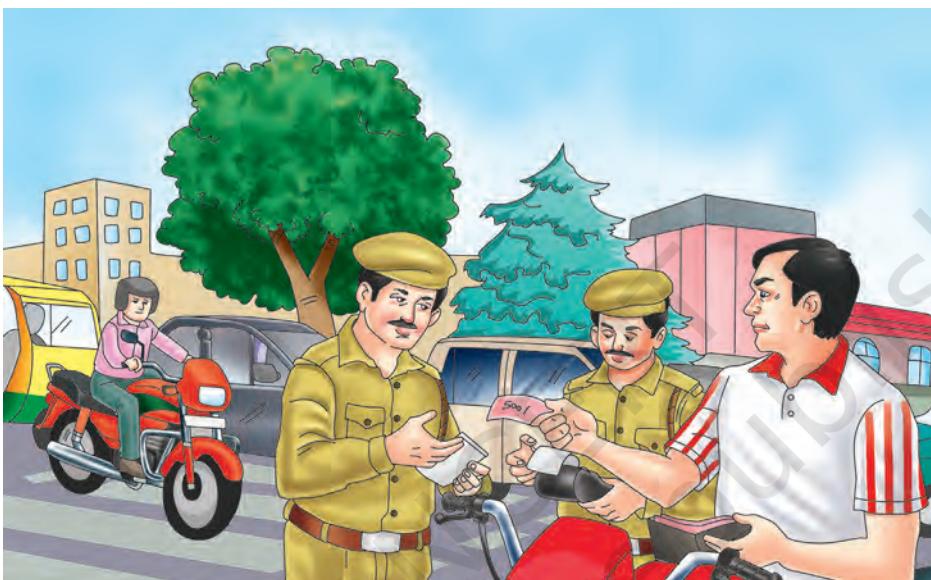


- (i)
- (ii)
- (iii)
- (iv)
- (v)

5. અધોલિખિતં ચિત્રં દૃષ્ટા મજૂષાયાં પ્રદત્તપદાનાં સહાયતયા પઞ્ચ વાક્યાનિ
લિખ્યન્તામ्—

મજૂષા

યાતાયાતસ્ય, શિરસ્ત્રાણસ્ય, દણદશુલ્કમ्, પ્રાપ્તિપત્રમ्, યાતાયાતરક્ષી, સુરક્ષાયૈ,
ધારયિત્વા, નિર્બધમ्, આમન્ત્રણમ्, શુલ્કપ્રાપ્તિપત્રમ्, ભવિતું શક્નોતિ, મુદ્રયતિ,
મોટરસાઇકિલચાલકઃ, આત્મરક્ષાયૈ



- (i)
- (ii)
- (iii)
- (iv)
- (v)

अभ्यासवान् भव — दशमकक्षायाः

6. अथोलिखितं चित्रं दृष्ट्वा मञ्जूषायां प्रदत्तपदानां सहायतया पञ्च वाक्यानि
लिख्यन्ताम् —

मञ्जूषा

वृक्षेषु, मण्डूकः, तिसः, जलगर्तस्य, नृत्यति, इन्द्रधनुषः, दोलाभिः, टर्ट-टर्ट इति शब्दम्,
श्रावणमासस्य, वर्षायाः, अनुभवन्ति, कुर्वन्ति

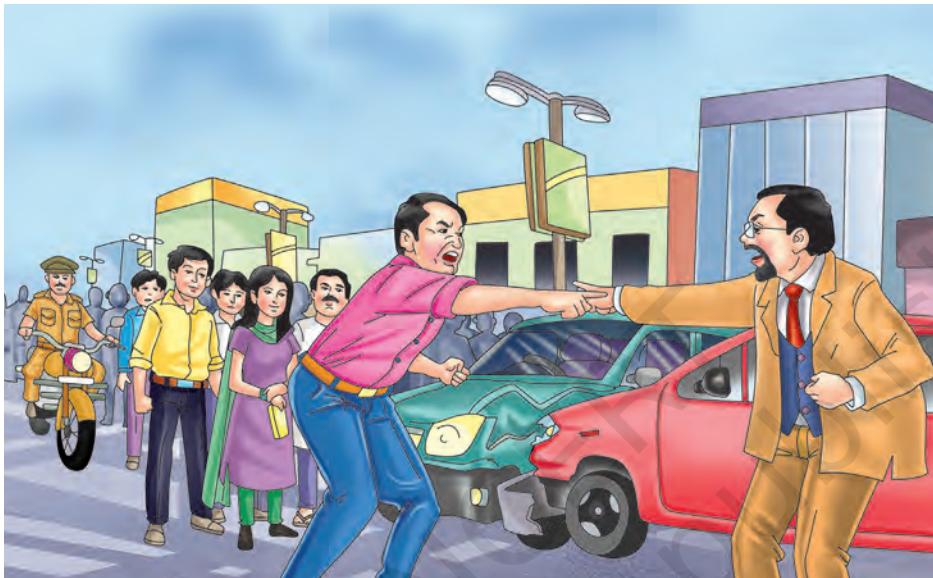


- (i)
- (ii)
- (iii)
- (iv)
- (v)

7. અધોલિખિતં ચિત્રં દૃષ્ટ્વા મજૂષાયાં પ્રદત્તપદાનાં સહાયતયા પઞ્ચ વાક્યાનિ
લિખ્યન્તામ्—

મજૂષા

કારયાનયો:, આક્રોશપૂર્વકમ्, ક્રુદ્ધૌ, દોષારોપણમ्, આરક્ષી, ક્ષતિગ્રસ્તે, કારયાને,
ક્ષમાભાવસ્ય, આવશ્યકતા, ધૈર્યસ્ય, દર્ઘટનાયાઃ, વિચાર્ય



- (i)
- (ii)
- (iii)
- (iv)
- (v)

अभ्यासवान् भव — दशमकक्षाया:

8. अधोलिखितं चित्रं दृष्ट्वा मञ्जूषायां प्रदत्तपदानां सहायतया पञ्च वाक्यानि लिख्यन्ताम्—

मञ्जूषा

आपणम्, स्वास्थ्यवर्धनम्, फलविक्रेता, भक्षणम्, कदलीफलानि, द्राक्षा, मधुकर्कटिका, अमृतफलम्, नारिकेलानि, जम्बूफलानि, ग्राहकाय, तोलयति



- (i)
- (ii)
- (iii)
- (iv)
- (v)

9. अधोलिखितं चित्रं दृष्ट्वा मञ्जूषायां प्रदत्तपदानां सहायतया पञ्च वाक्यानि लिख्यन्ताम्—

मञ्जूषा

धावन-प्रतियोगिता, सप्त बालिकाः, प्रशिक्षकः, सीटिकारवं कर्तुं, तत्पराः, विजेतृमञ्चम् तिस्रः, प्रथमस्थाने, तृतीयस्थानम्, स्वास्थ्यवर्धकम्

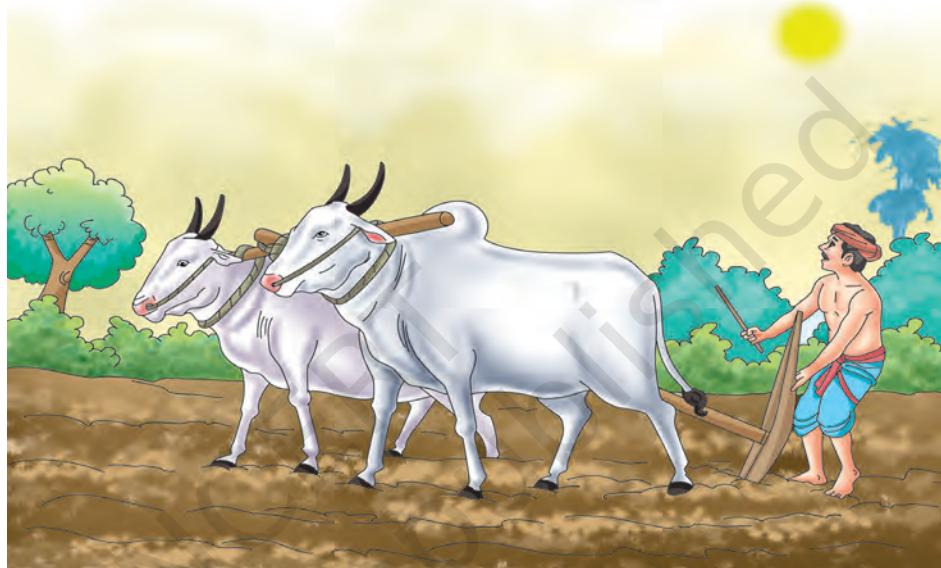


- (i)
- (ii)
- (iii)
- (iv)
- (v)

10. अथोलिखितं चित्रं दृष्ट्वा मञ्जूषायां प्रदत्तपदानां सहायतया पञ्च वाक्यानि
लिख्यन्ताम्—

मञ्जूषा

कृषकः, वृषभौ, स्वेदपूर्णम्, परिश्रमकारणात्, अन्नदाता, मेघानां प्रतीक्षाम्,
सूर्यातपे, चालयति, कर्षतः, अन्नोत्पादने, हलम्, योगदानम्



- (i)
- (ii)
- (iii)
- (iv)
- (v)



रचनानुवादः (वाक्यरचनाकौशलम्)

1. अधोलिखितानि वाक्यानि ध्यानेन पठन्तु—

एकः राजा आसीत्। सः याचकेभ्यः धनं ददाति स्म। तेन सह राजी अपि दानं यच्छति स्म। ततः परं सा रथेन राजभवनं गच्छति। नृपस्य पुत्रः विद्वान् न आसीत्। सः पुत्रं गुरुकुलं प्रैषयत्। गुरुकुले सः आचार्यात् अध्ययनम् अकरोत्। प्रसन्नः राजा आचार्यम् अकथयत्—“भो आचार्य! अहम् कृतज्ञः अस्मि”।

अधुना वाक्याधारितानि प्रश्नोत्तराणि ध्यानेन पठन्तु—

प्रश्नः

उत्तरम्

- (i) एकः कः आसीत्?
- (ii) सः कं गुरुकुलं प्रैषयत्?
- (iii) सा केन राजभवनं गच्छति स्म?
- (iv) सः केभ्यः धनं ददाति स्म?
- (v) सः कस्मात् अध्ययनं करोति स्म?
- (vi) कस्य पुत्रः विद्वान् न आसीत्?
- (vii) सः कुत्र अध्ययनं करोति स्म?
- (viii) राजा आचार्यं कथं सम्बोधयति?

राजा

पुत्रम्

रथेन

याचकेभ्यः

आचार्यात्

नृपस्य

गुरुकुले

भो आचार्य!

- ☞ अत्र वयं पश्यामः— प्रथमे वाक्ये ‘राजा’ इति पदं कर्ता अस्ति। यः क्रियां सम्पादयति सः कर्ता। कर्तरि च प्रथमा विभक्तिः प्रयुज्यते अतः ‘राजा’ इति पदे प्रथमा विभक्तिः अस्ति।
- ☞ द्वितीये प्रश्नोत्तरे ‘पुत्रम्’ कर्मकारकम् अस्ति। क्रियायाः फलं यस्मिन् पतति तत् कर्मसंज्ञकं भवति। ‘कर्मणि द्वितीया’ सूत्रानुसारेण ‘पुत्रम्’ इति पदे द्वितीया विभक्तिः प्रयुक्ता।
- ☞ तृतीये प्रश्नोत्तरे ‘रथेन’ इति पदे रथस्य साधनत्वात् करणार्थे तृतीया विभक्तिः प्रयुक्ता यतः ‘साधकतमं करणम्’ करणे च तृतीया विभक्तिः भवति।
- ☞ चतुर्थे प्रश्नोत्तरे ‘याचकेभ्यः’ पदे चतुर्थी विभक्तिः अस्ति। यस्मै किमपि दीयते क्रियते वा तत् सम्प्रदानम् भवति। सम्प्रदाने च चतुर्थी विभक्तिः भवति।

- ७ पञ्चमे प्रश्नोत्तरे ‘आचार्यात्’ इति पदे पञ्चमी-विभक्तेः प्रयोगः वर्तते। यस्माद् अधीते, गृह्णते पृथक्क्रियते वा अपादानं भवति। अपादाने पञ्चमी-विभक्तिः प्रयुज्यते।
- ८ षष्ठे प्रश्नोत्तरे ‘नृपस्य’ इति पदं पुत्रेण सह सम्बन्धं ज्ञापयति। सम्बन्धे च षष्ठी विभक्तिः भवति अतः ‘नृपस्य’ पदे षष्ठी विभक्तिः प्रयुक्ता।
- ९ सप्तमे प्रश्नोत्तरे ‘गुरुकुलम्’ अध्ययनकार्यस्य आधारः अस्ति। ‘आधारोऽधिकरणम्’ इत्यनेन आधारस्य अधिकरण-संज्ञा भवति अधिकरणे च सप्तमी-विभक्तिः प्रयुज्यते अत एव ‘गुरुकुले’ इति पदे सप्तम्याः विभक्त्याः प्रयोगः वर्तते।
- १० अष्टमे प्रश्नोत्तरे नृपः आचार्य ‘भो आचार्य!’ इति सम्बोधयति। सम्बोधने अपि प्रथमा विभक्तिः एव प्रयुज्यते।

संक्षिप्तरूपेण इदं ध्यातव्यम्

विभक्तिः	कारकम्
प्रथमा	कर्ता
द्वितीया	कर्म
तृतीया	करणम्
चतुर्थी	सम्प्रदानम्
पञ्चमी	अपादान
षष्ठी	सम्बन्धः
सप्तमी	अधिकरणम्
सम्बोधनम्	सम्बोधनम्

2. अनुवाद-प्रक्रियायां विभक्ति-प्रयोगार्थम् एतदपि स्मरणीयम्।

- द्वितीया अभितः, परितः सर्वतः, उभयतः, समया, निकषा, हा, प्रति, धिक्, उपरि, अधः, विना, अन्तरा, अन्तरेण, √गम्, √रक्ष् योगे
- तृतीया सह, समम्, साकम्, सार्धम्, सदृशम्, समः, अलम्, विना योगे अङ्गविकारे च।
- चतुर्थी √दा, √रुच्, √क्रुध्, √कुप्, √द्रुह्, √स्पृह्, √असूय्, ईर्ष्य्, नमः, स्वस्ति, स्वाहा योगे
- पञ्चमी √भी, √त्रा, √त्रस्, ऋते, प्रभृति, पृथक्, आरभ्य, दूरम्, बहिः, अनन्तरम्, पूर्वम्, प्राक्-योगे, द्वयोः निर्धारणे
- षष्ठी कृते, हेतुः, समक्षम्, मध्ये, अन्तः, दूरम्, अनादरम्, अधः, उपरि, पुरः, निर्धारणे
- सप्तमी √स्निह्, वि√श्वस्, प्रवीणः, कुशलः, चतुरः, निर्धारणे, सति सप्तमी

3. एतानि वाक्यानि पठन्तु—

पठति	एक बालक पढ़ रहा है।
विकसतः	पुष्टे
कूदन्ते	बन्दर वृक्ष पर कूद रहे हैं।
पतन्ति	पत्राणि

ध्यातव्यम्—

- (क) उपरिप्रदत्तानि स्थूलपदानि कर्तृपदानि सन्ति।
- (ख) कर्तृपदेषु प्रथमा विभक्तिः प्रयुक्ता।
- (ग) क्रियापदस्य अन्वितिः कर्तृपदैः सदैव भवति।

4. अधुना एतानि वाक्यानि पठत—

एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
बालः गच्छति।	बालौ गच्छतः।	बालाः गच्छन्ति।
कन्या गच्छति।	कन्ये गच्छतः।	कन्याः गच्छन्ति।
त्वं गच्छसि।	युवाम् गच्छथः।	यूयं गच्छथा।
अहं गच्छामि।	आवां गच्छावः।	वयं गच्छामः।

अत्र वयं पश्यामः यत् लिङ्गपरिवर्तनेन क्रियापदेषु किमपि परिवर्तनं न भवति परन्तु वचन-परिवर्तनेन पुरुषपरिवर्तनेन च क्रियापदानि परिवर्तितानि भवन्ति।

अभ्यासवान् भव — दशमकक्षायाः

संस्कृते क्रियायाः मूलरूपं धातुः भवति। धातोः प्रयोगः दशलकारेषु भवति। तेषु प्रमुखाः—
पञ्चलकाराः अधोनिर्दिष्टाः सन्ति, अवशिष्टाः पञ्चलकाराः छात्रैः अन्वेषणीयाः—

लट् लकारः — वर्तमानकाले
लृट् लकारः — भविष्यत्काले
लङ् लकारः — भूतकाले
लोट् लकारः — आज्ञार्थे आदेशादि-अर्थे
विधिलिङ् लकारः — विध्यर्थे सम्भावनादि-अर्थे

प्रत्येकं लकारे त्रयः पुरुषाः (प्रथमः, मध्यमः, उत्तमः च) त्रीणि च वचनानि (एकवचनम्,
द्विवचनम्, बहुवचनञ्च भवन्ति।

5. अधुना वाक्यरचनाम् अवगच्छामः—

- अद्यत्वे त्वं कुत्र वससि? — आजकल तुम कहाँ रहते हो?
Where do you stay now a days?
- अस्माकं विद्यालये वार्षिकोत्सवः अस्ति। — हमारे विद्यालय में वार्षिकोत्सव है।
There is annual function in our school.
- भवतः लेखः उत्तमः आसीत्। — आपका लेख उत्तम था।
Your essay was the best.
- त्वं गृहकार्यं कदा करिष्यसि? — तुम अपना गृहकार्य कब करोगे?
When will you do your homework?
- परिश्रमी सदैव सफलः भवति। — परिश्रमी सदैव सफल होता है।
Labourious people always succeed.
- गङ्गायाः जलं पवित्रं भवति। — गंगा का जल पवित्र होता है।
The water of Ganga is pure.
- विद्या विना जीवनं व्यर्थम्। — विद्या के बिना जीवन व्यर्थ है।
Life is futile without knowledge.
- भो छात्राः! सदैव सत्यं वदता। — हे छात्रो! सदा सत्य बोलो।
Dear students! Always speak the truth.

महाकवि: कालिदासः
सप्तग्रन्थान् अरचयत्

— महाकवि कालिदास ने सात ग्रन्थों की
रचना की।

*The great poet Kalidas wrote seven
granthas (books).*

वयं वृद्धजनानां सम्मानं कुर्याम। — हमें वृद्धजनों का सम्मान करना चाहिए।

We should respect the elderly people.

अभ्यासः

1. अधोलिखितवाक्यानां संस्कृतभाषया अनुवादं कुरुत—

- (i) छात्रों को ध्यान से कार्य करना चाहिए।
- (ii) वृक्ष पर पक्षी चहचहाते हैं।
- (iii) हम सब मिलकर गाएंगे।
- (iv) खिलाड़ी फुटबॉल से खेल रहे हैं।
- (v) अध्यापक ने कहा— “सदाचार का
पालन करो।”
- (vi) कृषक गाँव की ओर गए।
- (vii) तुम दोनों खीर खाओ।
- (viii) विद्यालय के दोनों ओर वृक्ष हैं।
- (ix) माता बालक को दूध देती हैं।
- (x) हमें स्वास्थ्य के नियमों का पालन
करना चाहिए।
- (xi) कल राघव कहाँ था?
- (xii) मेरे पिता भोजन पकाते हैं।
- (xiii) मेरे पास आकर बैठो।
- (xiv) उन सबको दीवाली उत्सव अच्छा
लगता है।
- (xv) ईश्वर को नमस्कार।
- (xvi) घर के बाहर कौन है?
- (xvii) भवन के ऊपर कौए बैठे हैं।

अभ्यासवान् भव — दशमकक्षायाः

- (xviii) मैंने ऐसा नहीं कहा।
 (xix) कक्षा में कितने छात्र हैं?
 (xx) तुम बाज़ार से दही लाओ।

2. प्रत्ययाधारिता वाक्य-संरचना

गुरुं सेवमानेन छात्रेण या विद्या अर्जिता सा पूर्णजीवने तस्य सहायिका भूतवती।
 जीवने ज्ञानमेव सर्वथा प्राप्तव्यम् यतः ज्ञानं विना न कोऽपि पूजनीयः।
 अत्र स्थूलाक्षरपदानि प्रत्यय-युक्तानि सन्ति।
 वाक्येषु प्रत्यय-प्रयोगार्थम् एते बिन्दवः ध्यातव्याः।

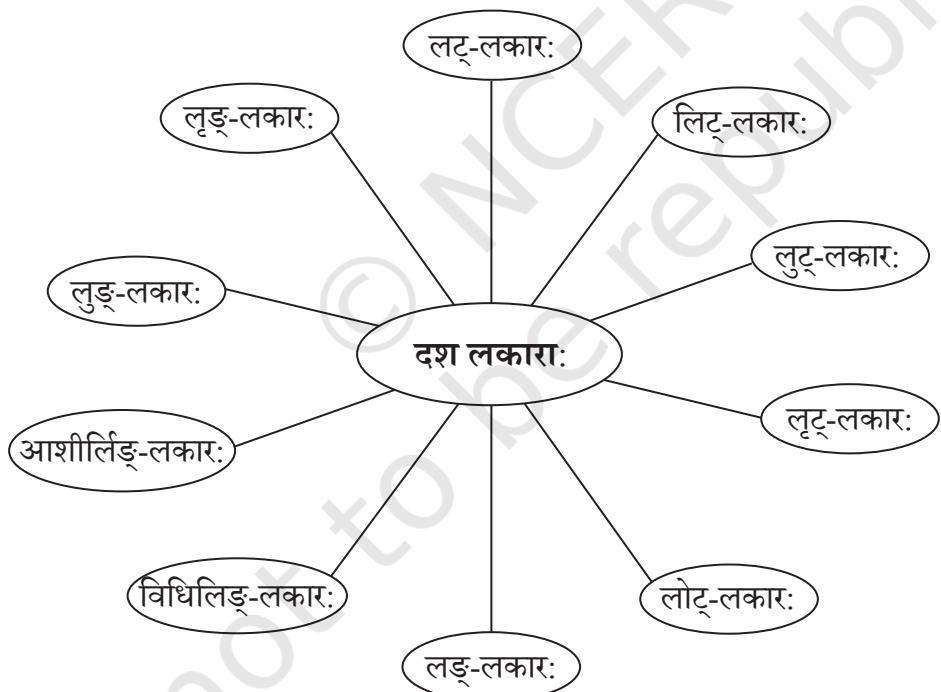
- * शत्-प्रत्ययस्य प्रयोगः परस्मैपदिधातुभिः सह भवति। शानच् प्रत्ययस्य प्रयोगः आत्मनेपदिधातुभिः सह भवति। आभ्यां प्रत्ययाभ्यां निर्मितपदानां प्रयोगः विशेषणरूपेण भवति।
- * कत्-कतवतु-प्रत्यययोः प्रयोगः भूतकालार्थे क्रियते। कत्-प्रत्ययस्य प्रयोगः कर्मवाच्ये भाववाच्ये च भवति। कतवतु-प्रत्ययस्य प्रयोगः कर्तृवाच्ये एव भवति।
- * तव्यत्-अनीयर्-प्रत्यययोः प्रयोगः विधिलिङ्गलकारस्य अर्थे भवति। एताभ्यां प्रत्ययाभ्यां निर्मितपदानां प्रयोगः क्रियारूपेण विशेषणरूपेण च भवति।
 - भवन्तः एतेषां प्रत्ययानां विशिष्ट-अध्ययनम् अग्रिमेषु अध्यायेषु करिष्यन्ति।

एतानि वाक्यानि पठत —

1.	मित्र की सहायता करनी चाहिए।	मित्रस्य सहायता कर्तव्या।	<i>A friend should be helped.</i>
2.	उसने क्या कहा?	सः किम् उक्तवान्?	<i>What did he say?</i>
3.	मैंने उसे धन दिया।	मया तस्मै धनं दत्तम्।	<i>I gave him money.</i>
4.	कार्य करते हुए ही सब साध लेते हैं।	कार्यं कुर्वन्तः एव सर्वं साधयामः।	<i>Everything is achieved by doing practice.</i>
5.	यह चलचित्र भूलने योग्य नहीं है।	इदं चलचित्रम् अविस्मरणीयम् न अस्ति।	<i>This movie is unforgettable.</i>
6.	बढ़ता हुआ चन्द्रमा पूर्णता को पाता है।	वर्धमानः चन्द्रः पूर्णतां याति।	<i>The rising moon attains completion.</i>

3. एतेषां वाक्यानां संस्कृतभाषया अनुवादं कुरुत—

- (i) उसने पत्र लिखा। —
- (ii) खाते हुए नहीं बोलना चाहिए। —
- (iii) उस कन्या ने पुस्तक पढ़ी। —
- (iv) तुम्हें भी पुस्तक पढ़नी चाहिए। —
- (v) वह फल लेकर घर आई। —
- (vi) तुमने ऐसा नहीं सोचा। —
- (vii) पुस्तक पाता हुआ छात्र प्रसन्न होता है। —
- (viii) जाते हुए बालक को देखो। —
- (ix) शिमला नगर देखने योग्य है। —
- (x) खाने योग्य भोजन ही खाना चाहिए। —





1075CH06

6

सन्धिः

शिक्षकः — (कक्षां प्रविश्य) नीरजादित्योमेशौजसा:, किं भवद्विः कार्यं कृतं न वा?

(सर्वे छात्राः विस्मयेन इतस्ततः दृष्ट्वा शिक्षकं पश्यन्ति।)

शिक्षकः — किं जातम्? नीरज! आदित्य! उमेश! औजस! युष्मान् एव पृच्छामि।

नीरजः — (आश्चर्येण) गुरुवर! भवद्विः अस्माकं सर्वेषां नामानि कथं संयोजितानि ?

शिक्षकः — सन्धिमाध्यमेन।

उमेशः — किमेवम्? कृपया विस्तरेण बोधयतु।

शिक्षकः — बोधयामि, बोधयामि, धैर्यवन्तः भवन्तु। प्रथमं ह्यस्तनं कार्यं तु दर्शयित।

(सर्वे छात्राः शीघ्रतया कार्यं दर्शयन्ति।)

आदित्यः — महोदय! कार्यं सर्वैः कृतमस्ति। अधुना कृपया बोधयत।

शिक्षकः — नवमकक्षायां सन्धिविषये पठितम् आसीत्। किं स्मर्यते?

औजसः — आम् आम् स्मरामः वयम्। अस्तु-‘नीरज+आदित्य’ इति नीरजादित्य-
अत्र दीर्घ-सन्धिः कृतः भवद्विः।

उमेशः — आम् आम् स्मर्यते मयाऽपि नीरजादित्य+उमेश एवं तु दीर्घसन्धेः
अनन्तरं गुणसन्धिः कृतः भवता।

आदित्यः — स्पष्टम्। पुनः वृद्धि-सन्धिः कृतः नीरजादित्योमेशौजसाः इति।

शिक्षकः — शोभनम्। अतीव शोभनम्। एवमेव प्रयोगेण पठितांशान् अवगन्तुं पारयामः।

अदितिः — गुरुवर! अत एव मम नाम्ना सह दीप्तेः नामयोजनेन ‘दीप्त्यदिती’ इति यण्
सन्धेः नियमानुसारमेव भवता आकार्यते प्रायशः।

शिक्षकः — आम् सम्यगवगतम्। अधुना अभ्यासेन एतान् चतुरः भेदान् पुनरावर्त्य स्वरसन्धेः नवीनान् भेदान् पठिष्यामः।

अधोलिखितात् अनुच्छेदात् दीर्घ-गुण-यण् वृद्धि-सन्धीनाम् उदाहरणानि चित्वा लिखत —

जानामि+अहम् यत् जलोपलवेन +
 पीडितः रमा+ईशः वृक्षारुढः + अभवत्।
 लीलया+एव सर्वमसहता तदा सः साधु+उपदेशम्
 स्मृतवान् यत् कदापि धैर्यं न त्याज्यम्। स्थितेः सामान्ये जाते सः महा+औत्सुक्येन
 गृहं गतवान् अचिन्तयत् च सर्वं खल्विदम् +
 ब्रह्म। तदा मोहनः सोहनः च द्वौ+अपि रमेशस्य गृहमागच्छतः। सर्वेऽपि ..
 + एकत्रीभूय भोजनं पचन्ति।

(सर्वे छात्राः एकैकं कृत्वा सर्वेषाम् उदाहरणानाम् समाधानं कुर्वन्ति तदा एकः छात्रः वदति।)

आदित्यः — गुरुवर! अन्तिमौ द्वौ तु स्पष्टौ न भवतः।

शिक्षकः — अस्तु, अवबोधयामि एकैकं कृत्वा।

यथा — द्वौ+अपि — द्वावपि गृहमागच्छतः।

एवमेव

- (i) द्वौ+एते — पठतः।
- (ii) तौ+अत्र — लिखतः।
- (iii) पो+अनः — पवनः मन्दं मन्दं वहति।
- (iv) पौ+अकः — सर्वं दहति।
- (v) भावुकः — — + न भवेत्।
- (vi) ने+अनम् — नयनम् उद्घाट्य एव मार्गं चलत।
- (vii) शे+अनम् — रात्रौ एव करणीयम्।
- (viii) + चयनम् कृत्वा एव खाद्याखाद्यं खादनीयम्।
- (ix) गै+अकः — गायकः मधुरं गायति।
- (x) नै+अकः — सुन्दरं नृत्यति।
- (xi) शायिकाः — + रेलयानेषु भवन्ति।

‘एचोऽयवायावः’, इति नियमानुसारम् ए, ऐ, ओ, औ-इत्येतेषां स्वराणां परतः कस्मिंश्चिदपि स्वरे आगते एतेषां चतुर्णा स्थाने क्रमशः अय्, आय्, अव्, आव् च भवन्ति। एते ‘अयादिचतुष्टयम्’ इति नाम्नाऽपि ज्ञायन्ते।

छात्राः — अवगतः अस्माभिः अयादिसन्धिः ।

शिक्षकः — पठिते अनुच्छेदे अन्तिमं वाक्यमासीत् - सर्वेऽपि (सर्वे+अपि) एकत्रीभूय भोजनं पचन्ति। एतत् पूर्वरूपसन्धेः उदाहरणम् अस्ति ।

एवमेव अन्यानि उदाहरणानि पश्यन्तु—

(i) अन्येऽपि —+..... जनाः भोजनं खादन्ति ।

(ii) सर्वेऽत्र —+..... उपविशन्ति ।

(iii) विष्णोऽवतु — विष्णो+अवतु माम्

(iv) शिशोऽपि —+..... कुशली त्वम् ।

(v) साधोऽत्र —+..... भोजनं कुरु ।

‘एङः पदान्तादति’, इति सूत्रानुसारं पदान्तयोः ए, ओ इत्येतयोः परतः यदि अकारः आगच्छेत् तर्हि द्वयोः स्थाने पूर्वरूपम् अर्थात् ‘ए, ओ’ एव भवति। अकारश्च इति अवग्रहस्य चिह्नेन दर्शयते। एषः भेदः ‘पूर्वरूपसन्धिः’ इति कथ्यते ।

छात्राः — पूर्वरूपसन्धिरपि स्पष्टः। किं कोऽप्यन्यः भेदः भवति स्वरसन्धेः ।

शिक्षकः — आम्, प्रकृतिभावः परस्परं च एतौ द्वौ अन्यौ भेदौ अपि स्तः । परं

दशमकक्षायां केवलं षड्भेदाः । अधुना एतेषां पुनरभ्यासं कुर्मः

येन स्वरसन्धिः पूर्णतया हृदयंगमः भवेत् ।

अभ्यासः

1. अथः प्रदत्तवाक्येषु सन्धिम्/सन्धिविच्छेदं वा कृत्वा लिखत—

(i) वानराः सर्वत्र वृक्षे+अपि कूर्दन्ते ।

(ii) के+अत्र विद्यालयम् आगत्य कक्षां न आगताः ।

(iii) हे शिशोऽत्र+..... आगत्य उपविश ।

- (iv) ते पठन्ति, तावपि + पठतः ।
- (v) यथा+उचितं कार्यं करणीयम् ।
- (vi) एतत् पुस्तकं तु तवैवास्ति + + ।
- (vii) साधूपूरि + गच्छतः ।
- (viii) कवि+इन्द्रः नवीनां कवितां श्रावयति ।
- (ix) कस्मिन्नपि अत्याचारः + तु न करणीयः ।
- (x) भानो+ए जलार्पणं करणीयम् ।

शिक्षकः — छात्राः! ह्यः अस्माभिः स्वरसन्धिः सम्यगवगतः । अद्य व्यञ्जनसन्धिं
विसर्गसन्धिं चावबोधयामि।

छात्राः — (समवेत्स्वरेण) आम् श्रीमन्! वयमपि सन्धेः अन्यान् भेदान् अवगन्तुम्
इच्छामः।

(अध्यापकः श्यामपट्टसहायतया पाठयति।)

(छात्राश्च स्वपुस्तिकासु लिखन्ति।)

व्यञ्जन-सन्धिः

1. उदाहरणमनुसृत्य सन्धिं सन्धिविच्छेदं वा कुरुत—

- (क) चलत् + अनिशम् = चलदनिशम् एव उन्नति करोति ।
 - (i) एतस्मादेव = + पाठात् त्वं पठ ।
 - (ii) जगत् + ईशः = सर्वत्र विद्यमानः ।
 - (iii) यस्य शब्दस्य अन्ते स्वरः सः शब्दः अजन्तः = +
कथ्यते ।
 - (iv) शब्दरूपं सुप् + अन्तम् = कथ्यते, धातुरूपं तिङ्न्तम् ।

वर्गस्य प्रथमः वर्णः+ वर्गस्य तृतीयः, चतुर्थः वर्णः, स्वरः, य्, र्, ल्, व् वर्णाः



प्रथमवर्णस्य स्थाने तृतीयः वर्णः (परिवर्तनम्)

अभ्यासवान् भव — दशमकक्षाया:

(ख) अस्मात् + नगरात् = अस्मान्नगरात् ग्रामः अतिदूः ।

(i) सम्यक् + नेता = एव राष्ट्रोन्नत्यै प्रयतते ।

(ii) किन्तु = + खल्विदं लिखितम् ।

(iii) सः प्रत्यक् + आत्मा = भूत्वा परोपकारं करोति ।

(iv) दिङ्ग्नागः = + ‘कुन्दमाला’ इत्यस्य लेखकः ।

(v) वर्षस्य षण्मासाः = + व्यतीताः ।

(ग) सः कदाचित् ध्यानेन शृणोति कदाचित् + च = कदाचिच्च न ।

(i) शरत् + चन्द्रः = मम मित्रस्य नाम ।

(ii) मनुष्यः ज्ञानेन सफलं कुर्याज्जीवितम् = + ।

(iii) मनस् + चञ्चलम् = हि भवति

(iv) हरिश्शोते = + वैकुण्ठे ।

स्, तवर्ग + श्, चवर्ग

↓
↓

श्, चवर्ग (परिवर्तनम्)

(घ) धनुस् + टङ्कारः = धनुष्टङ्कारः तु युद्धस्य संकेतः ।

(i) प्रथमपंक्त्याः बालस् + षष्ठः = पाठं पठेत् ।

(ii) रामायणं वाल्मीकिना लिखितम्, तटीका = + च केन लिखिता?

(iii) मह्यम् पक्षिणाम् उत् + डयनम् = अतीव रोचते ।

(iv) टीकां तु लेखकष्टीकते = ।

स्, तवर्ग + ष्, टवर्ग

↓
↓

ष्, टवर्ग (परिवर्तनम्)

(ङ) अतिथे: सद् + कारः = सत्कारः करणीयः।

(i) परिश्रमी छात्रः एव परीक्षायां सफलतां लभ् + स्यते =।

(ii) दिक्पालः = + कः भवति?

$\frac{\text{वर्गस्य द्वितीयः तृतीयः चतुर्थः वर्णः} + \text{वर्गस्य प्रथमः, द्वितीयः वर्णः, श्, ष्, स्}}{\downarrow}$
 स्ववर्गस्य तृतीयः वर्णः भवति। (परिवर्तनम्)

(च) अ. हरिम् + वन्दे = हरिं वन्दे जगद्गुरुम्।

(i) अहम् + पुनः = पाठं पठिष्यामि।

(ii) अपूर्वः खलु = + आसीत् नाटके नायकस्य अभिनयः।

(iii) त्वं माम् = + आकारयसि किम्?

(iv) श्रेष्ठम् + कर्म = एव कर्तव्यम्।

$\frac{\text{पदान्त म्} + \text{व्यञ्जनवर्णः}}{\downarrow}$

अनुस्वारः (·) (परिवर्तनम्)

(छ) आ. अति सम् + चयः = सञ्चयः न कर्तव्यः।

(i) शीतकाले शैत्यं कम्पनम् + च = अप्यनुभूयते।

(ii) शीतकाले रात्रौ सञ्चरणम् = + दुष्करम्।

(iii) भुजनगरम् + तु = गुजरातराज्ये अस्ति।

(iv) त्वं किमर्थं कुम् + ठितः = असि?

$\frac{\text{म्/ अनुस्वारः} + \text{वर्गीय- व्यञ्जनम्}}{\downarrow}$

परवर्ति-वर्गस्य पञ्चमः- (परिवर्तनम्)

विसर्ग-सन्धिः

1. उदाहरणमनुसृत्य सन्धिं सन्धिविच्छेदं वा कुरुत —

(क) हे मित्र! नमः + ते = नमस्ते ।

(i) शत्रोः अपि शिरः + छेदः = शिरश्छेदः न करणीयः ।

(ii) कठिना परिस्थितिः दारुणः + च = कालः ।

(iii) तुरड्गाः + तुरड्गैः = सह धावन्ति ।

(iv) धनुष्टङ्कारः = + श्रूयते ।

(v) सः कठिनं तपस्तेपे = + ।

विसर्ग (:) + श्, च्, छ्

श् (परिवर्तनम्)

विसर्ग + स्, त्, थ्

स् (परिवर्तनम्)

विसर्ग + ष्, ट्, ठ्

ष् (परिवर्तनम्)

(ख) रामः वनमगच्छत् लक्ष्मणः + अपि = लक्ष्मणोऽपि तेन सह अगच्छत् ।

(i) निर्धनः + जनः = निर्धनो जनः धनाभावे सदा दुःखितः भवति ।

(ii) चौरः + अयम् = मम स्यूतं चोरितवान् ।

(iii) एकस्मिन् वने व्याघ्रः + नष्टः = अभवत् ।

(iv) पण्डितो जनः = + विद्वान् भवति ।

(v) सः पठति ततोऽसौ = + लिखति ।

(vi) तस्य मनोरथः = + सिध्यति ।

(ग) वने वह्निः + दह्यते = वह्निदह्यते पादपान् ।

विसर्ग (:) + अ

उ (गुण ओ) + ऽ (अवग्रहः)

विसर्ग (:) + वर्गस्य तृतीयः, चतुर्थः वर्णः, य्, र्, ल्, व्, ह्

उ (गुण ओ)

- (i) वसन्ते प्रकृतिः + एव = प्रकृतिरेव मनोहारिणी।
- (ii) कन्या पितुः + गृहम् = त्यक्त्वा पतिगृहं गच्छति।
- (iii) नाविकः = + नौकां चालयति।
- (iv) नाटककारः कविरपि = + च काव्यं कुरुतः।
- (v) अहं पदातिरेव = + विद्यालयम्
आगच्छामि।

अ, आ भिन्नस्वरात् परः विसर्गः + स्वरः, वर्गस्य तृतीयः, चतुर्थः पञ्चमो
वा वर्णः स्यात्

↓
र् (परिवर्तनम्)

(ष) ध्यानेन न पठसि अतः + एव = अत एव उत्तमाङ्गकान् न प्राप्नोषि।

- (i) आकाशे = + कपोता उत्पतन्ति।
- (ii) अर्जुनः + उवाच = अहं युद्धं न करिष्यामि।
- (iii) विद्यालयं बालका आगच्छन्ति + पठन्ति च।
- (iv) बसयानेन स गच्छति = + विद्यालयम्।
- (v) एषः + आगच्छति = कार्यं करोति पठति च।

अनुनासिकसन्धिः

1. अधोलिखितानि वाक्यानि ध्यानेन पठत—

- (क) एतन् शोभनीयम्
- (i) तन् उचितम्।
 - (ii) वाङ्मयं तपः।
 - (iii) तन्मयो भूत्वा कार्यं कुरु।
 - (iv) एतन्मुरारिः अस्ति।
 - (v) तन्नाम किमस्ति।

उपरि लिखितानि सर्वाणि उदाहरणानि अनुनासिकसन्धेः सन्ति।

अनुनासिकसन्धौ पूर्वपदस्य अन्तिमः वर्णः यदि वर्गस्य कोऽपि वर्णः भवति, उत्तरपदस्य
प्रथमः वर्णः यदि अनुनासिकवर्णः भवति तदा पूर्वपदस्य अन्तिमवर्णः स्ववर्गस्य
पञ्चमवर्णं परिवर्तितः भवति। यथा —

अभ्यासवान् भव — दशमकक्षायाः

तन्नाम - तत् (त्) + नाम
वर्गस्य प्रथमः वर्णः+वर्णस्य अन्तिमः वर्णः
तदा त् वर्णः स्वर्गस्य अन्तिमे 'न्' इति वर्णे परिवर्तितः भवति ।
एते सर्वे वर्णाः अनुनासिकवर्णाः सन्ति।
यथा- ङ्, ज्, ण्, न्, म्

अभ्यासः

1. अधोलिखितानां सन्धिं सन्धिविच्छेदं वा कुरुत —

- (i) हे ईश्वर! सन्मति यच्छ।
- (ii) हे छात्राः! सत् + मार्गे चलता।
- (iii) प्रलयकाले सर्वत्र अम्मयं भवति।
- (iv) जगन्नाथः सर्वान् रक्षति।
- (v) तन्मात्रम् एव खादा।
- (vi) कक्षायां षट्+नवति: छात्राः सन्ति।
- (vii) सा जगत्+माता इति रूपेण प्रसिद्धा अस्ति।
- (viii) मम सन्मुखे तिष्ठ।
- (ix) दिक्+नागः सर्वान् रक्षति।

तुक् आगम-सन्धिः

2. अधोलिखितानि वाक्यानि पठत —

- (i) ग्रीष्मे जनाः वृक्षच्छायां सेवन्ते।
- (ii) हे छात्राः! एकम् अनुच्छेदं लिखत।
- (iii) पुरा भारते एकच्छत्रं राज्यम् आसीत्।
- (iv) आकाशः मेघैः आच्छन्नः अस्ति।
- (v) सम्बन्ध-विच्छेदः न करणीयः।

- उपरि यानि रेखाङ्कितपदानि सन्ति तानि सर्वाणि 'तुक्' आगम-सन्धेः उदाहरणानि सन्ति ।
- तुक्-आगमः - सन्धौ यदि पूर्वपदे 'अ, इ, उ, ऋ स्वराः भवन्ति उत्तरपदे च 'छ' भवति तदा उभयोः पदयोः मध्ये 'च्' वर्णः आगच्छति।
- परं यदि पूर्वपदे आ, ई ऊ स्वराः भवन्ति तदा 'च्' वर्णस्य आगमः विकल्पेन भवति।
- यथा- लक्ष्मी-छाया = लक्ष्मी छाया/लक्ष्मीच्छाया

3. अधोलिखितानां सन्धिं सन्धिविच्छेदं वा कुरुत —

- (i) शोधच्छात्रः —
- (ii) विच्छेदः —
- (iii) अनु+छेदः —
- (iv) परि+छेदः —
- (v) लक्ष्मीच्छाया —
- (vi) वृक्ष+छाया —
- (vii) तव+छविः —
- (viii) वृक्षच्छेदनम् —
- (ix) छुरिका+ छिन्नः —
- (x) शब्दच्छेदः —



समासः

- श्रुतिः — अहं दिनं दिनं विद्यायाः आलयम् समयम् अनतिक्रम्य गच्छामि।
 अनुकृतिः — अहम् अपि प्रतिदिनं विद्यालयं यथासमयं गच्छामि।
 श्रुतिः — किं त्वं जानासि यद् वसुदेवस्य सुतः: कः आसीत्?
 अनुकृतिः — जानामि। वसुदेवसुतः श्रीकृष्णः आसीत्।
 श्रुतिः — मह्यं पीतः वर्णः रोचते। सः अपि पीतम् अम्बरं धारयति स्मा।
 अनुकृतिः — सत्यं वदसि। सः पीताम्बरं धारयति स्म अतः सः ‘पीताम्बरः’ इति नाम्ना अपि प्रसिद्धः। मया पठितं यत् कृष्णः च बलरामः च यमुनायाः तटे क्रीडतः स्म।

श्रुतिः — मयापि पठितं यत् कृष्णबलरामौ यमुनातटे क्रीडतः स्म।

उपरिलिखितेषु संवादवाक्येषु श्रुतिः यानि वाक्यानि वदति तेषु रेखाङ्कित-पदानि पृथक् पृथक् सन्ति परन्तु अनुकृतिः यानि वाक्यानि वदति तेषु वाक्येषु तानि एव रेखाङ्कित-पदानि समस्तरूपेण (संक्षिप्तरूपेण) योजयित्वा प्रदर्शितानि सन्ति। यथा शब्दानां पृथक्-पृथक् लेखनं ‘विग्रहः’ कथ्यते तथैव समस्तरूपेण (संक्षिप्तरूपेण) वा लेखनं ‘समासः’ इति कथ्यते।

समासानां विभाजनं मुख्यतः चतुर्धा भवति —

1. अव्ययीभावः
2. तत्पुरुषः
3. द्वन्द्वः
4. बहुव्रीहिः

(कर्मधारयः द्विगुः चेति तत्पुरुष-समासस्य एव द्वौ भेदौ स्तः।)

1. अव्ययीभावः

- (क) प्रायः जनाः प्रत्यक्षम् एव सत्यं स्वीकुर्वन्ति।
- (ख) तस्मिन् विद्यालये प्रतिमासं परीक्षाः भवन्ति।
- (ग) छात्राः यथामति अध्ययनं कुर्वन्ति।
- (घ) हरिद्वारे उपगङ्गम् अनेके देवालयाः सन्ति।

उल्लिखितवाक्येषु रेखाङ्कितपदेषु चतसः विशेषताः सन्ति —

- (i) सर्वेषु पदेषु प्रथम्/ पूर्व-पदम् अव्ययम् उपसर्गो वा अस्ति।
- (ii) सर्वाणि पदानि नपुसंकलिङ्गे सन्ति।
- (iii) सर्वेषां पदानां प्रयोगः अव्ययवत् भवति।
- (iv) एतेषु समस्तपदेषु पूर्वपदम् प्रधानम् अस्ति यतो हि वाक्येषु क्रियापदानि प्रथम्/ पूर्व पदस्य अनुसारम् अर्थं बोधयन्ति।

इत्थं वयं जानीमः यत् अव्ययीभावसमासः पूर्वपदप्रधानः भवति। अयं समासः सर्वदा नुपुसंकलिङ्गे तिष्ठति।

एवम् अव्ययीभावसमासां स्पष्टरूपेण विज्ञाय अस्य इतराणि उदाहरणानि द्रष्टव्यानि —

क्रमः	समस्तपदम्	विग्रहः
1.	यथामति	मतिम् अनतिक्रम्य
2.	अनुगुणम्	गुणानाम् अनुरूपम्
3.	निर्बाधम्	बाधानाम् अभावः
4.	अनुरथम्	रथस्य पश्चात्
5.	निर्विघ्नम्	विघ्नानाम् अभावः
6.	प्रतिमासम्	मासं मासम् इति
7.	उपगुरु	गुरोः समीपम्
8.	अधिहरि	हरौ इति
9.	सपरिवारम्	परिवारेण सह
10.	प्रतिदिनम्	दिने दिने इति

अभ्यासः

प्रदत्त-तालिकायां समस्तपदं विग्रहं वा लिखत —

क्रमः	समस्तपदम्	विग्रहः
1.	निर्मलम्
2.	एकम् एकम् इति
3.	दोषाणाम् अभावः
4.	सव्यवधानम्

अभ्यासवान् भव — दशमकक्षायाः

5.	निर्थकम्
6.	चिन्तायाः अभावः
7.	स्नेहेन सहितम्
8.	समयम् अनतिक्रम्य
9.	गङ्गायाः समीपम्
10.	सहर्षम्

2. तत्पुरुषः

- (i) वानराः वृक्षोपरि क्रीडन्ति। (वृक्षस्य उपरि)
- (ii) वनराजः उच्चैः गर्जति। (वनस्य राजा)
- (iii) संन्यासी पदनिर्लिप्तः भवति। (पदाय निर्लिप्तः)
- (iv) रामः शरणागतं विभीषणम् अरक्षत्। (शरणम् आगतम्)
- (v) चिकित्सकः अग्निदग्धस्य उपचारम् अकरोत्। (अग्निना दग्धस्य)

उल्लिखितेषु उदाहरणेषु वर्यं पश्यामः यत्—

- (i) प्रथम/पूर्वपदेषु द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, षष्ठी चेति भिन्न-भिन्नविभक्तीनां प्रयोगः वर्तते।
- (ii) क्रियायाः प्रयोगः द्वितीय/उत्तरपदाय भवति।

अतः यस्मिन् समासे प्रथम/ पूर्वपदेषु द्वितीया विभक्तितः सप्तमी विभक्ति-पर्यन्तं विभिन्नविभक्तीनां प्रयोगः भवति सः समासः तत्पुरुषसमासः भवति।

तत्पुरुषसमासस्य इतराणि उदाहरणानि—

क्रम	समासः	विग्रहः	उपभेदः
1.	ग्रामगतः	ग्रामं गतः	द्वितीया-तत्पुरुषः
2.	पर्वतारूढः	पर्वतम् आरूढः	द्वितीया-तत्पुरुषः
3.	कालिदासलिखितम्	कालिदासेन लिखितम्	तृतीया-तत्पुरुषः
4.	चक्रहतः	चक्रेण हतः	तृतीया-तत्पुरुषः
5.	यज्ञसामग्री	यज्ञाय सामग्री	चतुर्थी-तत्पुरुषः
6.	निद्राकुलः	निद्रया आकुलः	चतुर्थी-तत्पुरुषः
7.	सिंहभीतः	सिंहात् भीतः	पञ्चमी-तत्पुरुषः

8.	आकाशपतितम्	आकाशात् पतितम्*	पञ्चमी-तत्पुरुषः
9.	गृहपतिः	गृहस्य पतिः	षष्ठी-तत्पुरुषः
10.	गौरीशः	गौर्या: ईशः	षष्ठी-तत्पुरुषः
11.	सङ्गीतपटुः	सङ्गीते पटुः	सप्तमी-तत्पुरुषः
12.	चिन्तामनः	चिन्तायां मनः	सप्तमी-तत्पुरुषः
13.	असत्यम्	न सत्यम्	नव्-तत्पुरुषः
14.	अनुपकारः	न उपकारः	नव्-तत्पुरुषः

*आकाशात् पतितं तोयं यथा गच्छति सागरम्। सर्वदेवनमस्कारः केशवं प्रति गच्छति॥

अभ्यासः

अधोलिखितेषु समासं विग्रहं वा कृत्वा लिख्यताम्—

क्रमः	समासः	विग्रहः
1.	न्यायस्य अधीशः
2.	देहविनाशः
3.	न मन्त्रः
4.	अयोग्यः
5.	वृक्षोपरि
6.	निद्राया: भज्जस्य दुःखम्
7.	वनराजः राजा
8.	नराणां पतिः
9.	पक्षिकुलम्
10.	प्रीतेः लक्षणम्
11.	निशान्धकारे
12.	न पक्वम्
13.	मृत्तिकाक्रीडनकम्
14.	वृद्धेः लाभाः
15.	अधर्मः

**कर्मधारयः
(विशेषण-विशेष्यौ)**

- (i) कृष्णसर्पः बिलम् प्राविशत् (कृष्णः च एषः सर्पः/कृष्णः सर्पः)
 - (ii) महादेवी करुणां करोतु (महती च इयं देवी/ महती देवी)
 - (iii) महावृक्षः फलानि ददाति (महान् च अयं वृक्षः/महान् वृक्षः)
- (उपमानोपमेयौ (उपमान+उपमेयौ))
- (i) सिंहपुरुषः/पुरुषसिंहः श्रीरामः रावणं हतवान् (सिंह इव पुरुषः/पुरुषः सिंहः इव)
 - (ii) देव्या: कमलनेत्रे दृष्ट्वा भक्तः प्रसन्नः अभवत् (कमले इव नेत्रे)
 - (iii) तस्याः चन्द्रमुखं दृष्ट्वा सः मोहितः अभवत् (चन्द्रः इव मुखम्)

उल्लिखितेषु वाक्येषु रेखाङ्कितपदेषु विशेषणविशेष्ययोः अथवा उपमानोपमेययोः प्रयोगः अस्ति। एतेषु विशेष्यपदम् अथवा उपमेयपदम् एव प्रधानं भवति। उपमानपदस्य पश्चात् ‘इव’ इति अव्ययस्य प्रयोगेण उपमानोपमेय-कर्मधारयसमासस्य विग्रहः भवति। किन्तु विशेषण-विशेष्ययोः प्रथमा-विभक्त्याः प्रयोगेण समाप्तविग्रहः भवति।

अभ्यासः

1. समस्तपदं विग्रहं वा लिखत—

क्रमः	समस्तपदम्	विग्रहः
1.	महान् वृक्षः
2.	पुरुषव्याघ्रः
3.	महत् कम्पनम्
4.	महाविनाशः
5.	रक्तम् उत्पलम्
6.	पीतपुष्पाणि
7.	घन इव श्यामः
8.	महोत्सवः
9.	विशालः पर्वतः
10.	महागौरी

द्विगु-समासः

- (i) जगत्पालकः त्रिलोकं रक्षति।
- (ii) नवरात्रे सः सप्तशतीं पठति।
- (iii) दानस्य महत्वं चतुर्युगं यावद् भवति।
- (iv) दण्डकारण्ये पञ्चवटीं इति स्थाने श्रीरामः सीतया लक्ष्मणेन च सह अवसत्।
- (v) इयं शताब्दी विज्ञानस्य अस्ति।

उल्लिखितेषु वाक्येषु रेखाङ्कितपदेषु चतस्रः विशेषताः सन्ति —

- (क) एतानि पदानि सङ्ख्याशब्दैः प्रारभन्ते।
- (ख) बहुवचनसङ्ख्याप्रयोगे अपि सर्वेषु पदेषु एकवचनस्य प्रयोगः विद्यते।
- (ग) समस्तपदानि नपुंसकलिङ्गे अथवा स्त्रीलिङ्गे भवन्ति।
- (घ) समस्तपदानि/समूहस्य/समाहारस्य बोधं कारयन्ति।

एतादृशाः समासाः/एतादृशानि समस्तपदानि द्विगुसमासाः कथ्यन्ते।

इत्थं वयं जानीमः यत् द्विगुसमासेषु प्रथमशब्दः सङ्ख्यावाचको भवति। एते समासाः नपुंसकलिङ्गे स्त्रीलिङ्गे वा भवन्ति।

समाहार/समूहकारणात् एतेषां समासानां विग्रहः एवं भवति —

क्रमः	समस्तपदम्	विग्रहः
1.	नवरात्रम्	नवानां रात्रीणां समाहारः
2.	पञ्चवटी	पञ्चानां वटानां समाहारः
3.	चतुर्युगम्/चतुर्युगी	चतुर्णा युगानां समाहारः
4.	त्रिलोकम्/त्रिलोकी	त्रयाणां लोकानां समाहारः
5.	शताब्दम्/शताब्दी	शतस्य अब्दानां समाहारः

अधोलिखित-तालिकायाम् समस्तपदं विग्रहं वा लिखत —

क्रमः	समस्तपदानि	विग्रहः
1.	सप्तानाम् अहां समाहारः
2.	पञ्चानां पात्राणां समाहारः
3.	त्रयाणां भुवनानां समाहारः
4.	पञ्चरात्रम्
5.	अष्टाध्यायी

3. द्वन्द्व-समासः

(i) इतरेतरद्वन्द्वः

- (i) दशरथस्य चत्वारः पुत्राः रामलक्ष्मणभरतशत्रुघ्नाः आसन्। (रामः च लक्ष्मणः च भरतः च शत्रुघ्नः च)
- (ii) रामलक्ष्मणौ मिथिलाम् अगच्छताम् (रामः च लक्ष्मणः च)
- (iii) मयूरीकुकुटौ संवदतः/कुकुटमयूर्यौ संवदतः। (मयूरी च कुकुटः च/कुकुटः च मयूरी च)

अभ्यासवान् भव — दशमकक्षायाः

उल्लिखितवाक्येषु चतस्रः विशेषताः सन्ति —

- (i) समासेषु शब्दानां सङ्ख्यायाः अनुसारं द्विवचनं, बहुवचनं वा प्रयुक्तम्।
- (ii) वाक्येषु सर्वेषां पदानां सङ्ख्यायाः अनुसारं क्रियापदस्य वचनं निर्धारितम् भवति
अतः सर्वाणि पदानि प्रधानानि सन्ति।
- (iii) समासस्य अन्तिमपदानुसारं समासस्य लिङ्गं निर्धार्यते।

(ii) समाहार द्वन्द्वः

- (i) योगिनं शीतोष्णं न बाधते। (शीतं च उष्णं च, तयोः समाहारः)
- (ii) सः पुत्रपौत्रं दृष्ट्वा प्रसीदति। (पुत्रः च पौत्रः च, तयोः समाहारः)
- (iii) सः दिवारात्रं प्रसन्नः तिष्ठति। (दिवा च रात्रिः च, तयोः समाहारः)

उल्लिखितवाक्येषु रेखाङ्कितपदेषु यद्यपि द्वे एव पदे प्रधाने परन्तु तयोः समाहार/समूह-कारणात् एकवचनस्य प्रयोगः अभवत् एवम् एतेषु उदाहरणेषु अधोलिखित-विशेषताः सन्ति —

- (i) समस्तपदानि नपुंसकलिङ्गे एकवचने सन्ति।
- (ii) द्वयोः पदयोः एकः समाहारः भवति।

(iii) एकशेषद्वन्द्वः

पितरौ= माता च पिता च- अत्र एकस्य पितृशब्दस्य द्विवचने प्रयोगेण एकशेषद्वन्द्वः समासः कथ्यते। इतरेतरद्वन्द्व समासे ‘मातापितरौ’ इत्यस्य अपि प्रयोगः भवति।

अभ्यासः

अधोलिखिततालिकायां समस्तपदेभ्यः विग्रहं विग्रहेभ्यः च समस्तपदानि लिख्यन्ताम्—

क्रमः	समस्तपदानि	विग्रहः
1.	अग्निसोमौ
2.	पाणिपादम्
3.	सीता च रामः च
4.	इन्द्रः च वरुणः च
5.	रमा च शारदा च
6.	धर्मः च अर्थः च कामः च मोक्षः च
7.	लतापुष्पम्
8.	मूषकः च माजारः च
9.	अहोरात्रम्
10.	सुखं च दुःखम् च

4. बहुव्रीहिः

- (i) चतुर्मुखः ब्रह्मा सृष्टिरचनां करोति। (चत्वारि मुखानि यस्य सः)
- (ii) चतुर्भुजः विष्णुः सृष्टे पालनं करोति। (चतसः भुजाः यस्य सः)
- (iii) त्रिनेत्रः शिवः जगत् संहरति। (त्रीणि नेत्राणि यस्य सः)
- (iv) क्रूरकर्मा जनः आतङ्कवादी भवति। (क्रूरं कर्म यस्य सः)
- (v) सिंहवाहना दुर्गा महिषासुरस्य वधम् अकरोत्। (सिंहः वाहनं यस्याः सा)

उल्लिखितवाक्येषु रेखाङ्कितपदेषु किमपि पदं प्रधानं नास्ति। अपि तैः पदैः सङ्केतितं किमपि अन्यद् एव पदं प्रधानम् अस्ति। एतेषु समासेषु अधोलिखिताः विशेषताः सन्ति।

- (i) द्वे पदे मिलित्वा अन्यपदं सङ्केतयन्ति।
- (ii) द्वे पदे यदा परस्परं विशेषणम् विशेष्यं च भवतः तदा ते प्रथमाविभक्तौ समानलिङ्गे च तिष्ठतः।
- (iii) विग्रहाय अन्ते यस्य सः/यस्याः सा इत्यादीनां प्रयोगः भवति।

इत्थं वयं जानीमः यद् बहुव्रीहिसमासः अन्यपदप्रधानः भवति। यदा बहुव्रीहिसमासे द्वे पदे एकस्मिन् एव विभक्तौ भवतः तदा समानाधिकरण-बहुव्रीहिः भवति। बहुव्रीहिसमासे यदा द्वे पदे पृथक्-पृथक्- विभक्तौ भिन्न-लिङ्गे वा तदा व्यधिकरण-बहुव्रीहिः समासः भवति।

अभ्यासः

अधोलिखितसमस्तपदेभ्यः विग्रहाः, विग्रहेभ्यः च समस्तपदानि लिख्यन्ताम्—

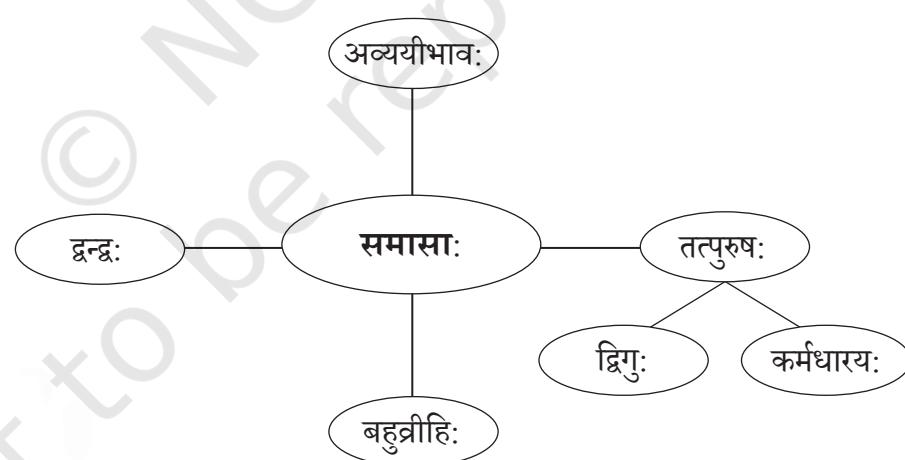
क्रमः	समस्तपदानि	विग्रहः
1.	लम्बम् उदरं यस्य सः
2.	पीताम्बरः
3.	कृतः उपकारः येन सः
4.	प्रत्युत्पन्नमतिः
5.	गज इव आननं यस्य सः
6.	चन्द्रमुखी
7.	चक्रं पाणौ यस्य सः
8.	चन्द्रमौलिः
9.	बहूनि कमलानि यस्मिन् तत्
10.	जितानि इन्द्रियाणि येन सः

अभ्यासवान् भव — दशमकक्षाया:

मिश्रिताभ्यासः

अधोलिखितसमस्तपदेभ्यः विग्रहाः विग्रहेभ्यः च समस्तपदानि निर्माय तेषां नामानि
अपि लिख्यन्ताम्—

क्रमः	समस्तपदम्	विग्रहः	समासनाम
1.	मेघश्यामः
2.	न युक्तम्
3.	देहविनाशाय
4.	नीलं च तत् कमलम्
5.	हर्षेण मिश्रितम्
6.	कर्कशः ध्वनिः
7.	पञ्चानां वटानां समाहारः
8.	वनराजः
9.	स्थिता प्रज्ञा यस्यः सः
10.	माता च पिता च





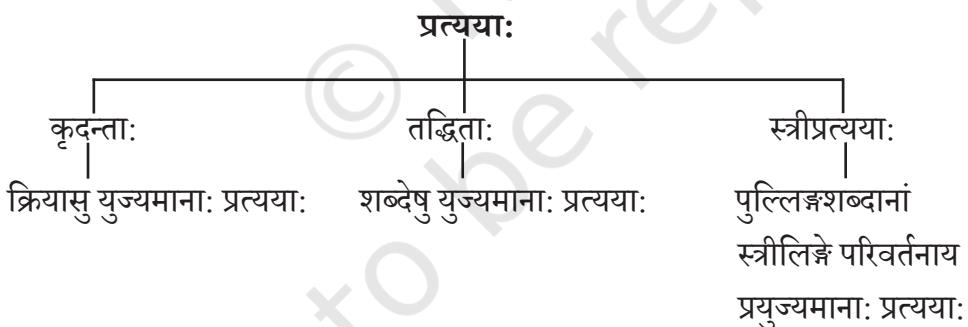
प्रत्ययः

1. अधोलिखितानि वाक्यानि पठत—

- (i) बालकः पठितुं विद्यालयं गच्छति।
- (ii) पठित्वा गुरुं प्रणम्य सः गृहमागच्छति।
- (iii) ततः सः तर्तुम् तरणतालं गच्छति।
- (iv) तस्य मित्रं व्यायामं कर्तुं व्यायामशालां गच्छति।
- (v) ततः आगत्य तौ पाठान् स्मरतः।

उपरिलिखितानि रेखाङ्कितपदानि प्रत्यययुक्तानि सन्ति। भवन्तः नवकक्षायां एतान् प्रत्ययान् पठितवन्तः, अधुना तेषां पुनरभ्यासं कृत्वा एतानि अतिरिच्च्य कठिपयान् प्रत्ययान् पठिष्यामः।

- (क) शब्दस्य धातोः वा अन्ते ये शब्दांशाः प्रयुज्यन्ते ते प्रत्ययाः भवन्ति।
- (ख) प्रत्ययानां योगेन शब्दस्य अर्थः परिवर्तते।
- (ग) प्रत्ययाः त्रिविधाः भवन्ति।



ध्यातव्यम् तथ्यम्—

- (क) कृत्वा-तुमुन्-प्रत्यययुक्तानि पदानि अव्ययानि भवन्ति।
- (ख) धातुना विशेषणं निर्मातुं, ‘कर्तुं योग्यम्’ इत्यर्थे तव्यत्, अनीयर् यत् प्रत्ययाः प्रयुज्यन्ते।
- (ग) धातुना (क्रियया) विशेषणं निर्मातुं शतृशानचौ प्रत्ययौ प्रयुज्येते।
- (घ) भूतकालिकक्रियाणां प्रयोगाय कत-कतवत् प्रत्ययौ प्रयुज्येते।
- (ङ) अनेन गुणेन युक्त इत्यर्थे मतुप्/वतुप्, ठक्, णिनि च प्रत्ययाः प्रयुज्यन्ते।
- (च) भाववाचकसंज्ञां विज्ञापयितुं त्व, तल् च प्रत्ययौ प्रयुज्येते।

शतृ-प्रत्ययः

2. अधोलिखितानि वाक्यानि ध्यानेन पठन्तु—

- (i) ध्यायतः विषयान् पुंसः तेषु सङ्गः उपजायते।
- (ii) गच्छन्तः यात्रिणः जल्पन्ति।
- (iii) खादन् नरः न वदति।
- (iv) चिन्तयन् लवः लिखति।
- (v) गायन्ती बालिका प्रशंसां प्राप्नोति।
- (vi) पतत् फलं त्रुट्यति (विभक्तं भवति)

उपरिलिखितेषु वाक्येषु रेखाङ्कितपदानि शतृ-प्रत्यययुक्तानि सन्ति। शतृप्रत्यययुक्तानि पदानि विशेषणानि भवन्ति। एतेषां रूपम् एवं भवति—

पठ्	+	शतृ	-	पठत्
लिख्	+	शतृ	-	लिखत्
धाव्	+	शतृ	-	धावत्
गम्	+	शतृ	-	गच्छत्
भू	+	शतृ	-	भवत्
नी	+	शतृ	-	नयत्
क्रीड़	+	शतृ	-	क्रीडत्
ब्रू	+	शतृ	-	वदत्
श्रु	+	शतृ	-	शृणवत्
कृ	+	शतृ	-	कुर्वत्
पा/पिब्	+	शतृ	-	पिबत्

एतेषां पदानां प्रयोगं पश्यामः— (पुलिलङ्घः)

विभक्तिः एकवचनम्

प्रथमा	पठन्	बालकः
द्वितीया	पठन्तं	बालकम्
तृतीया	पठता	बालकेन
चतुर्थी	पठते	बालकाय
पञ्चमी	पठतः	बालकात्
षष्ठी	पठतः	बालकस्य
सप्तमी	पठति	बालके
सम्बोधनम्	हे पठन्	बालक!

द्विवचनम्

पठन्तौ	बालकौ
पठन्तौ	बालकौ
पठदभ्यां	बालकाभ्याम्
पठदभ्यां	बालकाभ्याम्
पठदभ्यां	बालकाभ्याम्
पठतोः	बालकयोः
पठतोः	बालकयोः
हे पठन्तौ	बालकौ!

बहुवचनम्

पठन्तः	बालकाः
पठतः	बालकान्
पठद्विः	बालकैः
पठद्वयः	बालकेभ्यः
पठद्वयः	बालकेभ्यः
पठतां	बालकानाम्
पठत्सु	बालकेषु
हे पठन्तः	बालकाः!

(स्त्रीलिङ्ग)

विभक्ति:	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पठन्ती बालिका	पठन्त्यौ बालिके	पठन्त्यः बालिकाः
द्वितीया	पठन्तीं बालिकाम्	पठन्त्यौ बालिके	पठन्तीः बालिकाः
तृतीया	पठन्त्या बालिकया	पठन्तीभ्यां बालिकाभ्याम्	पठन्तीभिः बालिकाभिः
चतुर्थी	पठन्त्यै बालिकायै	पठन्तीभ्यां बालिकाभ्याम्	पठन्तीभ्यः बालिकभ्यः
पञ्चमी	पठन्त्याः बालिकायाः	पठन्तीभ्यां बालिकाभ्याम्	पठन्तीभ्यः बालिकभ्यः
षष्ठी	पठन्त्याः बालिकायाः	पठन्त्योः बालिकयोः	पठन्तीनाम् बालिकानाम्
सप्तमी	पठन्त्याम् बालिकायाम्	पठन्त्योः बालिकयोः	पठन्तीषु बालिकासु
सम्बोधनम्	हे पठन्ति बालिके!	हे पठन्त्यौ बालिके!	हे पठन्त्यः बालिकाः!

(नपुंसकलिङ्ग)

विभक्ति:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	पतत् फलम्	पतती फले	पतन्ति फलानि
द्वितीया	पतत् फलम्	पतती फले	पतन्ति फलानि
तृतीया	पतता फलेन	पतद्भ्याम् फलाभ्याम्	पतद्धिः फलैः
चतुर्थी	पतते फलाय	पतद्भ्याम् फलाभ्याम्	पतद्धयः फलेभ्यः
पञ्चमी	पततः फलात्	पतद्भ्याम् फलाभ्याम्	पतद्धयः फलेभ्यः
षष्ठी	पततः फलस्य	पततोः फलयोः	पतताम् फलानाम्
सप्तमी	पतति फले	पततोः फलयोः	पतत्सु फलेषु
सम्बोधनम्	हे पतत् फल!	हे पतती फले!	हे पतन्ति फलानि!

शानच् प्रत्ययः

3. शानच्-प्रत्यययुक्तपदानि अपि विशेषणानि भवन्ति।

परस्मैपदि-धातुभिः सह शतृप्रत्ययः प्रयुज्यते। आत्मनेपदिधातुभिः सह शानच् प्रत्ययः अपि प्रयुज्यते —

सेव्	+	शानच्	-	सेवमानः
मुद्	+	शानच्	-	मोदमानः
रुच्	+	शानच्	-	रोचमानः
वृद्ध्	+	शानच्	-	वर्धमानः
सह्	+	शानच्	-	सहमानः
लभ्	+	शानच्	-	लभमानः

अभ्यासवान् भव — दशमकक्षाया:

एतेषां प्रयोगान् अथः पश्यामः—

सेवमानः बालकः	सेवमानौ बालकौ	सेवमानाः बालकाः
एतस्य रूपाणि पुँलिङ्गे बालकवत् भवन्ति।		
सेवमाना बालिका	सेवमाने बालिके	सेवमानाः बालिकाः
एतस्य रूपं स्त्रीलिङ्गे लतावत् चलति।		
लभमानं धनम्	लभमाने धने	लभमानानि धनानि
सेवमानं मित्रम्	सेवमाने मित्रे	सेवमानानि धनानि
नपुंसकलिङ्गे एतस्य रूपं फलवत् भवति।		

अभ्यासः

1. शतृप्रत्ययं योजयित्वा वाक्यपूर्ति कुरूत —

- (i) धावकाः यशः प्राप्नुवन्ति। (धाव्+शतृ)
- (ii) वस्त्राणि रजकः श्रान्तः भवति। (नी+शतृ)
- (iii) जलं तृषातौ सन्तुष्टौ स्तः। (पिब्+शतृ)
- (iv) कथां महिला शिशुं शाययति। (श्रु+णिच्+शतृ)
- (v) कार्यं स्त्रियः गीतं गायन्ति। (कृ+शतृ)

2. शानच्चप्रत्ययं योजयित्वा वाक्यपूर्ति कुरूत —

- (i) गुरुं सेव्+शानच् छात्राः सफलतां लभन्ते।
- (ii) कष्टं सह+शानच् जनाः दुःखिनः भवन्ति।
- (iii) सत्यं ब्रू+शानच् नराः सम्मानं प्राप्नुवन्ति।
- (iv) तस्य वृध्+शानच् प्रगतिः पितरं हर्षयति।
- (v) मुद्+शानच् बालिका नृत्यति।

3. अधोलिखितवाक्येषु रेखाङ्कितपदस्य शुद्धमुक्तरं प्रदत्तेभ्यः विकल्पेभ्यः चित्वा लिखत —

(क) कथां श्रु+शतृ महिलाः ज्ञानं लभन्ते।

शृण्वन्	शृण्वती	शृण्वत्यः
---------	---------	-----------

(ख) गम्+शतृ बालिके चिन्तयतः।

गच्छन्ती	गच्छन्त्यौ	गच्छन्तौ
----------	------------	----------

(ग) वद्+शतृ बालकम् आकारया	वदन्	वदन्तौ	वदन्तम्
(घ) धाव्+शतृ क्रीडकेन पथिकः आहतः।	धावन्	धावन्तम्	धावता
(ङ) श्रान्तः भू+शतृ अरुणः स्वपिति।	भवन्	भवन्तौ	भवन्तः।

तव्यत्-प्रत्ययः

अधोलिखितानि वाक्यानि पठत—

विधिलिङ्गलकारः

- (i) अमितः पाठं स्मरेत्।
- (ii) रमा लेखान् लिखेत्।
- (iii) वयं वृक्षान् आरोपयेम।
- (iv) वयं प्रतिदिनं दुग्धं पिबेम।
- (v) यूयं फलानि खादेत।
- (vi) छात्राः प्रश्नान् पृच्छेयुः।
- (vii) यूयं कार्यं कुर्यात्।
- (viii) सः धर्मं पालयेत्।
- (ix) सर्वे कथां शृणुयुः।
- (x) सः उच्चैः हसेत्।

‘तव्यत्’ प्रत्ययः

- अमितेन पाठः स्मर्तव्यः।
- रमया लेखा: लेखितव्याः।
- अस्माभिः वृक्षाः आरोपयितव्याः।
- अस्माभिः प्रतिदिनं दुग्धं पातव्यम्।
- युष्माभिः फलानि खादितव्यानि।
- छात्रैः प्रश्नाः प्रष्टव्याः।
- युष्माभिः कार्यं कर्तव्यम्।
- तेन धर्मः पालयितव्यः।
- सर्वैः कथा श्रोतव्या।
- तेन उच्चैः हसितव्यम्।

अत्र भवन्तः किं पश्यन्ति?

एतानि सर्वाणि वाक्यानि ‘तव्यत्’ प्रत्यययुक्तानि सन्ति।

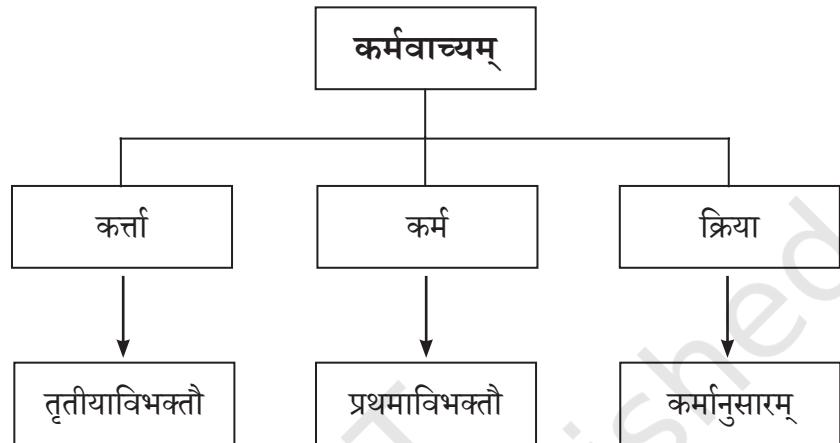
विशेषः—

- तव्यत्-प्रत्ययस्य प्रयोगः ‘विधिलिङ्गलकारस्य’ अर्थे भवति।
- अस्य अर्थः भवति सम्भावना, अनुमतिः इत्यादयः।
- तव्यत्-प्रत्ययस्य ‘त्’ वर्णस्य लोपः भवति ‘तव्य’ धातोः पश्चात् प्रयुज्यते।
यथा- पठ्+तव्यत्=पठितव्य
- प्रत्ययस्य पश्चात् अस्य रूपाणि—

अभ्यासवान् भव — दशमकक्षायाः

पुलिलङ्गे	— बालवत्	पठितव्यः	पठितव्यौ	पठितव्याः
स्त्रीलिङ्गे	— लतावत्	पठितव्या	पठितव्ये	पठितव्याः
नपुंसकलिङ्गे	— फलवत्	पठितव्यम्	पठितव्ये	पठितव्यानि

- ‘तव्यत्’ प्रत्ययस्य प्रयोगः कर्मवाच्ये भवति —



अभ्यासः

1. रिक्तस्थानानि पूरयत —

- रामेण पाठः | (लिख्+तव्यत्)
- लतया पुष्पाणि न | (त्रुट्+तव्यत्)
- त्वया जलं वृथा न | (कृ+तव्यत्)
- त्वया उच्चैः न | (वद्+तव्यत्)
- अस्माभिः बहिः | (भ्रम्+तव्यत्)
- सर्वैः सत्यं | (वद्+तव्यत्)
- युष्माभिः सन्तुलितभोजनम् एव | (खाद्+तव्यत्)
- अमितेन अवश्यमेव तत्र | (गम्+तव्यत्)
- नकुलेन पाठाः | (पठ्+तव्यत्)
- तैः धर्मः | (पाल्+तव्यत्)

2. कोष्ठकप्रदत्तशब्दैः सह उचितां विभक्तिं प्रयुज्य रिक्तस्थानानि पूरयत —

- एतत् कार्यं कर्तव्यम्। (अस्मद्)
- खगाः रक्षणीयाः। (युष्मद्)
- पाठाः पठितव्याः। (नमित)
- अनुशासनं पालयितव्यम्। (सर्व)



प्रत्ययः

- (v) देशरक्षा कर्तव्या। (सैनिक)
- (vi) मधुरं वक्तव्यम्। (जन)
- (vii) परिश्रमः कर्तव्यः। (श्रमिक)
- (viii) नियमाः पालयितव्याः। (अध्यापक)
- (ix) मनसा पाठयितव्यम्। (शिक्षक)
- (x) लेखौ लिखितव्यौ। (तत्)

3. कोष्ठकप्रदत्तशब्दैः सह उचितां विभक्तिं प्रयुज्य रिक्तस्थानानि पूर्यत —

- (i) न्यायाधीशेन कर्तव्यः। (न्याय)
- (ii) त्वया खादितव्यम्। (पौष्टिकभोजन)
- (iii) सर्वैः प्रातः कर्तव्यम्। (भ्रमण)
- (iv) तेन पठितव्याः। (कथा)
- (v) अस्माभिः स्मर्तव्याः। (पाठ)
- (vi) युष्माभिः एव सेवितव्यानि। (सुचरित)
- (vii) जनैः एव कर्तव्यानि। (सुकार्य)
- (viii) छात्रैः प्रष्टव्याः। (प्रश्न)
- (ix) बालैः न दूषयितव्यम्। (जल)
- (x) युष्माभिः न त्रोटयितव्यानि। (पुष्प)

अनीयर-प्रत्ययः

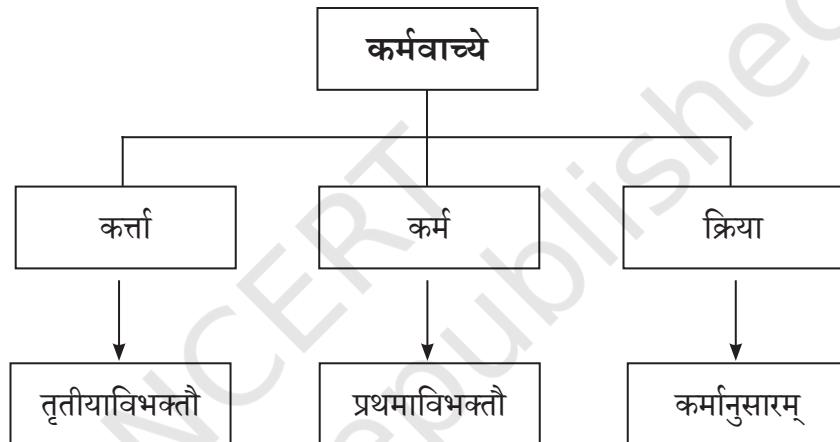
1. अधोलिखितानि वाक्यानि पठत —

- (i) बालैः वृद्धाः सदैव पूजनीयाः।
- (ii) छात्रैः अध्यापकाः सम्माननीयाः।
- (iii) अस्माभिः पितरौ पूजनीयौ।
- (iv) युष्माभिः गुरुणां आज्ञा पालनीया।
- (v) सर्वैः जलं रक्षणीयम्।
- (vi) जनैः धरा रक्षणीया।
- (vii) सर्वैः वृक्षाः आरोपणीयाः।
- (viii) अस्माभिः पुष्पाणि न त्रोटनीयानि।
- (ix) सर्वैः अनुशासनं पालनीयम्।
- (x) सुमितेन सुचरितानि सेवितव्यानि।

अभ्यासवान् भव — दशमकक्षायाः

उपरि यानि रेखाङ्कितानि पदानि सन्ति तानि ‘अनीयर्’ प्रत्यययुक्तानि सन्ति।

- ‘अनीयर्’ प्रत्ययस्य प्रयोगः योग्यार्थं भवति।
 - ‘अनीयर्’ प्रत्ययस्य ‘र्’ वर्णस्य लोपः भवति, केवलम् ‘अनीय’ धातोः पश्चात् प्रयुज्यते।
यथा- पठ्+अनीयर् = पठनीय।
 - धातोः पश्चात् यदा ‘अनीयर्’ प्रत्ययस्य प्रयोगः भवति तदा अस्य रूपाणि —
पुलिङ्गे — बालवत् = पठनीयः पठनीयौ पठनीयाः
स्त्रीलिङ्गे — लतावत् = पठनीया पठनीये पठनीयाः
नपुंसकलिङ्गे — फलवत् = पठनीयम् पठनीये पठनीयानि
- ‘अनीयर्’ प्रत्ययस्य प्रयोगः कर्मवाच्ये भवति।



1. अधोलिखितानि वाक्यानि पठित्वा ‘अनीयर्’ प्रत्यययुक्तपदानि चित्वा समक्षं लिखत —

पदानि

- | | |
|--|-------|
| (i) अस्माभिः धर्मः आचरणीयः। | |
| (ii) जनैः परिश्रमः करणीयः। | |
| (iii) सर्वैः पर्यावरणस्य रक्षा करणीया। | |
| (iv) बालैः नियमाः पालनीयाः। | |
| (v) त्वया एषः पाठः पठनीयः। | |
| (vi) सर्वैः समयस्य अनुपालनं कर्तव्यम्। | |
| (vii) त्वया कदापि वृथा न वदनीयम्। | |
| (viii) अनेन एतत् न करणीयम्। | |
| (ix) अस्माभिः दूषितं जलं न पानीयम्। | |
| (x) युष्माभिः पर्युषितम् अन्नं न खादनीयम्। | |

2. अधोलिखितेषु वाक्येषु ‘अनीयर्’ प्रत्यययुक्तानि पदानि इति (✓) चिह्नेन चिह्नितं कुरुत—

- (i) मनसा सततं स्मरणीयम्
- (ii) वचसा सततं वदनीयम्
- (iii) लोकहितं मम करणीयम्
- (iv) न भोगभवने रमणीयम्
- (v) न सुखशयने शयनीयम्
- (vi) अहर्निशं जागरणीयम्
- (vii) लोकहितं मम करणीयम्
- (viii) न जातु दुःखं गणनीयम्
- (ix) न च निजसौख्यं मननीयम्
- (x) कार्यक्षेत्रे त्वरणीयम्
- (xi) लोकहितं मम करणीयम्
- (xii) दुःखसागरे तरणीयम्
- (xiii) कष्टपर्वते चरणीयम्
- (xiv) विपत्तिविपिने भ्रमणीयम्
- (xv) लोकहितं मम करणीयम्
- (xvi) सदा मया सञ्चरणीयम्
- (xvii) लोकहितं मम करणीयम्

3. कोष्ठकप्रदत्तपदैः सह उचितां विभक्तिं प्रयुज्य रिक्तस्थानानि पूरयत—

- (i) युष्माभिः प्रातः उत्थाय | (पठ्+अनीयर्)
- (ii) जनैः सर्वदा सर्वेषां कल्याणं | (कृ+अनीयर्)
- (iii) अस्माभिः सुकार्याणि | (कृ+अनीयर्)
- (iv) सर्वैः ईशवन्दना | (स्मृ+अनीयर्)
- (v) त्वया मधुराणि वचनानि | (वद्+अनीयर्)
- (vi) सैनिकैः दुःखं न | (गण्+अनीयर्)
- (vii) अस्माभिः धर्मः | (आ+चर्+अनीयर्)
- (viii) त्वया वृथा न | (वच्+अनीयर्)
- (ix) जनैः प्रातः | (जागृ+अनीयर्)

4. उदाहरणानुसारं लिखत —

	पुलिङ्गे			स्त्रीलिङ्गे			नपुंसकलिङ्गे		
शब्दः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
हसनीय-	हसनीयः	हसनीयौ	हसनीया:	हसनीया	हसनीये	हसनीयाः	हसनीयम्	हसनीये	हसनीयानि
पठनीय-
पानीय-
ग्रहणीय-

तद्वित-प्रत्ययाः

शिक्षकः — अधोलिखितवाक्यानि ध्यानेन पठत —

- बुद्धिमान् सदैव सफलः भवति
- कीर्तिमान् सर्वत्र यशः प्राप्नोति
- धनवान् निर्धनस्य साहाय्यं करोति।
- शक्तिमान् जनः भारं वोदुं समर्थः भवति।
- बलवान् जनः निर्बलं न उपहरेत्।

एतेषु वाक्येषु कर्तृपदेषु वयं बुद्धिकीर्तिधनशक्तिबलम् इत्यादिषु किं योजितवन्तः येन अर्थः बुद्ध्या युक्तः, कीर्त्या युक्तः, शक्त्या युक्तः, बलयुक्तः च भवति।

छात्रः — महोदय! बुद्धिकीर्तिशक्तयः इत्यादिशब्देषु ‘मान्’ इति योजितः धन-बलशब्दाभ्यां वान् इति योजितः।

शिक्षकः — सुष्ठु! सम्यगभिज्ञातम्

- मान् वान् एव मतुप् वतुप् प्रत्यययोः प्रयोगः युक्ततायाः अर्थे भवति।
- मतुप् प्रत्ययस्य मत्, वतुप् प्रत्ययस्य च वत् शब्देषु संयोज्यते पुनः हलन्तशब्दानुसारं रूपनिर्माणं भवति।
- अकारान्तशब्देषु वतुप् प्रत्ययः अ-भिन्नस्वरान्तशब्देषु च मतुप्-प्रत्ययस्य प्रयोगः भवति।
- स्त्रीलिङ्गे बुद्धिमती, धनवती इत्यादिप्रकारेण नदीशब्दवत् रूपनिर्माणं भवति। अधुना अनयोः प्रयोगस्य अभ्यासं कुर्मः।

यथा —

धनवत् (पुलिङ्गे)

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	धनवान्	धनवन्तौ	धनवन्तः
द्वितीया	धनवन्तम्	धनवन्तौ	धनवतः
तृतीया	धनवता	धनवद्भ्याम्	धनवद्भिः

चतुर्थी	धनवते	धनवद्भ्याम्	धनवद्भ्यः
पञ्चमी	धनवतः	धनवद्भ्याम्	धनवद्भ्यः
षष्ठी	धनवतः	धनवतोः	धनवताम्
सप्तमी	धनवति	धनवतोः	धनवत्सु
सम्बोधनम्	हे धनवन्!	हे धनवन्तौ!	हे धनवन्तः!

धनवती (स्त्रीलिङ्गः)

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	धनवती	धनवत्यौ	धनवत्यः
द्वितीया	धनवतीम्	धनवत्यौ	धनवतीः
तृतीया	धनवत्या	धनवतीभ्याम्	धनवतीभिः
चतुर्थी	धनवत्यै	धनवतीभ्याम्	धनवतीभ्यः
पञ्चमी	धनवत्याः	धनवतीभ्याम्	धनवतीभ्यः
षष्ठी	धनवत्याः	धनवत्योः	धनवतीनाम्
सप्तमी	धनवत्याम्	धनवत्योः	धनवतीषु
सम्बोधनम्	हे धनवति!	हे धनवत्यौ!	हे धनवत्यः!

धनवत् (नपुंसकलिङ्गः)

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	धनवत्	धनवती	धनवन्ति
द्वितीया	धनवत्	धनवती	धनवन्ति

- अन्यासु विभक्तिषु पुलिलिङ्गवद् रूपाणि भवन्ति।

इन् प्रत्यययुक्तपदानां रूपाण्यपि हलन्तशब्दवद् भवन्ति। तेभ्यः स्त्रीलिङ्गावबोधाय स्त्रीप्रत्ययस्य

प्रयोगं कृत्वा स्त्रीलिङ्गपदनिर्माणम् अपि भवति यथा—

गुणिन् (पुलिलिङ्गः)

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	गुणी	गुणिनौ	गुणिनः
द्वितीया	गुणिनम्	गुणिनौ	गुणिनः
तृतीया	गुणिना	गुणिभ्याम्	गुणिभिः
चतुर्थी	गुणिने	गुणिभ्याम्	गुणिभ्यः
पञ्चमी	गुणिनः	गुणिभ्याम्	गुणिभ्यः
षष्ठी	गुणिनः	गुणिनोः	गुणीनाम्
सप्तमी	गुणिनि	गुणिनोः	गुणिषु
सम्बोधनम्	हे गुणि!	हे गुणिनौ!	हे गुणिनः

गुणिनी (स्त्रीलिङ्गः)			
विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	गुणिनी	गुणिन्यौ	गुणिन्यः
द्वितीया	गुणिनीम्	गुणिन्यौ	गुणिनीः
तृतीया	गुणिन्या	गुणिनीभ्याम्	गुणिनीभ्यः
चतुर्थी	गुणिन्यै	गुणिनीभ्याम्	गुणिनीभ्यः
पञ्चमी	गुणिन्याः	गुणिनीभ्याम्	गुणिनीभ्यः
षष्ठी	गुणिन्याः	गुणिन्योः	गुणिनीनाम्
सप्तमी	गुणिन्याम्	गुणिन्योः	गुणिनीषु
सम्बोधनम्	हे गुणिनि!	हे गुणिन्यौ!	हे गुणिन्यः!

अभ्यासः

1. अधोलिखितवाक्येषु समुचितपदेन रिक्तस्थानपूर्ति कुरुत —

- (i) (बल + इन्) जनाः निर्बलेषु बलप्रयोगं न कुर्यात्।
- (ii) रथिनम् (.....+.....) जनं वार्तायां मग्नं न कुर्यात्।
- (iii) शिल्पिन्यः (.....+.....) बालिकाः कुत्र गताः? :
- (iv) दण्डनि (.....+.....) जने न विश्वसिहि।
- (v) (कर+इन्) वने वसति।
- (vi) धनिनः (.....+.....) गर्विताः न भवेयुः।
- (vii) सीता अवदत् - अहम् (कुशल+इन्) अस्मि।
- (viii) बलिनौ (.....+.....) अपमानं न सहेतो।
- (ix) (.....+.....) गुणिना जनेन एतत् कार्यं सुष्ठु कृतम्।
- (x) दण्डनः (.....+.....) दण्डं धारयन्ति।

2. प्रदत्तशब्देषु मतुप् अथवा वतुप् प्रत्ययस्य यथापेक्षितं रूपं संयोज्य/वियोज्य लिखत —

- (i) बुद्धिमती (.....+.....) नारी प्रशस्यते।
- (ii) एतौ छात्रौ (शक्ति+मतुप्) स्तः।
- (iii) ताः कन्याः गुणवत्यः (.....+.....) सन्ति।
- (iv) लक्ष्मीवान् (.....+.....) लक्ष्म्याः आदरं कुर्यात्।
- (v) (धन+वतुप्) जनाः दरिद्राणां सहायतां कुर्वन्तु।

- (vi) सत्यवत्यै (.....+.....) नार्ये पुस्तकं यच्छ।
- (vii) (सत्य+वतुप्) जनैः सदा सत्यभाषणं क्रियते।
- (viii) बलवता (.....+.....) जनेन निर्बलेषु बलं न प्रयोक्तव्यम्।
- (ix) (शक्ति+मतुप्) नार्या इदं कार्यं कृतम्।
- (x) गुणवद्धिः (.....+.....) छात्रैः ध्यानेन पठ्यते।

इन् (णिनि) प्रत्ययः

अकारान्तशब्दैः सह ‘युक्त’ इत्यर्थे णिनि (इन्) प्रत्ययस्य प्रयोगः अपि भवति यथा—

गुण + णिनि (इन्)	— गुणैः युक्तः
दण्ड + इन्	— दण्डेन युक्तः
शिल्प + इन्	— शिल्पिन् — शिल्पकलया युक्तः
कर + इन्	— करिन् (गजः) — करेण (शुण्डेन) युक्तः
बल + इन्	— बलिन् — बलेन युक्तः

एतेषां प्रयोगः अपि वाक्येषु शब्दरूपनिर्माणाय क्रियते।

त्व-तल्-प्रत्ययौ

शिक्षकः — एतं श्लोकं पठत —

विद्वत्त्वं च नृपत्वं च नैव तुल्यं कदाचन।
स्वदेशो पूज्यते राजा, विद्वान् सर्वत्र पूज्यते॥

अत्र ‘विद्वत्त्वम्, नृपत्वम्’ इति पदयोः कस्य प्रत्ययस्य प्रयोगः?

छात्रा: — गुरुवर! न जानीमः वयम् कृपया बोधयतु।

शिक्षकः — अत्र भाववाचकस्य ‘त्व’ इति प्रत्ययस्य प्रयोगः।

$$\left[\begin{array}{l} \text{विद्वस्+त्व=विद्वत्त्वम्} \\ \text{नृप+त्व=नृपत्वम्} \end{array} \right]$$

‘त्व’ प्रत्ययस्य प्रयोगः इत्येवं क्रियते

अस्य प्रत्ययस्य प्रयोगेण शब्दः नपुंसकलिङ्गे भवति। अतः शब्दरूपं ‘फलम्’ इति शब्दवत् निर्मायते।

उमेशः — यथा दीर्घत्वम्।

शिक्षकः — आम् शोभनम्। एवमेव अन्यशब्दानपि निर्माय वदन्तु।

महेशः — लघुत्वम्, महत्त्वम्

अभ्यासवान् भव — दशमकक्षायाः

- शिक्षकः — अतिशोभनम्। अधुना एतां पड़िक्तं पठत-
का जडता? पाठतोऽप्यनभ्यासः।
अर्थात् यदि पठितस्य अभ्यासः न क्रियते तर्हि जडता आयाति। अत्र भाववाच्ये
एव तल् प्रत्ययः प्रयुक्तः।
- रहीमः — किं त्व, तल् च द्वावेव भाववाचकौ प्रत्ययौ?
- शिक्षकः — आम् सम्यगवगतम्।
- रमेशः — तर्हि किमन्तरं द्वयोः मध्ये?
- शिक्षकः — अन्तरं केवलं लिङ्गप्रयोगस्य एव।
- छात्रा: — कथमिव?
- शिक्षकः — तल् प्रत्ययस्य प्रयोगेण शब्दः स्त्रीलिङ्गः भवति। यथा जडता, दीर्घता, लघुता,
महत्ता इत्यादिप्रकारेण तल् प्रत्यययुतस्य शब्दस्य रूपाणि ‘बालिका’ शब्दवत्
भवन्ति।
- इदानीमस्याः तालिकायाः माध्यमेन अवगच्छामः-
- | | | | |
|--------|---|-------|----------|
| लघु | — | लघुता | लघुत्वम् |
| महत् | — | | |
| दीर्घ | — | | |
| गुरु | — | | |
| पवित्र | — | | |
- छात्रा: — तालिकां पूर्यन्ति।
- शिक्षकः — अधुना वाक्येषु एतयोः अभ्यासं कुर्मः।
- अथः प्रदत्तवाक्येषु त्व/तल्-प्रत्ययस्य संयोजनं/वियोजनं वा कृत्वा रिक्तस्थानानि
पूर्यत—
- (i) कृष्णसुदाम्नोः मित्रता (..... +) विश्वप्रसिद्धाः।
 - (ii) विद्वत्वम् (..... +) च नृपत्वम् (..... +) च नैव तुल्यम्।
 - (iii) कार्येषु दीर्घसूत्रता (..... +) कदापि न कर्तव्याः।
 - (iv) आकारस्य (लघु+त्व) कार्यबाधकः न भवेत्।
 - (v) पशवः स्वपशुत्वम् (..... +) तु दर्शयन्ति एव।

- (vi) वेदानां (महत्+त्व) को न जानाति।
- (vii) गङ्गायाः पवित्रता (.....+.....) जगत्प्रसिद्धा।
- (viii) मूर्खः स्वमूर्खतां (.....+.....) सभायां न प्रदर्शयेत्।
- (ix) नदीनां (दीर्घ+तल्) चिन्तनात् परः विषयः।
- (x) मित्रेण सह मित्रत्वम् (.....+.....) कदापि न त्याज्यम्।

ठक्- प्रत्ययः

अधोलिखितानि वाक्यानि पठत —

- स एकः श्रेष्ठः नागरिकः अस्ति।
- एतद् आध्यात्मिकं कार्यम् अस्ति।
- एषः धार्मिकः ग्रन्थोऽस्ति।
- अद्य विद्यालये सांस्कृतिकः कार्यक्रमोऽस्ति।
- देशस्य सेवा अस्माकं नैतिकं कर्तव्यम् अस्ति।
- एतत् अस्माकं दैनिकं कार्यम् अस्ति।
- अद्य अस्माकं वार्षिकी परीक्षा अस्ति।
- एषः कार्मिकः परिश्रमी अस्ति।
- एषा मासिकी पत्रिका अस्ति।
- दिल्लीप्रदेशे अनेकानि ऐतिहासिकानि स्थानानि सन्ति।

उपरि यानि रेखाङ्कितानि पदानि सन्ति तानि सर्वाणि ‘ठक्’ प्रत्यय-युक्तानि सन्ति।

- ‘ठक्’ प्रत्ययः भावार्थे प्रयुज्यते।
- ‘ठक्’ प्रत्ययः ‘इक्’ रूपेण परिवर्तितः भवति।
- ‘ठक्’ प्रत्यये आदिस्वरे वृद्धिः भवति।

यथा — धर्म+ठक्=धार्मिक

- ‘ठक्’ प्रत्ययस्य रूपाणि त्रिषु लिङ्गेषु भवन्ति।

यथा —

पुलिलङ्गे—	बालकवत्—	नैतिकः	नैतिकौ	नैतिकाः
स्त्रीलिङ्गे—	नदीवत्—	नैतिकी	नैतिक्यौ	नैतिक्यः
नपुंसकलिङ्गे—	फलवत्—	नैतिकम्	नैतिके	नैतिकानि

‘ठक्’ प्रत्ययस्य प्रयोगः विशेषणरूपेण भवति।

अभ्यासः

1. अथोलिखितेषु कोष्ठकप्रदत्तशब्दैः सह ‘ठक्’ प्रत्ययस्य प्रयोगं कृत्वा रिक्तस्थानानि पूरयत —
 - (i) (धर्म+ठक्) जनाः धर्मम् एव आचरन्ति।
 - (ii) अद्य (वर्ष+ठक्) परीक्षापरिणामः प्राप्स्यते।
 - (iii) अद्य वयं (इतिहास+ठक्) स्थलानि द्रष्टुं गच्छामः।
 - (iv) (प्रथम+ठक्) शिक्षा बाल्यतः एव भवति।
 - (v) (सेना+ठक्) देशं रक्षन्ति।
 - (vi) अधुना (अध्यात्म+ठक्) शिक्षा अनिवार्या।
 - (vii) (नगर+ठक्) एव देशम् उन्नयन्ति।
 - (viii) एताः (विज्ञान+ठक्) चिन्तायां मग्नाः सन्ति।
2. ‘ठक्’ प्रत्यययुक्तपदानि चित्वा लिखत —
 - (i) भौतिकी उन्नतिरपि अनिवार्या।
 - (ii) अधुना वार्षिकं कार्यं सम्पन्नम्।
 - (iii) सैनिकाः देशम् उन्नयन्ति।
 - (iv) दैविकी विपदा कष्टकरी भवति।
 - (v) एषः सार्वभौमिकः सिद्धान्तोऽस्ति।
 - (vi) सार्वकालिकाः उपदेशाः एते।
 - (vii) सामाजिकं कार्यम् एव एतत्।
 - (viii) वैज्ञानिकाः अन्वेषणे रताः भवन्ति।
 - (ix) भारतस्य भौगोलिकी स्थितिः सुन्दरा अस्ति।
 - (x) एषा कवे: मौलिकी कृतिः।

स्त्री-प्रत्ययाः

अथोलिखितवाक्यानि ध्यानेन पठन्तु —

- इयं एका छात्रा अस्ति।
- विद्योत्तमा विदुषी आसीत्।
- अध्यापिका छात्रान् पाठयति।
- अजा तृणं चरति।
- आचार्या स्नेहेन पाठयति।

- गायिका गीतं गायति।
- सुता गृहस्य भूषणं भवति।
- नदी मलिना न कर्तव्या।
- नायिका अभिनयं करोति।

उपरि लिखितानि रेखाङ्कितपदानि स्त्रीलिङ्गे सन्ति। पुलिलङ्घपदानां स्त्रीलिङ्गे परिवर्तनाय स्त्रीप्रत्ययाः प्रयुज्यन्ते। अत्र वयं टाप् प्रत्ययौ पठिष्यामः। टाप् प्रत्यये (आ) शिष्यते, डीप् च प्रत्ययः (ई/आनी) शिष्यते।

नद	+ डीप्	- नदी
गोप	+ डीप्	- गोपी
महिष	+ डीप्	- महिषी
ब्राह्मण	+ डीप्	- ब्राह्मणी
वदन्	+ डीप्	- वदन्ती
श्रीमन्	+ डीप्	- श्रीमती
दातृ	+ डीप्	- दात्री
गुणिन्	+ डीप्	- गुणिनी
तपस्विन्	+ डीप्	- तपस्विनी

सर्वेषां रूपाणि नदीवत् भवन्ति यथा— गोपी गोप्यौ गोप्यः।

छात्र	+ टाप्	- छात्रा
गायक	+ टाप्	- गायिका
धावक	+ टाप्	- धाविका
शिक्षक	+ टाप्	- शिक्षिका
साधक	+ टाप्	- साधिका
प्रथम	+ टाप्	- प्रथमा
द्वितीय	+ टाप्	- द्वितीया
सरल	+ टाप्	- सरला
अज	+ टाप्	- अजा
मूषक	+ टाप्	- मूषिका
सुत	+ टाप्	- सुता
बालक	+ टाप्	- बालिका

सर्वेषां रूपाणि लतावत् भवन्ति यथा— गायिका गायिके गायिका:

अभ्यासः

1. शुद्धं विकल्पं चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत —

- (i) इयं पठति (छात्रः/छात्रा)
- (ii) बालिकासु अध्ययनशीला अस्ति (प्रथमः/ प्रथमा)
- (iii) शोभनानां भोजनानां भवा (दातृ/ दात्री)
- (iv) एषा हवनं करोति (तपस्वी/ तपस्वी)
- (v) गङ्गा एका अस्ति (नद/ नदी)

2. कोष्ठकप्रदत्तपदानां समुचितं प्रयोगं कुर्वत्यः/ कुर्वतः रिक्तस्थानानि पूरयत —

मञ्जूषा

श्रीमती, प्राध्यापिका, नदी, तपस्विन्या, नदीम्, प्रथमा, मातुलानी, बालिका:,
गच्छन्ती, मेधाविनी, छात्राः:

- (i) इयम् एका अस्ति
- (ii) परितः वृक्षाः सन्ति।
- (iii) सह तस्य पुत्रः अपि प्रवचनं करोति।
- (iv) एताः सन्ति।
- (v) ताः सर्वाः सन्ति।
- (vi) वाचाला अस्ति।
- (vii) ग्रामं श्रमिका श्रान्ता अस्ति।
- (viii) एषा बालिका अस्ति।
- (ix) मम विदेशं गच्छति।
- (x) रमा एका अस्ति।

3. अधोलिखिते अनुच्छेदे रेखाङ्कितपदानि स्त्रीलिङ्गे परिवर्त्य अनुच्छेदं पुनः लिखत—

एकः बालकः ग्रामे वसति। सः विद्यालयं गच्छति। तेन सह तस्य भ्राता अपि गच्छति। तस्य शिक्षकः तं प्रेमणा पाठ्यति। विद्यालये अनेके छात्राः सन्ति। तेषु एकः अत्यधिकः मेधावी अस्ति।



अव्ययानि

1. अधोलिखितानि वाक्यानि पठत —

- दुर्वहम् अत्र जीवितम्।
 - प्रकृतिः एव शरणम्।
 - सः सदा सत्यं वदति।
 - यानानां पङ्क्तयो हि अनन्ताः।
 - वायुयानं भृशं दूषितम्।
 - जलं निर्मलं न अस्ति।
 - एतत् खलु राजासनम् अस्ति।
 - अलम् अतिशालीनतया।
 - ननु भगवान् वाल्मीकिः अयम्।
- उपरि यानि रेखाङ्कितानि पदानि सन्ति तानि सर्वाणि अव्ययपदानि सन्ति।
अव्ययपदानि लिङ्गवचनविभक्तिषु न परिवर्तन्ते। तद्यथा —

(क) i. बालः अपि धावति ii. बालिका अपि धावति।

अत्र लिङ्गकारणात् अपि परिवर्तनं न भवति।

(ख) i. यदा सः आगच्छति तदा ते गच्छन्ति। ii. यदा ते आगच्छन्ति तदा वयं गच्छामः।

अत्र वचनकारणात् अपि ‘यदा-तदा’ अव्यययोः परिवर्तनं न भवति।

(ग) i. बालः उच्चैः वदति ii. पिता बालम् उच्चैः वदति।

अत्र विभक्तिकारणाद् अपि ‘उच्चैः’ इति अव्ययपदे परिवर्तनं न भवति।

अतः—

सदृशं त्रिषु लिङ्गेषु सर्वासु च विभक्तिषु।
वचनेषु च सर्वेषु यन्न व्येति तदव्ययम्॥

- अव्ययानि न परिवर्तन्ते।
- अव्ययानि त्रिषु लिङ्गेषु सदृशानि भवन्ति।
- अव्ययानि त्रिषु वचनेषु सदृशानि भवन्ति।
- अव्ययानि सर्वासु विभक्तिषु सदृशानि भवन्ति।

अव्ययपदानि

कालवाचकानि	स्थानवाचकानि	युग्मानि	समानार्थकानि	विकीर्णानि
पुरा- प्राचीनकाल में	यत्र- जहाँ	यावत्-तावत् =	ननु	अपि-भी
सद्यः- तुरन्त	तत्र- वहाँ	जब तब	नूनम्]	वृथा-बेकार
सपदि- तुरन्त	उपरि- ऊपर	यत्र-तत्र= जहाँ	खलु]	अथ किम्- हाँ
अचिरात्- अभी	कुत्र- कहाँ	वहाँ		और क्या
अचिरेण- अभी	अत्र- यहाँ	शनैः-शनैः= धीरे-	सम्प्रति	च- और
सततम्- निरन्तर	सर्वत्र- सब जगह	धीरे	अधुना	अपरम्- और भी
अभितः- दोनों ओर	नीचैः- नीचे	यदा = जब	इदानीम्]	सत्वरम्- शीघ्र
परितः- चारों ओर		तदा = तब	साम्प्रतम्]	अन्यथा- दूसरे
उभयतः- दोनों ओर		कदा = कब	सदा	प्रकार से
सर्वतः- सब ओर		यदि तर्हि= यदि	सर्वदा	सर्वथा- सब प्रकार
कदाचित्- कभी,		तो	इत्थम्- इस प्रकार	से
किसी समय		मुहुर्मुहुः=	से	एव- ही
अचिरम्- अभी		बार-बार	एवम्- इस प्रकार	प्रति- और
एकदा- एक बार		यथा-तथा= जैसा		अलम्- बस, समर्थ
सकृत्- एक बार		वैसा		च- और
सहसा- अचानक		यथापि तथापि=		न- नहीं
सदा- हमेशा		जैसे भी वैसे भी		मा- मत
इतस्ततः- इधर-उधर				अतः- इसलिए
कुतः- कहाँ से				इति- इस प्रकार
नक्तम्- रात				उच्चैः- ज़ोर से
दिवा- दिन				पुनः- फिर
अद्य- आज				तूष्णीम्- चुपचाप
ह्यः- बीता हुआ कल				तु- तो
श्वः- आने वाला कल				परम्- परन्तु
वृथा- व्यर्थ				कथम्-कैसे
समीपे- पास में				अनृतम्- झूठ
दूरे - दूर				ततः- तत्पश्चात्
				परस्परम्-आपस में
				इव- के समान

अभ्यासः

1. अधोलिखितानि वाक्यानि पठित्वा अव्ययपदानि चित्वा लिखत —

अव्ययपदानि

- | | |
|--|---------|
| (i) एकदा तस्य भार्या पितुर्गृहं प्रति चलिता। | — |
| (ii) भवान् कुतः भयात् पलायितः। | — |
| (iii) तत्र गम्यताम्। | — |
| (iv) त्वं सत्वरं चल। | — |
| (v) तेन सदृशं न अस्ति। | — |
| (vi) गीता सुगीता च वदतः। | — |
| (vii) यदा सः पठति तदा एव शोभते। | — |
| (viii) तापसौ लवकुशौ ततः प्रविशतः। | — |
| (ix) अलम् अतिदाक्षिण्येन। | — |
| (x) अहम् अपि श्रावयामि। | — |

2. उचिताव्ययपदैः रिक्तस्थानानि पूरयत —

मञ्जूषा

सर्वत्र, एव, इति, ननु, एवम्, तत्र, उच्चैः, तथापि, बहुधा, मा

- | | |
|--|--------------------|
| (i) मम गुरुः | भगवान् वाल्मीकिः। |
| (ii) कः | भणति? |
| (iii) कुपिता सा | वदति। |
| (iv) त्वं | गच्छ। |
| (v) यूयं चापलं | कुरुत। |
| (vi) कृषीवलः बहुवारं प्रयत्नमकरोत् | वृषः नोत्थितः। |
| (vii) कृषकः बलीवर्द | पीडयति। |
| (viii) बहूनि अपत्यानि मे सन्ति | सत्यम्। |
| (ix) सर्वेषु अपत्येषु जननी तुल्यवत्सला | । |
| (x) | जलोपप्लवः सञ्जातः। |

3. विपर्ययाव्ययपदैः सह योजयत —

यत्र

यथा

यथैव

यदा

यदैव

यावत्

अत्र.....

यदि

4. उचितार्थैः सह मेलनं कुरुत —

- | | |
|-------------|----------------|
| (i) पुरा | नहीं/मत |
| (ii) उच्चैः | हमेशा |
| (iii) नूनम् | परंतु |
| (iv) इत्थम् | ही |
| (v) सर्वथा | इस प्रकार |
| (vi) एवम् | सब प्रकार से |
| (vii) एव | इस प्रकार से |
| (viii) परम् | निश्चय |
| (ix) सदा | ज़ोर से |
| (x) मा | प्राचीनकाल में |

5. उचिताव्ययपदैः सह रिक्तस्थानानि पूरयत —

मञ्जूषा

यथा-तथा,	यदि-तहि,	यथैव-तथैव,	यावत्-तावत्,	यत्र-तत्र।
----------	----------	------------	--------------	------------

- (i) लवः कुशः।
- (ii) अहं कृष्णवर्णः त्वं किं गौराङ्गः!
- (iii) गुरुः वदति शिष्यः करोति।
- (iv) वृक्षाः खगाः।
- (v) लता आगच्छति त्वं तिष्ठ।

6. उदाहरणानुसारं लिखत —

- (i) श्वः सोमवासरः.....
- (ii)
- (iii)
- (iv)
- (v)



7. पर्यायाव्ययपदानि लिखत —

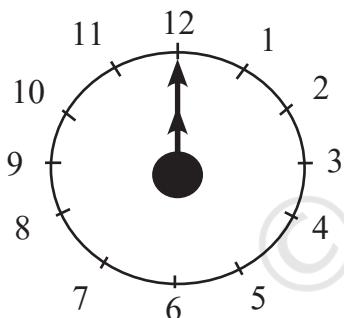
	नन्		सम्प्रति	

10

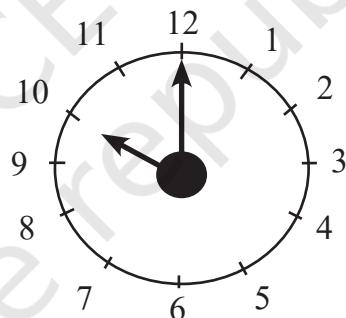
समयः

छात्राः एतानि उदाहरणानि पश्यन्तु—

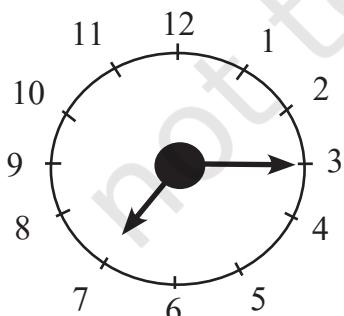
- अधुना दशवादनं संवृत्तम्।
- सार्धदशवादने अहं बहिः गच्छामि
- इदानीं रात्रेः नववादनम्।
- पादोनदशवादने शत्र्यां गच्छामि।
- माता — पुत्र! षड्वादनं जातम्!
- पुत्र — आम् मातः। उत्तिष्ठामि। मया तु सार्धसप्तवादने विद्यालयं प्रति गन्तव्यम् अस्ति।
- सम्प्रति अष्टवादनं जातम्।
- एकादशवादने मित्रम् आगच्छति।



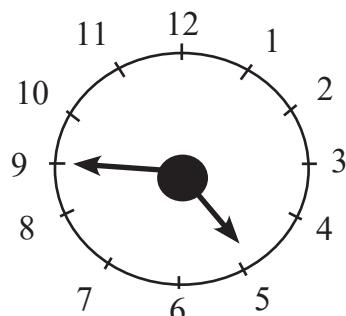
द्वादशवादनम्



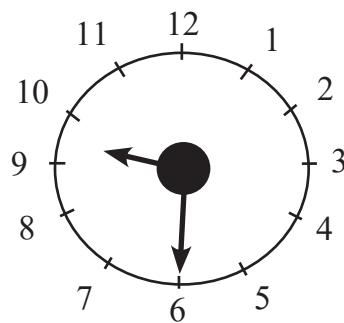
दशवादनम्



सपादसप्तवादनम्



पादोनपञ्चवादनम्



सार्धनवादनम्

अभ्यासः

1. अधोलिखितवाक्येषु उदाहरणानुसारं समयबोधकेषु पदेषु रिक्तस्थानानि पूरयत—
उदाहरणम्—

द्वितीयरेलवाहनं (10:15) वादने जयपुरं प्राप्नोति।

द्वितीयरेलवाहनं सपाददशवादने जयपुरं प्राप्नोति।

- (i) पुरुषोत्तम-एक्सप्रेस इति रेलयानं (9:30) वादने पुरीतः प्रस्थानं करोति।
- (ii) चेतक-एक्सप्रेस इति रेलयानं (4:45) वादने दिल्लीम् आगच्छति।
- (iii) हावड़ा-एक्सप्रेस (11:00) वादने हावड़ास्थानकं प्राप्नोति।
- (iv) रेलयानमेकं (8:15) उत्तराञ्चलं प्रति गच्छति।

2. अधोलिखितवाक्येषु उदाहरणानुसारं समयबोधकेषु पदेषु रिक्तस्थानानि पूरयत—
उदाहरणम्—

माता प्रातः (5:00) वादने उत्तिष्ठति।

माता प्रातः पञ्चवादने उत्तिष्ठति।

- (i) राहुलः प्रातर्भ्रमणाय (6:15) वादने उद्यानं गच्छति।
- (ii) मल्लिका (7:30) वादने प्रातराशं करोति।
- (iii) अनन्या (5:45) वादने क्रीडति।
- (iv) सर्वे (10:00) वादने शयनं कुर्वन्ति॥

3. अधोलिखितवाक्येषु समयबोधकेषु पदेषु रिक्तस्थानानि पूरयत —
उदाहरणम् —

प्रातः (7:00) वादनतः (7:45) वादनपर्यन्तं
विद्यालये प्रार्थनासभा भवति।

प्रातः सप्तवादनतः: पादोनाष्टवादनपर्यन्तं विद्यालये प्रार्थनासभा भवति।

(i) (8:15) वादनतः (9:00) वादनपर्यन्तं
विज्ञानविषयस्य कालांशः भवति।

(ii) वर्य (9:00) वादनतः (9:45) वादनपर्यन्तं
गणितविषयं पठामः।

(iii) (2:45) वादनतः (3:30) वादनपर्यन्तं
हिन्दीभाषाकालांशः भवति॥

(iv) संस्कृतशिक्षकः (10:15) वादने अध्यापयति।

4. अधोलिखितवाक्येषु समयबोधकेषु पदेषु रिक्तस्थानानि पूरयत —
उदाहरणम् —

छात्रः (5:00) वादने उत्तिष्ठति (6:15) वादने
व्यायामं करोति।

छात्रः पञ्चवादने उत्तिष्ठति सपादषड्वादने व्यायामं करोति।

(i) छात्रः (7:30) वादने प्रातराशं कृत्वा (9:45)
वादने विद्यालयं गच्छति।

(ii) (4:00) वादने गृहमागत्य (4:30)
वादनपर्यन्तं विश्रामं करोति।

(iii) (5:00) वादने भोजनं कृत्वा (9:30)
वादनपर्यन्तम् अध्ययनं करोति।

(iv) रात्रौ (9:45) वादनतः (5:00) वादनपर्यन्तं
शयनं करोति।



1075CH11

11

वाच्यम्

बालकाः! एतानि उदाहरणानि ध्यानेन पठन्तु—

(क)

बालकः पाठं पठति।	—
छात्रः लेखं लिखति।	—
कृषकः कार्यं करोति।	—
शिक्षकः पाठयति।	—
श्रमिकः पाषाणं त्रोटयति।	—
बालिका नृत्यति।	—
धावकः धावति।	—
क्रीडकः क्रीडति।	—
अहं गृहं गच्छामि।	—
आवां भ्रमावः।	—
वयं कार्यं कुर्मः।	—
त्वं किं करोषि?	—
युवां कुत्र गच्छथः?	—
यूयं कन्दुकं क्रीडथा।	—
माता भोजनं पचति।	—
पिता आपणं गच्छति।	—
मम मित्रं चलचित्रं पश्यति।	—
अविवेकी वृक्षान् कृन्तति।	—
लता कथां शृणोति।	—
तृष्णातः जलं पिबति।	—
बुभुक्षितः भोजनं करोति।	—
बालिका गीतं गायति।	—
शिशुः रोदिति।	—

(ख)

बालकेन पाठः पठ्यते।
छात्रेण लेखः लिख्यते।
कृषकेण कार्यं क्रियते।
शिक्षकेण पाठ्यते।
श्रमिकेण पाषाणः त्रोट्यते।
बालिक्या नृत्यते।
धावकेन धाव्यते।
क्रीडकेन क्रीड्यते।
मया गृहं गम्यते।
आवाभ्यां भ्रम्यते।
अस्माभिः कार्यं क्रियते।
त्वया किं क्रियते?
युवाभ्यां कुत्र गम्यते?
युष्माभिः कन्दुकं क्रीड्यते।
मात्रा भोजनं पच्यते।
पित्रा आपणं गम्यते।
मम मित्रेण चलचित्रं दृश्यते।
अविवेकिना वृक्षाः कर्त्यन्ते।
लतया कथा श्रूयते।
तृष्णार्तेन जलं पीयते।
बुभुक्षितेन भोजनं क्रियते।
बालिक्या गीतं गीयते।
शिशुना रुद्यते।

अहं स्वपिमि	—	मया सुप्यते।
त्वं पाठं स्मरसि।	—	त्वया पाठः स्मर्यते।
सः कथां कथयति।	—	तेन कथा कथ्यते।

उपरि उभयोः स्थानयोः कथनस्य भावः एकः एव अस्ति परं कथनस्य शैली भिन्ना अस्ति। प्रथमे 'क' खण्डे वाक्येषु कर्तुः प्राधान्यम् अस्ति, क्रियारूपाण्यपि कर्तृपदानुसारं प्रचलन्ति। परं 'ख' खण्डे कर्मणः भावस्य वा प्राधान्यम् अस्ति, अत्र क्रियारूपाणि अपि कर्मपदानुसारं प्रयुज्यन्ते।

अत्र ध्यातव्यम् —

अवधेयांशः—

- कथनस्य काऽपि विशिष्टा विधा वाच्यम् इति कथ्यते।
- वाच्यं त्रिविधं भवति -कर्तृवाच्यं, कर्मवाच्यं भाववाच्यञ्च।
- कर्तृवाच्ये कर्ता प्रधानः भवति, कर्तरि च प्रथमाविभक्तिः प्रयुज्यते, कर्मणि द्वितीया विभक्तिः भवति क्रियारूपञ्च कर्तृपदानुसारं प्रचलति।
- कर्मवाच्ये कर्मणः प्रधानता भवति, कर्मणि प्रथमा विभक्तिः भवति कर्तरि च तृतीया विभक्तिः भवति क्रियारूपञ्च कर्मपदानुसारं भवति।
- यस्मिन् वाक्ये कर्म न भवति (अकर्मकधातुषु) तेषां भाववाच्ये परिवर्तनं भवति।
- भाववाच्ये क्रिया प्रथमपुरुषे एकवचने भवति।
- लज्जा, ही, भू, अस्, विद्, स्था, जागृ, वृद्ध, एध, शी, क्षि, भी, जीव, मृ, स्वप्, क्रीड़, खेल्, रम्, रुच्, दीप्, ज्वल् इत्यादयः अकर्मकधातवः सन्ति।

कतिपयक्रियारूपाणि अधः प्रदीयन्ते—

कर्तृवाच्यम्	कर्मवाच्यम्/भाववाच्यम्
पठति	पठ्यते
लिखति	लिख्यते
हसति	हस्यते
तिष्ठति	स्थीयते
ज्वलति	ज्वल्यते
वहति	उद्यते
भवति/अस्ति	भूयते
जागर्ति	जाग्रियते
स्वपिति	सुप्यते
जीवति	जीव्यते

अभ्यासवान् भव — दशमकक्षायाः

सेवते	सेव्यते
लज्जते	लज्ज्यते
खादति	खाद्यते
क्रीडति	क्रीड्यते
रमते	रम्यते
रोचते	रुच्यते
वर्धते	वर्ध्यते
बिभेति	बिभ्यते
पतति	पत्यते
शृणोति	श्रूयते
पिबति	पीयते
पश्यति	दृश्यते
रोदिति	रुद्यते
गच्छति	गम्यते
पठति	पठ्यते
पाठयति	पाठ्यते

अभ्यासः

1. अधोलिखितवाक्येषु कर्तृपदं परिवर्त्य वाक्यानि लिखत —

- (i) बालकः पायसं खादति।
..... पायसः खाद्यते।
- (ii) अहं फलं खादामि।
..... फलं खाद्यते।
- (iii) त्वं किं शृणोषि?
..... किं श्रूयते?
- (iv) आवां चित्राणि पश्यावः।
..... चित्राणि दृश्यन्ते।
- (v) वयं पाठं स्मरामः।
..... पाठः स्मर्यते।

- (vi) बालकौ धावतः।
 धाव्यते।
- (vii) कुकुराः इतस्ततः भ्रमन्ति।
 इतस्ततः भ्रम्यते।
- (viii) गजः शनैः शनैः चलति।
 शनैः शनैः चल्यते।
- (ix) वानरः कूर्दति।
 कूर्द्यते।
- (x) अहं शाटिकां क्रीणामि।
 शाटिका क्रीयते।
2. अधोलिखितवाक्येषु कर्मपदं परिवर्त्य वाक्यानि लिखत—
- (i) श्रमिकः भारं वहति।
 श्रमिकेण उद्घते।
 - (ii) सः पाषाणं त्रोट्यति।
 तेन त्रोट्यते।
 - (iii) सा गीतं गायति।
 तया गीयते।
 - (iv) माता रोटिकां पचति।
 मात्रा पच्यते।
 - (v) पिता फलानि आनयति।
 पित्रा आनीयन्ते।
 - (vi) सेवकः सेवां करोति।
 सेवकेन क्रियते।
 - (vii) चिकित्सकः उपचारं करोति।
 चिकित्सकेन क्रियते।
 - (viii) नीलिमा पाठं स्मरति।
 नीलिमया स्मर्यते।

अभ्यासवान् भव — दशमकक्षायाः

- (ix) अहं गृहं गच्छामि।
मया गम्यते।
- (x) आवां लेखान् लिखावः।
आवाभ्यां लिख्यन्ते।

3. अधोलिखितवाक्येषु क्रियापदपरिवर्तनं कृत्वा वाक्यानि लिखत —

- (i) अहं जलं पिबामि।
मया जलं ।
- (ii) आवां विद्यालयं गच्छावः।
आवाभ्यां विद्यालयः ।
- (iii) वयं ग्रामं गच्छामः।
अस्माभिः ग्रामः ।
- (iv) त्वं फलानि खादसि।
त्वया फलानि ।
- (v) छात्रः अध्ययनं करोति।
छात्रेण अध्ययनं ।
- (vi) अहं श्रान्तः भवामि।
मया श्रान्तः ।
- (vii) बालकः क्रीडति।
बालकेन ।
- (viii) शिष्यः गुरुं सेवते।
शिष्येण गुरुः ।
- (ix) पाचकः भोजनं पचति।
पाचकेन भोजनं ।
- (x) धावकः धावति।
धावकेन ।



अशुद्धिसंशोधनम्

अध्यापक: — ‘तुम सब पुस्तक पढ़ो’ – अस्य वाक्यस्य संस्कृतभाषायाम् अनुवादं कुरुत।
(छात्राः विचिन्तयन्ति)

अध्यापक: — कृतम् किम्?
(छात्राः विचारमग्नाः)

अध्यापक: — उमेश! भवान् वदतु।

उमेश: — यूयं पुस्तकं पठन्तु।

अध्यापक: — ‘यूयं पुस्तकं पठन्तु’ इति अशुद्धं वाक्यम्। अमित! उत्तिष्ठ। शुद्धं करोतु।

अमित: — यूयं पुस्तकं पठत।

अध्यापक: — अतिसुन्दरम्। एतद् एव शुद्धं वाक्यम्।

छात्राः — आम्।

अध्यापक: — संस्कृते बहूनि कारणानि भवन्ति यैः वाक्यानि अशुद्धानि भवन्ति।
(किञ्चित् विरम्य)

अध्यापक: — किं भवन्तः जानन्ति अशुद्धयः कियत्यः भवन्ति। पश्यन्तु
(अध्यापकः श्यामपट्टे लिखति।)

1. कर्तृक्रिययोः अशुद्धयः—

अशुद्धम् वाक्यम्	शुद्धम् वाक्यम्
------------------	-----------------

- | | |
|--|--|
| (i) <u>त्वं</u> पाठं <u>पठति</u> । | — त्वं पाठं पठसि। |
| (ii) <u>ते</u> लेखं <u>लिखति</u> । | — ते लेखं लिखन्ति। (पुलिङ्गे)
ते लेखं लिखतः। (स्त्रीलिङ्गे) |
| (iii) <u>वयं</u> भोजनं <u>खादामि</u> । | — वयं भोजनं खादामः। |

अभ्यासवान् भव — दशमकक्षायाः

- (iv) यूयं बहिः गच्छा — यूयं बहिः गच्छता
(v) त्वं लेखं लिखतु। — त्वं लेखं लिख।
(vi) युवां भोजनं खादताम्। — युवां भोजनं खादतम्।
(vii) आवां खेलनाय गच्छामः। — आवां खेलनाय गच्छावः।
(viii) अहं तत्र गमिष्यामः। — अहं तत्र गमिष्यामि।
(ix) सः एव बुद्धिमान् सन्ति। — सः एव बुद्धिमान् अस्ति।
(x) तौ उपवने क्रीडावः। — तौ उपवने क्रीडतः।
(xi) ताः भोजनं पचति। — ताः भोजनं पचन्ति।

2. विशेषणविशेष्ययोः अशुद्धयः—

- (i) चतुरः बालाः वदन्ति — चतुराः बालाः वदन्ति।
(ii) एकः कन्या एव एवं वदति। — एका कन्या एव एवं वदति।
(iii) नीलः गगनं शोभते। — नीलं गगनं शोभते।
(iv) कुशला बालाः एव प्रश्नं पृच्छन्ति। — कुशला: बालाः एव प्रश्नं पृच्छन्ति।
(v) मधुरं फलानि खाद। — मधुरं फलं खाद।
(vi) कुशलः बालाः एव सः। — कुशलः बालः एव सः।
(vii) सुन्दराणि चित्रं सः रचयति। — सुन्दराणि चित्राणि सः रचयति।
(viii) तत् फलानि मधुराणि सन्ति। — तानि फलानि मधुराणि सन्ति।
(ix) ते बालिकाः बुद्धिमत्यः सन्ति। — ताः बालिकाः बुद्धिमत्यः सन्ति।

3. लिङ्गसम्बन्ध—अशुद्धयः—

- (i) ते मम मित्राः सन्ति। — तानि मम मित्राणि सन्ति।
(ii) फलाः करण्डके सन्ति। — फलानि करण्डके सन्ति।
(iii) वृक्षाणि हरिताः सन्ति। — वृक्षाः हरिताः सन्ति।
(iv) उपवने पुष्पाः सन्ति। — उपवने पुष्पाणि सन्ति।
(v) शाखेषु खगाः सन्ति। — शाखासु खगाः सन्ति।
(vi) देवालयासु देवाः वसन्ति। — देवालयेषु देवाः वसन्ति।

- (vii) उपवनः सुन्दरम् अस्ति। — उपवनं सुन्दरम् अस्ति।
- (viii) वनः अतिविस्तृतम् अस्ति। — वनम् अतिविस्तृतम् अस्ति।
- (ix) खगानि आकाशे उड्डयन्ते। — खगाः आकाशे उड्डयन्ते।
- (x) राधाया: ग्रीवम् शोभना अस्ति। — राधायाः ग्रीवा शोभना अस्ति।

4. वाच्यसम्बन्ध—अशुद्धयः—

- (i) सः पाठः पठ्यते। — तेन पाठः पठ्यते।
- (ii) तेन फलानि खाद्यते। — तेन फलानि खाद्यन्ते।
- (iii) त्वम् लेखः लिख्यते। — त्वया लेखः लिख्यते।
- (iv) त्वया ग्रन्थान् पठ्यन्ते। — त्वया ग्रन्थाः पठ्यन्ते।
- (v) त्वया भोजनं क्रोषि। — त्वया भोजनं क्रियते।
- (vi) मया पाठाः स्मरामि। — मया पाठाः स्मर्यन्ते।
- (vii) तया कार्यं क्रियन्ते। — तया कार्यं क्रियते।
- (viii) अहं नियमाः पाल्यन्ते। — मया नियमाः पाल्यन्ते।
- (ix) राधा गीतं गायति। — राधा गीतं गायति।
- (x) अमितेन प्रातः उत्तिष्ठति। — अमितेन प्रातः उत्थीयते।

5. उपपदसम्बन्ध—अशुद्धयः—

- (i) सीता रामस्य सह वनम् अगच्छता। — सीता रामेण सह वनम् अगच्छत्।
- (ii) सः ग्रामस्य प्रति गच्छति। — सः ग्रामं प्रति गच्छति।
- (iii) राधा मात्रे सदृशी अस्ति। — राधा मात्रा सदृशी अस्ति।
- (iv) पिता पुत्रे क्रुद्यति। — पिता पुत्राय क्रुद्यति।
- (v) सः अश्वेन पतति। — सः अश्वात् पतति।
- (vi) सः विद्यालयेन आगच्छति। — सः विद्यालयात् आगच्छति।
- (vii) वयं ग्रामे गमिष्यामः। — वयं ग्रामं गमिष्यामः।
- (viii) बालकः कुक्कुरेण बिभेति। — बालकः कुक्कुरात् बिभेति।
- (ix) पिता पुत्राय विश्वसिति। — पिता पुत्रे विश्वसिति।
- (x) माता पुत्रीं स्निह्यति। — माता पुत्रां स्निह्यति।

6. वचनसम्बन्धि—अशुद्धयः—

- (i) सः पाठं पठन्ति। — सः पाठं पठति ।
- (ii) वयं लेखं लिखामि। — वयं लेखं लिखामः।
- (iii) त्वं कुत्र गच्छथ। — त्वं कुत्र गच्छसि।
- (iv) ते पाठं स्मरति। — ते पाठं स्मरन्ति।
- (v) यूयं तत्र गच्छतम्। — यूयं तत्र गच्छत।
- (vi) सर्वे शक्तिमन्तः अस्ति। — सर्वे शक्तिमन्तः सन्ति।
- (vii) त्वया सर्वाणि कार्याणि करणीयम्। — त्वया सर्वाणि कार्याणि करणीयानि।
- (viii) ताः कन्याः तत्र अस्ति। — ताः कन्याः तत्र सन्ति।
- (ix) तौ बालकौ गच्छति। — तौ बालकौ गच्छतः।
- (x) ते बालिके पठन्ति। — ते बालिके पठतः।

7. संख्यासम्बन्धि—अशुद्धयः—

- (i) त्रयः बालिकाः वार्तालापं कुर्वन्ति। — तिसः बालिकाः वार्तालापं कुर्वन्ति।
- (ii) चत्वारः बालिकाः क्रीडन्ति। — चतसः बालिकाः क्रीडन्ति।
- (iii) एका पुरुषः कार्यं करोति। — एकः पुरुषः कार्यं करोति।
- (iv) त्रीणि सैनिकाः देशं रक्षन्ति। — त्रयः सैनिकाः देशं रक्षन्ति।
- (v) पञ्चा बालकाः पठन्ति। — पञ्च बालकाः पठन्ति।
- (vi) द्वे बालकौ खादतः। — द्वौ बालकौ खादतः।
- (vii) त्रयः पुस्तकानि सन्ति। — त्रीणि पुस्तकानि सन्ति।
- (viii) एकः पात्रं तत्र अस्ति। — एकं पात्रं तत्र अस्ति।
- (ix) त्रीणि पुरुषाः एव कार्यं कुर्वन्ति। — त्रयः पुरुषाः एव कार्यं कुर्वन्ति।
- (x) चत्वारः कन्याः प्रसीदन्ति। — चतसः कन्याः प्रसीदन्ति।

8. अन्या: अशुद्धयः—

- (i) राधा श्वः गच्छति। — राधा श्वः गमिष्यति।
- (ii) बालकः ह्यः गच्छति। — बालकः ह्यः अगच्छत्।
- (iii) भवान् किं कथयसि। — भवान् किं कथयति।

- (iv) रमा श्वः करोति । — रमा श्वः करिष्यति।
 (v) सः ह्यः न पठति । — सः ह्यः न अपठत्।

अभ्यासः

1. अधोलिखितानि वाक्यानि शुद्धानि कुरुत —

- (i) व॒यं चित्रं पश्यन्ति ॥
 (ii) भवान् भोजनं खाद ॥
 (iii) त्वं पाठं स्मरतु ॥
 (iv) सः पीतः वस्त्रं धारयति ॥
 (v) त्रीणि वृक्षाः तत्र शोभन्ते ॥
 (vi) ताः महिलाः न गमिष्यति ॥
 (vii) त्वम् किं क्रियते ॥
 (viii) पिता श्वः आगच्छति ॥
 (ix) युष्माभिः किं पठन्ति ॥
 (x) सः तत्र न सन्ति ॥
 (xi) अमितेन एतत् कार्यं करोति ॥
 (xii) यूयं तत्र न गन्तव्यम् ॥
 (xiii) मया एतानि फलानि खादितव्यम् ॥
 (xiv) कन्याः पाठं पठति ॥
 (xv) अम्बा भोजनं पचन्ति ॥
 (xvi) तेन भोजनं खादनीयानि ॥
 (xvii) अम्बा तत्र सन्ति ॥
 (xviii) त्वम् जलं पानीयम् ॥
 (xix) ते लेखान् लिखति ॥
 (xx) अस्माभिः फलानि खाद्यते ॥



13

मित्रिताभ्यासः

अभ्यासः I

1. अधोलिखितम् अनुच्छेदं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत—

पठनम् अतीव अरुचिकरं मन्यमानः सुवीरः हतोत्साहः भूत्वा कक्षस्य एकस्मिन् कोणे विचारमग्नः अतिष्ठत् । तस्य मनसि असफलतायाः कारणात् आत्मघातस्य भावना जागृता । दुःखितः भूत्वा आत्मचिन्तनं कुर्वन् सः भित्तिम् आरोहन्तम् एकं पिपीलकं पश्यति, यः पुनः पुनः पतित्वा अपि हतोत्साहितः न भवति, अपि तु सततं प्रयासेन सः अन्ततः भित्तिम् आरोहति तत्रस्थं मिष्टानं च प्राप्नोति । तस्य विवेको जागृतो भवति । आत्मनः आत्मघातस्य भावनां निन्दयन् सः चिन्तयति यत् यद्येष पिपीलकः सततप्रयासेन सफलः भवितुं शक्नोति तर्हि न किमपि असम्भवं जगति । एतद्विचिन्त्य सः पठनस्य पुनः पुनरभ्यासं कुर्वन् कक्षायां विशिष्टं स्थानं प्राप्तवान् । तस्मिन् एतत् परिवर्तनं दृष्ट्वा शिक्षकः तस्य प्रशंसां कुर्वन् बोधयति—“वत्स! वीरभोग्या वसुन्धरा । वसुधायां बहूनि वस्तूनि सन्ति परन्तु परिश्रमशीला: वीराः एव तानि प्राप्नुवन्ति ।”

अभ्यासः

(i) एकपदेन उत्तरत—

(क) कः हतोत्साहः अभवत्?

(ख) असफलतायाः कारणात् सुवीरस्य मनसि कस्य भावना जागृता?

(ग) पिपीलकः भित्तौ किं प्राप्नोति?

(घ) सुवीरः पुनः पुनरभ्यासेन किं स्थानं प्राप्तवान्?

(ii) पूर्णवाक्येन उत्तरत—

(क) सुवीरः आत्मघातस्य भावनां निन्दयन् किं चिन्तयति?

(ख) के वसुधायां वस्तूनि प्राप्नुवन्ति?

(iii) यथानिर्देशम् उत्तरत —

(क) ‘सः अन्ततः भित्तिम् आरोहति’- अत्र किम् अव्यय-पदम्?

(ख) ‘संसारे’ इति पदस्य किं समानार्थकपदम् अनुच्छेदे प्रयुक्तम्?

(ग) ‘तस्य विवेकः जागृतः अभवत्’- अत्र किं कर्तृपदम्?

(घ) ‘वसुधायां बहूनि वसूनि सन्ति’- अत्र किं विशेषणपदम्?

2. ‘आत्मघातः कस्याः अपि समस्यायाः समाधानं न भवति’ एतद्विषयम् अधिकृत्य
एकम् लघुम् अनुच्छेदं लिखत —

.....
.....
.....
.....
.....

3. ‘पठनस्य के लाभाः’ - इति वर्णनं कुर्वन्तः मित्रं प्रति पत्रमेकं लिखत —

.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....

4. सन्धिच्छेदः सन्धिः वा क्रियताम् —

(i) हतोत्साहः +

(ii) विवेकः+जागृतः

अभ्यासवान् भव — दशमकक्षायाः

(iii) सः+अन्ततः+

(iv) एतद्विचिन्त्य

5. समासं विग्रहं वा कृत्वा वाक्यानि पुनः लिखत —

(i) सुवीरः हतः उत्साहः यस्य सः भूत्वा एकस्मिन् कोणे तिष्ठति ।

(ii) तस्य मनसि आत्मधातस्य भावना जागृता ।

(iii) सः अभ्यासं कुर्वन् कक्षायां विशिष्टं स्थानं प्राप्तवान् ।

(iv) वत्स! वीरैः भोग्या वसुन्धरा ।

6. उचित-प्रत्ययप्रयोगेण रिक्तस्थानानि पूर्यत —

(i) पठनम् अरुचिकरं (मन्+शानच्) छात्राः सफलाः न भवन्ति ।

(ii) सततप्रयासेन मन्दोऽपि सफलः (भू+तुमन्) शक्नोति ।

(iii) अस्मिन् वर्षे अहम् कक्षायां विशिष्टं स्थानं। (प्र+आप+कतवतु)

(iv) पुनः पुनः पतित्वा अपि हतोत्सहितः न। (भू+तव्यत्)

7. प्रदत्तवाक्यानां वाच्यपरिवर्तनम् कृत्वा लिखत —

(i) सुवीरः एकस्मिन् कोणे तिष्ठति ।

(ii) पिपीलकः अन्ततः भित्तिम् आरोहति ।

(iii) शिक्षकेण तस्य प्रशंसा क्रियते ।

(iv) परिश्रमशीलैः वीरैः एव वसूनि प्राप्यन्ते ।

8. प्रदत्तवाक्यानां संस्कृतभाषया अनुवादं कुरुत —

(i) उसका विवेक जागृत हो जाता है ।

(ii) उसने वृक्ष पर चढ़ते हुए साँप को देखा ।

(iii) हमें पुनः पुनः पाठों का अभ्यास करना चाहिए।

(iv) मुझे पढ़ना अच्छा लगता है।

9. प्रदत्तानि वाक्यानि शुद्धानि कृत्वा पुनः लिखत—

- (i) बालकः एकस्मिन् कोणे तिष्ठति ।
- (ii) सः भित्तिम् आरोहन्तं पिपीलकं पश्यति ।
- (iii) वसुधायां बहूनि वसूनि सन्ति ।
- (iv) अहम् उत्साहितः भूत्वा तत्रागच्छम् ।

अभ्यासः II

1. लिखितमनुच्छेदं पठित्वा निर्देशानुसारं प्रश्नान् उत्तरत—

वयं सर्वे सुखम् इच्छामः । कोऽपि दुःखं नैव इच्छति । अतः दुःखानां विनाशः कथं भवति, इति ज्ञातव्यम् । गीतायाम् अर्जुनं प्रति श्रीकृष्णः अकथयत्, ‘प्रसादे सर्वदुःखानां हानिरस्योपजायते ।’ अतः सर्वेषां दुःखानाम् अभावस्य कृते मनसः प्रसन्नता अत्यावश्यकी वर्तते । विपरीतपरिस्थितिषु ये धैर्यं न त्यजन्ति ते सर्वदा आन्तरिक-प्रसन्नतायाः माध्यमेन प्रतिकूलपरिस्थितीः विरुद्ध्य विजयम् अधिगच्छन्ति । प्रियजनस्य रुणतायां ये सेवां कृत्वा प्रसन्नाः भवन्ति ते न केवलम् प्रियजनस्य दुःखस्य अपि तु स्वदुःखस्य अपि विनाशं कृत्वा भूयोऽपि प्रसन्नाः भवन्ति, परन्तु ये आत्मनः परस्य वा रोगं, समस्यां वा दृष्ट्वा केवलं हाहाकारं कुर्वन्ति तेषां दुःखेषु वृद्धिः एव भवति । अतः विषादः कदापि न कर्तव्यः प्रसन्नता च कदापि न त्याज्या ।

(i) एकपदेन उत्तरत—

- (क) प्रसादे केषां हानिः भवति?
- (ख) ये समस्यायां प्राप्तायां केवलं हाहाकारं कुर्वन्ति तेषां दुःखेषु किं भवति?

(ii) पूर्णवाक्येन उत्तरत—

- (क) प्रतिकूलपरिस्थितीः विरुद्ध्य के विजयम् अधिगच्छन्ति?
- (ख) किं कदापि न कर्तव्यं किम् च न त्याज्यम्?

अभ्यासवान् भव — दशमकक्षायाः

(iii) निर्देशानुसारम् उत्तरत—

(क) ‘पराजयम्’ इति पदस्य किं विलोमपदं गद्यांशे प्रयुक्तम्?

(ख) ‘तेषाम् दुःखेषु वृद्धिः भवति’ इति वाक्यांशे ‘भवति’ इति क्रियापदस्य कर्तृपदं किम् अस्ति?

(ग) ‘सर्वेषाम्’ इति सर्वनामपदम् अत्र कस्मै प्रयुक्तम्?

(घ) ‘स्वस्य’ इति पदस्य किं पर्यायपदम् अत्र आगतम्?

(iv) गद्याशस्य कृते समुचितं शीर्षकं लिखत ।

2. प्रसन्नतायाः महत्त्वविषये पञ्चवाक्यमितम् अनुच्छेदं सरलसंस्कृतेन लिखत-

3. गृहे पितुः रुणतायाः कारणेन भवतः/भवत्याः मित्रम् दुःखितः अस्ति । तं सान्त्वयन्तः पत्रमेकं सरलसंस्कृतेन लिखत—

4. अधोलिखितवाक्येषु रेखांकितपदानि अधिकृत्य सन्धि/सन्धिविच्छेदं कुरुत—

- (i) हा॒हा॒का॒रे॒ण तु दुःखे॒षु व॒द्धिः+एव भवति । +
- (ii) मनसः प्रसन्नता तु अत्यावश्यकी । +
- (iii) कः + अपि दुःखं नैव इच्छति । +
- (iv) विषादः कदापि न कर्तव्यः । +
- (v) वृद्धानां सेवां कृत्वा प्रसन्नो भव । +
- (vi) वयं सर्वे सुखम्+इच्छामः । +

5. रेखांकितपदानां समस्तपदं विग्रहं वा कृत्वा वाक्यानि पुनः लिखत—

- (i) दुःखानां विनाशः कथं भवति इति ज्ञातव्यम् । +
- (ii) नीतिषु लाभालाभौ न विचारणीयौ । +
- (iii) दुःखानाम् अभावः मनसः प्रसन्नतायै आवश्यकः । +

6. उचितप्रत्ययप्रयोगेण रिक्तस्थानानि पूरयत—

- (i) दुःखानां विनाशस्य उपायं ज्ञा + तव्यत् । +
- (ii) प्रियजनस्य रुणता दुःखदायिका । +
- (iii) रोगं दृष्ट्वा केवलं हा॒हा॒कारं न कर्तव्यम् । +
- (iv) त्वं प्रतिकूलपरिस्थितीं वि+रुध्+ल्यप् विजयं प्राप्नुहि । +

7. प्रदत्तवाक्यानां वाच्यपरिवर्तनं कृत्वा लिखत—

- (i) गीतायां श्रीकृष्णः अर्जुनं प्रति कथयति । +
- (ii) वयं सर्वे सुखम् इच्छामः । +
- (iii) विनप्रजनः पितरं सेवते । +
- (iv) पुत्रेण औषधैः पितुः रोगविनाशस्य प्रयत्नः क्रियते । +

8. प्रदत्तवाक्यानां संस्कृतभाषया अनुवादं कुरुत—

(i) हम सभी सुख चाहते हैं।

(ii) मन की प्रसन्नता कभी नहीं छोड़नी चाहिए।

(iii) गीता में श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा।

(iv) वह प्रियजन की रुग्णता में सेवा करके प्रसन्न होता है।

9. प्रदत्तानि वाक्यानि शुद्धानि कृत्वा पुनः लिखत—

(i) मूर्खाः जनाः दुःखं दृष्ट्वा केवलं हाहाकारं करोति।

(ii) दुःखानाम् अभावस्य कृते मनसः प्रसन्नता अत्यावश्यकी वर्तते।

(iii) रोगं समस्यां वा दृष्ट्वा तस्य समाधानं कुरु।

(iv) विषादः कदापि न कर्तव्यः।



आदर्शप्रश्नपत्रम्

समयः— होरात्रयम्

सम्पूर्णाङ्कः-80

सामान्यनिर्देशाः—

- अस्मिन् प्रश्नपत्रे चत्वारः खण्डाः सन्ति।
- प्रत्येकं खण्डम् अधिकृत्य एकस्मिन् स्थाने क्रमेण उत्तराणि लेखनीयानि।
- सर्वेषां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतेन लेखनीयानि।
- प्रश्नपत्रानुसारं प्रश्नसंख्या अवश्यमेव लेखनीया।

खण्ड – ‘क’

(अपठितः अनुच्छेदः – 10 अङ्काः)

1. अधोलिखितम् अनुच्छेदं पठित्वा यथानिर्देशं प्रश्नान् उत्तरत—

बाल्यावस्था जीवनस्य महत्त्वपूर्णः कालः भवति। अस्मिन् समये यदि वयं परिश्रमं कुर्मः तदा जीवनं सुखमयं भवति। विद्यार्थी बाल्यकाले विद्याध्ययने प्रवृत्तः भवति चेत् तस्य परीक्षाफलं शोभनं भवति, विषयस्यापि ज्ञानं सरलतया भवति। सः स्वस्वप्नं पूर्यितुं समर्थो भवति। एवमेव चरित्रनिर्माणे चापि बाल्यकालः महत्त्वपूर्ण स्थानम् आदधाति। बाल्यकाले यादृशाः संस्काराः लभ्यन्ते तादृशः एव आचारः व्यवहारः च आजीवनम् अस्माभिः सह तिष्ठतः। अत एव अस्माभिः बाल्यकाले अवधानपूर्वकं गुणाधानस्य प्रयासः कर्तव्यः। अस्मिन् समये अध्ययनप्राप्तये अपि सावधानमनसा प्रयत्नः करणीयः। शरीरस्वास्थ्यरक्षायै चापि बाल्यकालादेव पौष्टिकाहारः ग्रहीतव्यः व्यायामः चापि करणीयः।

(i) एकपदेन उत्तरत—

$1 \times 2 = 2$

- (क) बाल्यकाले अवधानपूर्वकं कस्य प्रयासः कर्तव्यः?
(ख) किमर्थं पौष्टिकाहारः ग्रहीतव्यः?

(ii) पूर्णवाक्येन उत्तरत—

$2 \times 2 = 4$

- (क) जीवनं कदा सुखमयं भवति?
(ख) कौ अस्माभिः सह सदैव तिष्ठतः?

अभ्यासवान् भव — दशमकक्षायाः

(iii) निर्देशानुसारम् उत्तरत—	1×3=3
(क) ‘अनवधानमनसा’ इत्यस्य विलोमपदं गद्यांशात् चित्वा लिखत।	
(ख) ‘महत्त्वपूर्णः कालः’ इत्यनयोः किं विशेषणपदम्?	
(ग) ‘बाल्यावस्था जीवनस्य महत्त्वपूर्णः कालः भवति’ इति वाक्ये किं क्रियापदम्?	

(iv) प्रदत्तगद्यांशस्य कृते समुचितं शीर्षकं लिखत—	1
---	---

खण्ड – ‘ख’

(रचनात्मक-कार्यम् — 15 अङ्काः)

2. भवान् (अनिमेषः) शैक्षिकयात्रार्थं शिक्षकैः सह अरुणाचलप्रदेशं गन्तुमिच्छति। तदर्थम् अनुमतिं प्राप्तये यात्राव्ययार्थं च रूप्यकाणि लब्धुं पितरं प्रति लिखितं पत्रमिदं मञ्जूषाप्रदत्तपदानां सहायतया पूरयत — $\frac{1}{2} \times 10 = 5$

मञ्जूषा

अनुमतिः, मातृचरणयोः, रूप्यकाणि, यात्राव्ययार्थम्, व्यस्तः,
शैक्षिकयात्रार्थम्, छात्राः, कुशली, यथाशीघ्रम्, भवतः

छात्रावासतः:

दिनाङ्कः.....

पूज्य पितृचरणाः

प्रणतयः।

अत्र अहं सकुशलः स्वाध्ययने अस्मि। आशासे भवान् अपि
..... अस्ति। मम विद्यालयात् दशमकक्षायाः अनेके
शिक्षकैः सह अरुणाचल-प्रदेशं गन्तुम् इच्छन्ति। यदि भवतः ..
..... स्यात्, अहमपि तैः सह गन्तुकामोऽस्मि।
सहस्ररूप्यकाणि अपि आवश्यकानि। स्वमन्तव्यं सूचयतु। यदि ..
..... सम्मतिः अस्ति अपि प्रेषयतु।
मम प्रणतिः निवेदनीया।

भवतः पुत्रः

अनिमेषः

3. अथःप्रदत्तं चित्रं दृष्ट्वा तदाधारितानि पञ्चवाक्यानि लिखत — 5



अथवा

‘वर्धमानं प्रदूषणम्’ इति विषयमधिकृत्य मञ्जूषातः पदानि चित्वा
पञ्चवाक्यात्मकम् अनुच्छेदं लिखत। 5

मञ्जूषा

वैश्विक-उष्णता, यानानां व्यवहारः, विषाक्तवायुः, अवकरक्षेपणम्, जलप्रदूषणम्,
वायुप्रदूषणम्, धर्वनिप्रदूषणम्, कोलाहलः, शुचिपर्यावरणम्, मलिनम्, यन्त्रागारम्

4. अधोलिखित-वाक्यानां संस्कृतेन अनुवादं कुरुत —

- | | |
|----------------------------------|-----------------------------|
| (i) छात्र विद्यालय जाता है। | A student goes to school. |
| (ii) मैं परिश्रम करता हूँ। | I work hard. |
| (iii) तुम क्या करते हो? | What do you do? |
| (iv) पिता के साथ पुत्र घूमता है। | Son walk with his father. |
| (v) शिक्षक पाठ पढ़ाते हैं। | Teacher teaches the lesson. |

खण्ड – ‘ग’

(अनुप्रयुक्त-व्याकरणम् — 25 अङ्काः)

5. अधोलिखित-वाक्येषु रेखाङ्कितपदानां सन्धिं विच्छेदं वा कुरुत — $1 \times 4 = 4$

- (i) पिताऽस्य किं तपस्तेपे इत्युक्तिः तत् कृतज्ञता।
- (ii) सेवितव्यो महावृक्षः फलच्छायासमन्वितः।
- (iii) विचित्रे खलु संसारे नास्ति किञ्चन्निरर्थकम्।
- (iv) स एव वह्निः+दहते शरीरम्।

6. अधोलिखित-वाक्येषु रेखाङ्कितपदानां समस्तपदं लिखत — $1 \times 4 = 4$

- (i) यदि अहं कृष्णः वर्णः यस्य सः तर्हि श्रीरामस्य वर्णः कीदृशः?
- (ii) सर्वेषां महत्त्वं विद्यते समयम् अनतिक्रम्य।

अभ्यासवान् भव — दशमकक्षाया:

- (iii) मिलित्वा प्रकृतेः सौन्दर्यम् रक्षणीयम्।
(iv) माता च पिता च वन्दनीयौ।
7. अधोलिखित-वाक्येषु रेखाङ्कितपदेषु प्रकृतिप्रत्ययौ संयुज्य विभज्य वा रिक्तस्थानानि पूरयत— $1 \times 4 = 4$
- (i) श्रमक्लमपिपासोष्णशीतादीनां सहिष्णु+तल्।
(ii) वैज्ञानिकाः कथयन्ति यत् पाषाणशिलानां संघर्षेन कम्पनं जायते।
(iii) बुद्धि+मतुप् सर्वत्र पूज्यते।
(iv) राजसिहंस्य पत्नी बुद्धिमती आसीत्।
8. प्रदत्तेभ्यः विकल्पेभ्यः समुचितं विकल्पं चित्वा वाच्यानुसारं रिक्तस्थानानि पूरयत— $1 \times 3 = 3$
- (i) सत्यं कथ्यते। (त्वम्/त्वाम्/त्वया)
(ii) काकः पिकस्य पालयति। (सन्ततिः/ सन्ततिम्/ सन्तत्या)
(iii) पित्रा पुत्राय विद्याधनं। (ददाति/ दीयते/ यच्छति)
9. कोष्ठके प्रदत्त-समयवाचकान् अङ्गान् संस्कृतेन लिखत— $1 \times 4 = 4$
- (i) बालकः वादने उत्तिष्ठति। (6:00)
(ii) सः विद्यालयं गच्छति। (7:15)
(iii) वादने विद्यालये अर्धाविकाशः भवति। (11:30)
(iv) सः वादने विद्यालयात् गृहम् गच्छति। (1:45)
10. मञ्जूषाप्रदत्त-अव्ययपदैः रिक्तस्थानानि पूरयत— $\frac{1}{2} \times 6 = 3$

मञ्जूषा

यत्र, अद्य, सदा, यदि, तत्र, तर्हि

- (i) परिश्रमं कुर्मः सफलाः भवामः।
(ii) समयस्य सदुपयोगः करणीयः।
(iii) जीवनम् दुर्वहं जातमस्ति।
(iv) हरीतिमा पर्यावरणं शुद्धम्।
11. रेखाङ्कितपदं संशोध्य वाक्यानि लिखत— $1 \times 3 = 3$
- (i) ते नार्यः गल्पं कुर्वन्ति।
(ii) अहं परिश्रमं करोति।
(iii) बालकः कार्यं कुर्वन्ति।

खण्ड – ‘घ’

(पठित-अवबोधनम् – 30 अङ्काः)

12. अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा यथानिर्देशं प्रश्नान् उत्तरत— 5

कश्चन निर्धनो जनः भूरि परिश्रम्य किञ्चिद् वित्तमुपार्जितवान्। तेन वित्तेन स्वपुत्रम् एकस्मिन् महाविद्यालये प्रवेशं दापयितुं सफलो जातः। तत्तनयः तत्रैव छात्रावासे निवसन् अध्ययने संलग्नः समभूत्। एकदा पिता तनूजस्य रुणतामाकर्ण्य व्याकुलो जातः, पुत्रं च द्रष्टुं प्रस्थितः। परमर्थकाश्येन पीडितः सः बसयानं विहाय पदातिरेव प्राचलत्।

(i) एकपदेन उत्तरत— $\frac{1}{2} \times 2 = 1$

- (क) निर्धनो जनः भूरि परिश्रम्य किम् उपार्जितवान्?
- (ख) अर्थकाश्येन पीडितः सः केन प्राचलत्?

(ii) पूर्णवाक्येन उत्तरत— $1 \times 1 = 1$

- (क) निर्धनः जनः वित्तेन किं कृतवान्?

(iii) निर्देशानुसारम् उत्तरत— $1 \times 3 = 3$

- (क) ‘धनम्’ इत्यस्य समानार्थकपदं गद्यांशात् चित्वा लिखत।
- (ख) ‘निर्धनः जनः’ इत्यनयोः किं विशेषणपदम्?
- (ग) ‘परमर्थकाश्येन पीडितः सः बसयानं विहाय पदातिरेव प्राचलत्’ इति वाक्ये ‘सः’ इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?

13. अधोलिखितं पद्यांशं पठित्वा यथानिर्देशं प्रश्नान् उत्तरत— 5

उदीरितोऽर्थः पशुनापि गृह्यते हयाश्च नागाश्च वहन्ति बोधिताः।

अनुकृतमप्यूहति पण्डितो जनः परेञ्जितज्ञानफला हि बुद्धयः॥

(i) एकपदेन उत्तरत— $\frac{1}{2} \times 2 = 1$

- (क) केन उदीरितः अर्थः गृह्यते?
- (ख) का: परेञ्जितज्ञानफलाः भवन्ति?

(ii) पूर्णवाक्येन उत्तरत— $1 \times 1 = 1$

- (क) पण्डितः जनः किम् ऊहति?

(iii) निर्देशानुसारम् उत्तरत— $1 \times 3 = 3$

- (क) ‘अश्वाः’ इति अर्थे पद्ये किं पदं प्रयुक्तम्?
- (ख) ‘मूर्खः’ इत्यस्य विलोमपदं श्लोकात् चित्वा लिखत।
- (ग) ‘हयाश्च नागाश्च वहन्ति बोधिताः’ इति वाक्ये किं क्रियापदम्?

- 14. अधोलिखितं नाट्यांशं पठित्वा यथानिर्देशं प्रश्नान् उत्तरत—** 5
- चाणक्यः — भो श्रेष्ठिन्! प्रीताभ्यः प्रकृतिभ्यः प्रतिप्रियमिच्छन्ति राजानः।
 चन्दनदासः — आज्ञापयतु आर्यः, किं कियत् च अस्मज्जनादिष्यते इति।
 चाणक्यः — भो श्रेष्ठिन्! चन्द्रगुप्तराज्यमिदं न नन्दराज्यम्। नन्दस्यैव अर्थसम्बन्धः
 प्रीतिमुत्पादयति। चन्द्रगुप्तस्य तु भवतामपरिक्लेश एव।
 चन्दनदासः — (सहर्षम्) आर्य! अनुगृहीतोऽस्मि।
 चाणक्यः — भो श्रेष्ठिन्! स चापरिक्लेशः कथमाविर्भवति इति ननु भवता प्रष्टव्याः स्मः।
- (i) एकपदेन उत्तरत— $\frac{1}{2} \times 2 = 1$
- (क) प्रीताभ्यः प्रकृतिभ्यः राजानः किम् इच्छन्ति?
 (ख) कस्य अर्थसम्बन्धः प्रीतिमुत्पादयति?
- (ii) पूर्णवाक्येन उत्तरत— $1 \times 1 = 1$
- (क) चन्दनदासेन (भवता) किं प्रष्टव्यम्?
- (iii) निर्देशानुसारम् उत्तरत— $1 \times 3 = 3$
- (क) ‘दुःखाभावः’ इति अर्थे नाट्यांशे किं पदं प्रयुक्तम्?
 (ख) ‘आर्य अनुगृहीतोऽस्मि’ अत्र ‘अस्मि’ इति क्रियापदस्य कर्तृपदम् किम्?
 (ग) ‘किं कियत् च अस्मज्जनादिष्यते’ इति वाक्ये किं क्रियापदम्?
- 15. अधोलिखितवाक्येषु रेखाङ्कितपदमाधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत—** $1 \times 4 = 4$
- (i) विद्वांस एव लोकेऽस्मिन् चक्षुष्मन्तः प्रकीर्तिताः।
 (ii) समीपे एका नदी प्रवहति।
 (iii) अतिदाक्षिण्येन अलम्।
 (iv) गहनकानने सा व्याग्रं ददर्श।
- 16. अधोलिखितयोः श्लोकयोः अन्वये रिक्तस्थानानि पूर्यत—** $\frac{1}{2} \times 8 = 4$
- (i) त्यक्त्वा धर्मप्रदां वाचं परुषां योऽभ्युदीरयेत्।
 परित्यज्य फलं पक्वं भुड्कतेऽपक्वं विमूढधीः॥
 अन्वयः— यः वाचं त्यक्त्वा अभ्युदीरयेत् (सः)
 पक्वं फलं परित्यज्य अपक्वं।
- (ii) अपत्येषु च सर्वेषु जननी तुल्यवत्सला।
 पुत्रे दीने तु सा माता कृपार्द्धदया भवेत्॥
 अन्वयः— सर्वेषु च जननी भवति। सा माता दीने
 तु भवेत्।

अथवा

अधोलिखितस्य श्लोकस्य भावार्थे रिक्तस्थानपूर्ति मञ्जूषाप्रदत्तपदानां
सहायतया कुरुत— $1 \times 4 = 4$

मञ्जूषा

कार्यम् सुखप्राप्तेः कल्याणम् अन्येषाम्

यः इच्छत्यात्मनः श्रेयः प्रभूतानि सुखानि च।
न कुर्यादहितं कर्म सः परेभ्यः कदापि च ॥

भावार्थः—यः नरः आत्मनः इच्छति, तस्य अपि
इच्छा अस्ति, सः कृते कदापि अकल्याणकरं न कुर्यात्
इति अवधातव्यम्।

17. अधोलिखितवाक्यानि घटनाक्रमानुसारं लिखत—

$\frac{1}{2} \times 8 = 4$

- (i) बुद्धिमती व्याघ्रभयात् मुक्ता जाता।
- (ii) ग्रामे राजसिंहः नाम राजपुत्रः वसति स्मा।
- (iii) गलबद्धशृगालकः व्याघ्रः सहसा पलायितः।
- (iv) व्याघ्रः शृगालं निजगले बद्ध्वा काननं गतवान्।
- (v) तस्य भार्या पुत्रद्वयोपेता पितुर्गृहं प्रति चलिता।
- (vi) जम्बुकः व्याघ्रं पुनः तत्र गन्तुं प्रेरितवान्।
- (vii) इयं व्याघ्रमारी इति विचिन्त्य भयेन व्याघ्रः पलायितः।
- (viii) सा पुत्रौ उक्तवती—एकं व्याघ्रं विभज्य खादतम्।

18. अधोलिखितवाक्येषु रेखाङ्कितपदानां प्रसङ्गानुसारं शुद्धम् उत्तरं विकल्पेभ्यः
चित्वा लिखत— $1 \times 3 = 3$

- (i) अत्र जीवनं दुर्वहं जातम्।
सरलम्/कठिनम्/जटिलम्
- (ii) संव्यवहाराणां वृद्धिलाभाः प्रचीयन्ते।
संस्काराणाम्/संलापानाम्/व्यापाराणाम्
- (iii) तोयैः अल्पैः अपि तरोः पुष्टिः भवति।
जलैः/त्वग्भिः/दुग्धैः।

परिशिष्टम्

व्यवहार-वाक्यानि

हरि: ॐ / नमो नमः/ नमस्कारः/ प्रणामः!	— Hello!
सुप्रभातम्	— Good morning
सुमध्याह्नम्	— Good afternoon
शुभरात्रिः	— Good night
अस्तु	— Alright/ Okay
कृपया	— Please
धन्यवादः	— Thank you
स्वागतम्	— Welcome
क्षम्यताम्	— Excuse me/ Pardon me/ Sorry
चिन्ता मास्तु	— Don't worry
श्रीमन्	— Sir
मान्या/आर्या	— Lady
साधु-साधु/ समीचीनम्	— Very good
आम्	— Yes
ना	— No
अलम्	— Enough/ Stop
श्रीमन्! अहं जल-पानार्थं गन्तुम् इच्छामि?	— Sir! May I go to drink water?
श्रीमन्! अहं लघुशङ्कार्थं गन्तुम् इच्छामि?	— Sir! May I go to toilet?
श्रीमन्! अहं किम कार्यार्थं गन्तुम् इच्छामि?	— Sir! I want to go for some work?
अहं प्रष्टुम् इच्छामि	— I want to ask something
अहं न जानामि	— I don't know
मया न ज्ञातम्	— I didn't understand
कथमस्ति भवान्/भवती?	— How are you?
आगच्छन्तु	— Come in

उपविशन्तु	— <i>Sit down</i>
उत्तिष्ठन्तु	— <i>Stand up</i>
ज्ञातम् वा ?	— <i>Do you understand?</i>
बहिर्गच्छतु	— <i>Get out</i>
अलं वार्तालापेन/ मा वदत	— <i>Don't talk</i>
पुनः मिलामः	— <i>See you again</i>
जन्मदिनस्य शुभाशयाः	— <i>Happy birthday</i>
नववर्षस्य शुभाशयाः	— <i>Hearty greetings for a happy New Year</i>
सफलतायै अभिनन्दनम्	— <i>Hearty congratulations on your success</i>
शुभाः ते पन्थानः	— <i>Happy journey</i>
नववर्ष नवचैतन्यं ददातु	— <i>Let the new year bring a new life</i>
भवदीयः समारम्भः यशस्वी भवतु	— <i>Wishing the function a grand success</i>
शतं जीव शरदो वर्धमानाः	— <i>May you live for a hundred years</i>
भवतः नाम किम्?	— <i>What is your name?</i>
भवान् कुत्र गच्छति?	— <i>Where are you going?</i>
भवान् कस्यां कक्षायां पठति?	— <i>In which class do you study?</i>
भवतः विद्यालस्य नाम किम्?	— <i>What is the name of your school?</i>
भवान् कुत्र वसति?	— <i>Where do you live?</i>
मम नाम अस्ति	— <i>My name is</i>
अपि कुशलं ते/ भवतः/ भवत्या?	— <i>Are you fine?</i>
कथं चिरादागतोऽसि?	— <i>Why did you come late?</i>
किं जातम्?	— <i>What happened?</i>
अपि सर्वं कुशलम्?	— <i>Is everything Okay?</i>

अभ्यासवान् भव — दशमकक्षायाः

भवान् ह्यः कुत्र गतः आसीत्?
भवता/भवत्या किं पृष्टम्?
भवता/ भवत्या किं कथ्यते?
किम् एतत् उचितम्?
भवता/ भवत्या! ज्ञातम् एतत्?
किम् भवान्/भवती एतदर्थम्
अनुमतिः दास्यति?
मम अपि एषः विचारोऽस्ति
सर्वे कुशलिनः सन्ति
शान्तं भव
कलहं मा कुरुत
तूष्णीं भवा।
उपविशत यूयम्
पाठं पठत
पाठं स्मरत
सत्यं वद
प्रियं वद
किं खादसि?
शनैः वद
उच्चैः मा वद
किमर्थम् उच्चैः वदसि?
वृथा मा वद
किमर्थम् एवं जल्पसि?
शीघ्रं कुरु
अलम् अतिविस्तरेण
अलम् अतिविकृत्थनेन

— Where did you go yesterday?
— What have you asked?
— What do you say?
— Is this right?
— Do you! understand this?
— Would you give me permission
for this?
— This is also my opinion
— Everyone is fine
— Be calm
— Don't quarrel
— Be quiet
— Sit down please
— Read this lesson
— Learn this lesson
— Always speak the truth
— Always speak politely
— What do you eat?
— Speak slowly
— Don't speak loudly
— Why do you speak loudly?
— Don't speak unnecessarily
— Why are you beating around
the bush?
— Be quick
— Unnecessary elaboration is not
required
— Unnecessary selfpraise is not
required

अलम् मिथः कलहेन	— <i>Don't quarrel</i>
उच्चैः करतलध्वनिं कुरुत	— <i>Clap loudly</i>
अत्र उपविशत	— <i>Sit here</i>
अवकरम् इतस्ततः मा क्षिपत	— <i>Don't throw garbage here and there</i>
गीतं गायत	— <i>Sing a song</i>
मह्यं चाकलेहं देहि	— <i>Give me a chocolate</i>
अहम् अपि खादितुम् इच्छामि	— <i>I also want to eat</i>
लेखं लिखत	— <i>Write an essay</i>
भोजने किम् अस्ति?	— <i>What is the menu for the meal?</i>
गतः कालः पुनः न आयाति	— <i>The past never comes back</i>
समयस्य सदुपयोगं कुरुत	— <i>Always use your time wisely</i>
पठितस्य अभ्यासं कुरुत	— <i>Practice what you read</i>
मया कार्यं कृतम्	— <i>I have completed my work</i>
मया कार्यं न कृतम्	— <i>I have not completed my work</i>
पाठं स्मृतं न वा ?	— <i>Have you learnt this lesson?</i>
किमर्थं तूष्णीम् असि ?	— <i>Why are you quiet?</i>
त्वरितं कुरुत	— <i>Do it quickly</i>
एतत् उचितं न अस्ति	— <i>This is not fair</i>
निरर्थकं कार्यं मा कुरुत	— <i>Don't do useless work</i>
सुष्ठु उक्तम्	— <i>Well said</i>
सज्जा: भवत	— <i>Be ready</i>
अभ्यासं कुरुत	— <i>Do Practise</i>

ध्येय-वाक्यानि

सेवा अस्माकं धर्मः

शं नो वरुणः

नभः स्पृशं दीप्तम्

योगक्षेमं वहाम्यहम्

विद्याऽमृतमश्नुते

यतो धर्मस्ततो जयः

शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्

निष्ठा धृतिः सत्यम्

विद्याऽमृतमश्नुते

बलस्य मूलं विज्ञानम्

अहर्निशं सेवामहे

सत्यं शिवं सुन्दरम्

आदित्याज्जायते वृष्टिः

बहुजनहिताय बहुजनसुखाय

तत् त्वं पूषन् अपावृणु

ज्ञानविज्ञानविमुक्तये

असतो मा सद्गमय

सत्यमेव जयते

धर्मचक्रप्रवर्तनाय

युद्धं प्रज्ञायै

योऽनूचानः स नो महान्

योगः कर्मसु कौशलम्

जननीजन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी

जलेष्वेव जयामहे

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन

आकाशे शत्रून् जहि

श्रमेव एव जयते

— थल सेना

— जल सेना

— वायु सेना

— भारतीय जीवन बीमा निगम

— राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

— उच्चतम न्यायालय

— अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान परिषद्

— दिल्ली विश्वविद्यालय

— काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

— रक्षानुसंधान विकास संगठन

— डाक तार विभाग

— दूरदर्शन

— भारतीय मौसम विभाग

— आकाशवाणी

— केन्द्रीय विद्यालय संगठन

— विश्वविद्यालय अनुदान आयोग

— केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा संस्थान

— भारत सरकार

— लोक सभा

— सैन्य विद्यालय

— राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान

— भारतीय प्रशासनिक सेवा अकादमी

— नेपाल सरकार

— इण्डोनेशिया जल सेना

— इण्डोनेशिया वायु सेना

— थल सेना में वायु रक्षा विभाग

— श्रम मंत्रालय

संवादः

1. निशा — नमो नमः सखि! एवं धावन्ती कुत्र गन्तुं तत्परा असि ?
गरिमा — सखि! वस्तुतः अत्यन्तं त्वरायामस्मि, अद्य मम विद्यालये सौन्दर्यप्रतियोगिता अस्ति, तत्रैव गमनीयम्।
- निशा — सौन्दर्यप्रतियोगिताऽस्ति। सौन्दर्ये कीदृशी प्रतियोगिता? एततु विधात्रा प्रदत्तं रूपमेवा विधातुः निर्णये कीदृशी प्रतियोगिता?
- गरिमा — एततु सर्वथा सत्यं परं विधात्रा प्रदत्तं रूपं कः कथं रक्षति गुणान्वितं च करोति इति अस्य कृते प्रतियोगिता आवश्यकी।
- निशा — सखि ! त्वं सत्यं वदसि, परं किं केवलं बाह्यरूपमेव महत्त्वपूर्णम्? किम् आन्तरिकगुणानां न किमपि महत्त्वम्?
- गरिमा — एवं नास्ति सखि! विजेतृनिर्धारणाय सौन्दर्यप्रतियोगितासु बाह्यसौन्दर्येण सह मानवीयगुणानामपि परीक्षणं भवति।
- निशा — कथमान्तरिकगुणाः परीक्ष्यन्ते इति तु मम जिज्ञासा वर्धते?
- गरिमा — प्रश्नोत्तरमाध्यमेन, प्रतिभागिनीनां व्यवहारेण च आन्तरिकगुणानां परीक्षणं भवति।
- निशा — वस्तुतः एव दर्शनीया प्रतियोगिता। किमहमपि त्वया सह प्रतियोगितां द्रष्टुं चलेयम्?
- गरिमा — आम् आम्। अवश्यमेवा आगच्छ मया सहा शीघ्रं चलावः। प्रतियोगितायाः समयस्तु सञ्जातः।
2. दर्पणः — किमर्थं खिन्नाऽस्ति भवती?
- मेधा — कस्त्वम्? कथं ज्ञातं त्वया?
- दर्पणः — आश्चर्यम्! भवती मां न जानाति?
- मेधा — मम मातापितासखिभिरपि अविज्ञातं तथ्यं त्वया अवगतम्। मम कृते तु एतदेव महदाश्चर्यम्।
- दर्पणः — भो! अहं दर्पणोऽस्मि। भवती मां तव प्रतिरूपमेव अवजानातु।
- मेधा — किमेवम्?
- दर्पणः — आम्! प्रायः जनाः निजं सुन्दरतमं रूपं द्रष्टुमिच्छन्ति परं ते न जानन्ति यदहं केवलं यथायथं रूपमेव दर्शयामि।
- मेधा — उचितं कथितं त्वया। जनाः स्वार्थस्य वशीभूय अस्मान् सततं भ्रामयितुं प्रयतन्ते।
- दर्पणः — एतदर्थमेव जनाः तथ्यमवगन्तुं न समर्थाः।

- मेधा — सत्यमुक्तं त्वया। वयमपि मिथ्याप्रशंसया भ्रान्ताः भूत्वा तथ्यं विस्मृत्य
अहङ्कारिणः भवामः। त्वमेव तथ्यं ज्ञापयित्वा अस्मभ्यम् आत्ममन्थनस्य
अवसरं प्रयच्छसि।
- दर्पणः — एतदेव मम वास्तविकं प्रयोजनम्।
- मेधा — धन्यवादाः बोधनाया गच्छामि खिन्नतापहरणाया।
अधुना प्रतिदिनं द्रष्टुम् आगमिष्यामि।
- दर्पणः — (विहस्य) शुभास्ते सन्तु पन्थानः।
3. इक्षुदण्डः — भोः निष्प्रवृक्षः! निरन्तरं विशालताम् प्राप्स्यसि मत्समक्षम्। तव फलानि
तु लघूनि कटूनि च। जानासि किं कियत् मधुरं अहम् अस्मि। सर्वान् एव
मधुरसेन पूर्यामि।
- निष्प्रवृक्षः — आम् वस्तुतः एव त्वमतिमधुरसेन युक्तः। जनाः न केवलं खादन्ति
त्वाम् अपि तु तव रसमपि मग्नतया पिबन्ति। परं यदा शरीरं ब्रणयुक्तं
जायते मधुरतायाः प्राचुर्येण तदा मम प्रयोगेण एव त्वचः रोगाः
नश्यन्ति।
- इक्षुदण्डः — कथमेवं भणसि मित्र! अहं तु मधुरतायाः भाण्डारम्। मत्तः एव
गुडशर्करयोः निर्माणं भवति यच्च मिष्ठानानां मूलम्। मम रसपानं तु
ग्रीष्मतापं हरति, एतदर्थं तु आपणे यत्र तत्र सर्वत्र इक्षुरसः विक्रीयते।
- निष्प्रवृक्षः — सत्यं परं तेन मधुरसपानेन मधुमेहरोगिणां व्याधिरपि वर्धते। कथं
विस्मरसि इदं तथ्यम्?
- इक्षुदण्डः — विस्मरामि न परं वस्तुतः। मधुमेहरोगस्य तु अन्यान्यपि बहूनि
कारणानि। मुख्यतः अस्मै रोगाय जीवनचर्या, सन्तुलितभोजनाभाव
श्चेत्यादीनि कारणानि।
- निष्प्रवृक्षः — मित्र! अहं एतन्न कथयामि यत् रोगः। तव कारणेन भवति अपि तु
मधुमेहरोगिणां रोगः। वर्धते यदा तदा तस्य हरणाय ममोपयोगः एव
हितकारी भवति।
- इक्षुदण्डः — आम् एतत्तु सर्वथा सत्यम्। एवम् आवां द्वावेव तापहारकौ उपयोगिनौ
च। अत एव प्रतिवेशिनौ।
4. अड्कुशः — अमित! अमित! आगच्छा शीघ्रम् आगच्छा।
- अमितः — (अमितः न शृणोति)
- अड्कुशः — अमित! भवान् कुत्र अस्ति? किमर्थं न शीघ्रम् आगच्छति।
- अमितः — आगच्छामि। आगच्छामि।
- अड्कुशः — अवश्यमेव अन्तर्जाले कालं वृथा यापयति।

- अमितः — किम् इच्छति भवान् ?
- अड्कुशः — अहं किञ्चित् न इच्छामि, परं भवान् दिवारात्रम् अन्तर्जाले किं करोति ?
कालं वृथा नयति ।
- अमितः — मया कालः वृथा न नीतः ।
- अड्कुशः — अहर्निशम् अस्य प्रयोगं करोति तथापि कथयति- “कालं वृथा न नयामि ।”
- अमितः — आम् । आम् । सत्यं कथयामि अहम्। परियोजनार्थं सामग्रीसञ्चयनं करोमि ।
- अड्कुशः — मृषा मा वदा सामग्रीसञ्चयनम् अर्धहोरापरिमितमेव कालम् अपेक्षते।
भवान् तत्र किञ्चिद् अन्यत् पश्यति ।
- अमितः — अहं किञ्चिद् अन्यत् न पश्यामि ।
- अड्कुशः — अन्तर्जालस्य उचितप्रयोगः एव करणीयः, अतिप्रयोगं तु वर्जयेत् ।
- अमितः — (शिरो नमयित्वा किञ्चिद् न वदति)
- 5. राधा** — मोहिनि! किमर्थं चिन्तिता इव प्रतीयसे ?
- मोहिनी — परं मम पुत्रः अन्यथासमर्थः अस्ति। तस्य कृते विशेषविद्यालयस्य आवश्यकता अस्ति ।
- राधा — किमर्थम् ! अस्माकं वसत्याम् एव सर्वोदयः विद्यालयः वर्तते। तत्रैव प्रवेशं कारयतु ।
- मोहिनी — एतत् कथं सम्भवम् ? एतादृशेभ्यः छात्रेभ्यः विशेषावधानस्य आवश्यकता भवति ।
- राधा: — विशेषविद्यालयः ? न, न, भागिनि! सर्वकारस्य योजना अस्ति सर्वे विद्यार्थिनः सहैव अध्ययनं कुर्वन्तु ।
- मोहिनी — धन्यवादः भगिनि! महर्तीं चिन्ताम् अपसारितवती भवती ।
- राधा — एवं नास्ति । समावेशशिक्षायाः उद्देश्यमस्ति— सर्वे विद्यार्थिनः सर्वेषाम् आवश्यकताम् अवबुध्य परस्परं साहाय्यं कुर्वन्तु ।
- मोहिनी — किमेतत् सत्यम् ? किं राकेशः अपि सामान्यबालकैः सह पठितुं शक्नोति? (विद्यालयस्य.....चलति)
- राधा — अथ किम् ?
- मोहिनी — अहं राकेशस्य शिक्षार्थं चिन्तिता अस्मि ।
- 6. (विद्यालयस्य अवकाशाय घण्टानादः भवति सर्वे छात्राः गृहं प्रति गन्तुमुत्सुकाः धावन्तः इव प्रतीयन्ते परं गिरीशः तु मन्दं मन्दम् एव उद्विग्नमनाः भूत्वा चलति ।)**
- हरीशः — मित्र गिरीश ! त्वम् अवकाशे जातेऽपि गृहं प्रति गन्तुमुत्सुकः किमर्थं नैव दृश्यसे ? अपि कुशलं सर्वम् ?

- गिरीशः — आम् सर्वं कुशलं परं गृहे न कोऽपि अस्ति मह्यं प्रतीक्षारतः। अतः एव मन्दगत्या गच्छामि ।
- हरीशः — किमर्थम्? त्वमेकाकी एवासि गृहे ?
- गिरीशः — आम् स्वपित्रोः अहमेव एकाकी पुत्रः।
- हरीशः — तर्हि मातापित्रोः कश्चिदपि गृहे न भवति किम् ?
- गिरीशः — नैव, मम पितरौ प्रातःकाले कार्यालयं गच्छतः । रात्रौ नववादनात्पूर्वं कोऽपि गृहं नागच्छति ।
- हरीशः — अहो! सत्यमेव चिन्तायाः विषयः। तव पितामहः इत्यादयः कुत्र वसन्ति ?
- गिरीशः — पितामहः पितामही च पितृब्येन सह ग्रामे वसतः। अधुना तानेव प्रार्थयिष्यामि यदागत्य ते सर्वे अत्रैव वसन्तु ।
- हरीशः — आम् पितामहं, पितामहीं, पितृब्यं च सर्वान् ग्रामात् आकारय ।
- गिरीशः — (शीघ्रं गच्छन्) आम् अधुनैव गत्वा दूरभाषेण संवादं करोमि आशास्ति यत् ते ममाग्रहम् अवश्यमेव स्वीकरिष्यन्ति ।
- हरीशः — अत्युत्तमः विचारः। एवमेव कुरु ।
- गिरीशः — अस्तु मित्र! गच्छामि पुनर्मेलनाय ।
- हरीशः — शिवास्ते सन्तु पन्थानः ।
7. (सुमितः अमितः च उपवने भ्रमतः)
- अमितः — सुमित! चिन्तितः दृश्यसे ।
- सुमितः — आम् चिन्तितोऽस्मि ।
- अमितः — किमर्थम् ?
- सुमितः — गणितपरीक्षायां मया न्यूनाः अड्काः प्राप्ताः ।
- अमितः — तेन किम्?
- सुमितः — गणितविषयः तु अनिवार्य-विषयोऽस्ति।
- अमितः — जानामि अहम् ।
- सुमितः — परं मया तु अस्मिन् विषये सदैव काठिन्यम् अनुभूतम् ।
- अमितः — तेन किम्?
- सुमितः — अग्रे किं करिष्यामि ?
- अमितः — किं न जानासि केवलं दशमकक्षापर्यन्तम् एव अस्य विषयस्य पठनम् निवार्यम् ।
- सुमितः — जानामि तु ।
- अमितः — तर्हि किमर्थं त्वं चिन्तामग्नः? चित्रकलां गृहीत्वा स्वयोग्यतां प्रदर्शय ।
- सुमितः — (किञ्चित् न वदति)
- अमितः — भवान् चित्रकलायां निपुणः अस्ति ।

- सुमितः — (शिरः प्रचालयति)
 अमितः — चित्रकलायाः माहात्म्यं तु प्रतिदिनं वर्धते एव ।
 (संवदन्तौ गृहं प्रति गच्छतः)
- 8. शिक्षिका** — भवन्तः सर्वे दशमकक्षायाः छात्राः। किं भवन्तः स्वजीवनलक्ष्यविषये चिन्तितवन्तः ?
 एकः छात्रः — आम् महोदये! अहं गणितविषयं गृहीत्वा अभियान्त्रिकीं पठिष्यामि ।
 (मनोजः)
- शिक्षिका — शोभनम्, मनोजः तु अभियान्त्रिकीं पठिष्यति श्यामे! त्वं किं पठिष्यसि ?
 श्यामा — महोदये! मम रुचिः सङ्गीते अस्ति, अतः अहं सङ्गीतविषयं गृहीत्वा स्नातकपरीक्षां सम्मुखीकरिष्यामि, तदनन्तरं साधनां कृत्वा सङ्गीतक्षेत्रे भविष्यनिर्माणं करिष्यामि ।
- शिक्षिका — बहुशोभनम्! तरुण! शिरः विनमय्य किं चिन्तयसि?
 तरुणः — अहं व्यावसायिक-प्रबन्धनक्षेत्रे (एम.बी.ए.) कर्तुम् इच्छामि परम्.....
- शिक्षिका — परं किम्?
 तरुणः — मम पिता एकः निर्धनः कृषकः, सः व्यावसायिक-प्रबन्धनशिक्षायै अत्यधिकं शुल्कं दातुम् अक्षमः ।
- शिक्षिका — तरुण! एतदर्थं चिन्तां मा कुरु मेधाविनां छात्राणां कृते धनस्य कापि समस्या न भवति। सर्वे वित्तकोषाः उच्चाध्ययनाय ऋणं ददति। त्वं दत्तचित्तो भूत्वा अध्ययनं कुरु तव शुल्कस्य चिन्ता सर्वकारस्य अस्ति। अध्ययनं समाप्य एव ऋणशोधनं कर्तव्यं भविष्यति ।
- तरुणः — सत्यम् महोदये! मम मनसः चिन्ता अपगता। धन्यवादाः ।
- 9. सुमेधा** — (शनैः शनैः किञ्चित् वदति)
- माता — सुमेधे ! शनैः शनैः किं वदसि ?
 सुमेधा — यत् पठितं तत् स्मरामि।
 माता — परं हस्ते पुस्तकं तु न अस्ति।
 सुमेधा — (पुनः स्मर्तुं रता अभवत्)
 माता — प्रथमं स्मर तदनु पुनरावृत्तिं कुरु ।
 सुमेधा — मया स्मृतम् अधुना अभ्यासं करोमि।
 माता — पुनरावृत्तिः तु अनिवार्या ।
 सुमेधा — अध्यापकेन अपि एतत् कथितम् ।
 माता — पुनः पुनः अभ्यासेन विषयः हृदयङ्गमः भवति ।
 सुमेधा — आम्

- | | |
|-----------|---|
| माता | — किं जानाति भवती, पुनः पुनः अभ्यासेन एव अर्जुनः श्रेष्ठः धनुर्धरः अभवत्। |
| सुमेधा | — पठितं मया । |
| माता | — अतः सततम् अभ्यासं कुरु । |
| 10. तन्वी | — सखि अवनि! भवती ह्यः विद्यालयं न आगतवती। अपि कुशलिनी त्वम्? |
| अवनी | — आम् तन्वि! आम् सर्वथा कुशलिनी अस्मि। ह्यः तु पक्षिणां सौन्दर्यं द्रष्टुम् पक्षिविहारं गता आसम्। |
| तन्वी | — अहो! अत्यद्भुतम् कुत्रास्ति पक्षिविहारः? |
| अवनी | — भारते अनेके पक्षिविहाराः सन्ति अहं तु दिल्ल्याः समीये ‘नोएडा’ इति नगरम् अगच्छम्। |
| तन्वी | — के के खगाः दृष्टाः तत्र ? |
| अवनी | — तत्र न केवलं सामान्याः, अपि तु दुर्लभाः खगाः अपि दृष्टाः, यथा-काष्ठकूटः, नीलकण्ठः, विविधाः चटकाः परमधुना वृक्षाणां कर्तनेन वनानां नाशेन च तेषामाश्रयस्थलानि नष्टानि । |
| तन्वी | — (मध्ये एव) विरम सखि विरम। मम उत्कण्ठा वर्धते । |
| अवनी | — आम् एताम् अनुभूतिमेव प्राप्तुमहं तत्र गता आसम्। |
| तन्वी | — आम् सत्यं कथयसि सखि! पक्षिणः यदा पक्षौ प्रसार्य इतस्ततः कूजन्तः उड्हयन्ते तदा तान् दृष्ट्वा अपूर्वा एवानन्दानुभूतिः भवति । |
| अवनी | — वस्तुतः खेदस्य विषयः अस्माकं पितरः तु कथयन्ति यत् तेषां शैशवाकस्थायाम् अनेके खगाः गृहेषु इतस्ततः विचरन्ति स्म। |
| तन्वी | — वस्तुतः अद्यत्वे नगरेषु तु पक्षिणां दर्शनं प्रायः दुर्लभमेव । |
| अवनी | — तदैवाधुना पशुपक्षिसंरक्षणाय विविधाः पक्षिविहाराः, अभयारण्यानि च निर्मीयन्ते। |